
नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
लोक कथा विशेषांक
नवम्बर '९०
४ रुपए
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन



जो भी खाये, दोस्त बन जाये!
लड़ाकू-पढ़ाकू, मोटू-पतलू, छोटू-लम्बू, दोस्त बनेंगे
हाज़मोला कैन्डी खाकर।
चटपटी है! स्वादभरी है!
खट्टा-मीठी कैन्डी की हर बात है मज़ेदार!
आए छोटे – प्यारे 'पिलो-पैक' में।
साथ रख सकें, खेलते-कूदते जहाँ
भी जाएँ। पार्टी हो या पिकनिक,
घर हो या स्कूल, नई खट्टी-मीठी
हाज़मोला कैन्डी खुद भी खाओ,
सबको खिलाओ। और
प्यारे-प्यारे दोस्त बनाओ।
नई
खट्टी-मीठी
Hajmola®
CANDY
Hajmola®
CANDY
everest/d90/DIL/231 hin

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

के

हिन्दी के कुछ खास प्रकाशन

बच्चों की पुस्तकों से दोस्ती कराने, पढ़ने में उनकी दिलचस्पी बढ़ाने और उनके अनेक अनबूझे सवालों के जवाब देने के उद्देश्य से एनसीईआरटी कई नई पुस्तक मालाएं प्रकाशित कर रही है । इसके अंतर्गत बच्चों के लिए रोचक, ज्ञानवर्धक और कम मूल्य वाली पुस्तकें तैयार की जा रही हैं । परिषद के हिन्दी के कुछ खास प्रकाशनों की सूची नीचे दी जा रही है ।

पूरक पठन की पुस्तकें	रु. पैसे
1. बहुरूपी गांधी	2.20
2. श्री अरविंद	1.50
3. बैंकिंग की मनोहारिता	1.25
4. श्री रामकृष्ण	0.85
5. विश्वकोशः क्या, क्यों, कैसे	0.55
6. प्रेमचंद	5.85
7. कविताएं : सुब्रह्मण्यम भारती	9.90
8. हिन्दी कथा लेखिकाओं की प्रतिनिधि कहानियां भाग-1	7.85
9. उत्तराखण्ड की यात्रा	6.25
10. भारत में ग्रामीण विकास	8.85
11. युवा संसद का संचालन	9.40

पढ़ें और सीखें माला	
1. पेंग्विन के देश में	11.20
2. चिकित्सा विज्ञान की कहानियां	9.60
3. विश्व की प्रसिद्ध लोक कथाएं	17.15
4. बाबा आम्टे	4.55
5. ऐसे थे राजेन्द्र बाबू	9.55
6. विश्वेश्वरय्या	7.55
7. मानव मशीन से परिचय	10.25
8. फूल जैसी लड़की	5.30
9. घर से दूर	5.15
10. काले सागर का गोरा देश	6.05
11. जंगल की कहानी	10.00
12. महाभारत की कहानियां	8.60
13. फोनोग्राफ से स्टीरियो तक	10.35
14. पौराणिक कहानियां	6.45

सूचीपत्र और अन्य जानकारी के लिए लिखें :

मुख्य व्यापार प्रबन्धक,
प्रकाशन विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-110016

एन सी ई आर टी
NCERT

डीएवीपी 90/488

आओ बात करें

धामपुर में एक ब्राह्मण रहता था। परिवार में उसकी पत्नी और एक बेटी थी। ब्राह्मण के पास कोई धंधा-रोजगार नहीं था।

समय बीतता गया। धीरे-धीरे लड़की बड़ी हो गई। अब तो ब्राह्मणी आए दिन ताने देने लगी। कहती—"कहीं कथा ही बांचो।"

बार-बार कहने पर ब्राह्मण घर से चल दिया। इधर-उधर भटका पर कोई ऐसा न मिला, जो उससे पूजा-पाठ कराता। भूखा-प्यासा ब्राह्मण जंगल में पेड़ के नीचे जा बैठा। वहीं उसने देवी-देवताओं को याद किया। फिर कथा बांचने लगा। उसे विश्वास था कि कथा पूरी होने तक कोई न कोई उधर आएगा। कुछ चढ़ावा मिल ही जाएगा।

कथा पूरी हो गई, पर कोई वहां नहीं आया। अब तो ब्राह्मण बहुत दुखी हो गया। रह-रहकर उसे ब्राह्मणी का ध्यान आने लगा—'घर पहुंचने पर वह खूब जली-कटी सुनाएगी।' ब्राह्मण की आंखों में आंसू उमड़ पड़े। रोना सुनकर वहां चार सियार आ गए। ब्राह्मण से रोने का कारण पूछा। सियारों ने 'हुआं-हुआं' करके आपस में सलाह की। थोड़ी देर बाद एक गाय लाकर ब्राह्मण को दे दी। "लो महाराज, यह गाय हर रोज पांच सेर दूध देगी और एक तोला सोना भी।"—सियारों के सरदार ने कहा।

"जय हो यजमान, ईश्वर सब कुछ दे।"—ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया।

ब्राह्मण परिवार गाय की सेवा करता। थोड़े ही दिन में ब्राह्मण के यहां हर तरह की मौज हो गई। धूमधाम से उसने बेटी का ब्याह कर दिया। सगे-सम्बंधी भी उसके गुण गाने लगे। गाय सोना देती है—यह बात छिपी न रह सकी। राजा के दरबार तक भी चर्चा पहुंच गई। राजा ने तुरंत आदेश दिया—'ऐसी गाय तो हमारे पास होनी चाहिए।'

राजा के आदमी गए और ब्राह्मण को राजा की आज्ञा सुनाई। ब्राह्मण ने विरोध किया, पर उसकी एक न चली। गाय राजा के आदमी ले गए।

अब ब्राह्मण फिर बहुत दुखी हो गया। वह जंगल में गया। फिर वहां जोर-जोर से रोने लगा। चारों सियार वहां आ गए। ब्राह्मण से सारी बात पता चली, तो बोले—"गाय गई, तुम्हारी गरीबी तो हटा गई। अब सब्र करो महाराज!"

ब्राह्मण तब भी शांत नहीं हुआ। बोला—"गऊ माता के बिना प्राण दे दूंगा।"

तब सियारों ने कहा—"राजा से कहो कि पंचायत करे। गाय हम दिलवा देंगे।"

ब्राह्मण ने दरबार में फरियाद की। पंचायत के लिए राजा मान गया। उसने कहा—"ब्राह्मण, अपने पंच ले आओ।"

अगले दिन ब्राह्मण फिर जंगल में गया। सियार बोले—"हमें कुत्तों का डर है। ऐसे तो जा नहीं सकते। चादर में बांधकर ले चलो। फिर ऐसे ही छोड़ जाना।"

ब्राह्मण बड़ी-सी गठरी के साथ दरबार में पहुंचा। गठरी खोली तो चार सियार निकले। सियारों को देख, सभी दंग रह गए। दो सियार आसमान की ओर मुंह करके 'हुआं-हुआं' करने लगे। दो सियार राजा की ओर पीठ करके बैठ गए।

राजा ने कहा—"पंचायत का यह कौन-सा ढंग है?"

सियार बोले—"महाराज, पंचों में परमेश्वर आते हैं। हम उन्हीं को पुकार रहे हैं।"

राजा ने दूसरे सियारों से पूछा। वे बोले—"महाराज, अधर्मी का मुंह नहीं देखना चाहिए। इसलिए हम पीठ किए बैठे हैं।"

राजा ने गाय ब्राह्मण को लौटा दी। ब्राह्मण खुशी-खुशी घर लौटा।

लोक-कथाओं में समाज और राष्ट्र बोलता है। इस विशेषांक में देश के विभिन्न अंचलों की लोक-कथाएं हैं। लिखना, कैसा लगा?

दीवाली की मंगल कामनाएं—

तुम्हारे भइया

जय प्रकाश भारती

दीपावली पर
वार्षिक विशेषांक

नंदन

नवम्बर '९०   वर्ष : २७ अंक : १

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

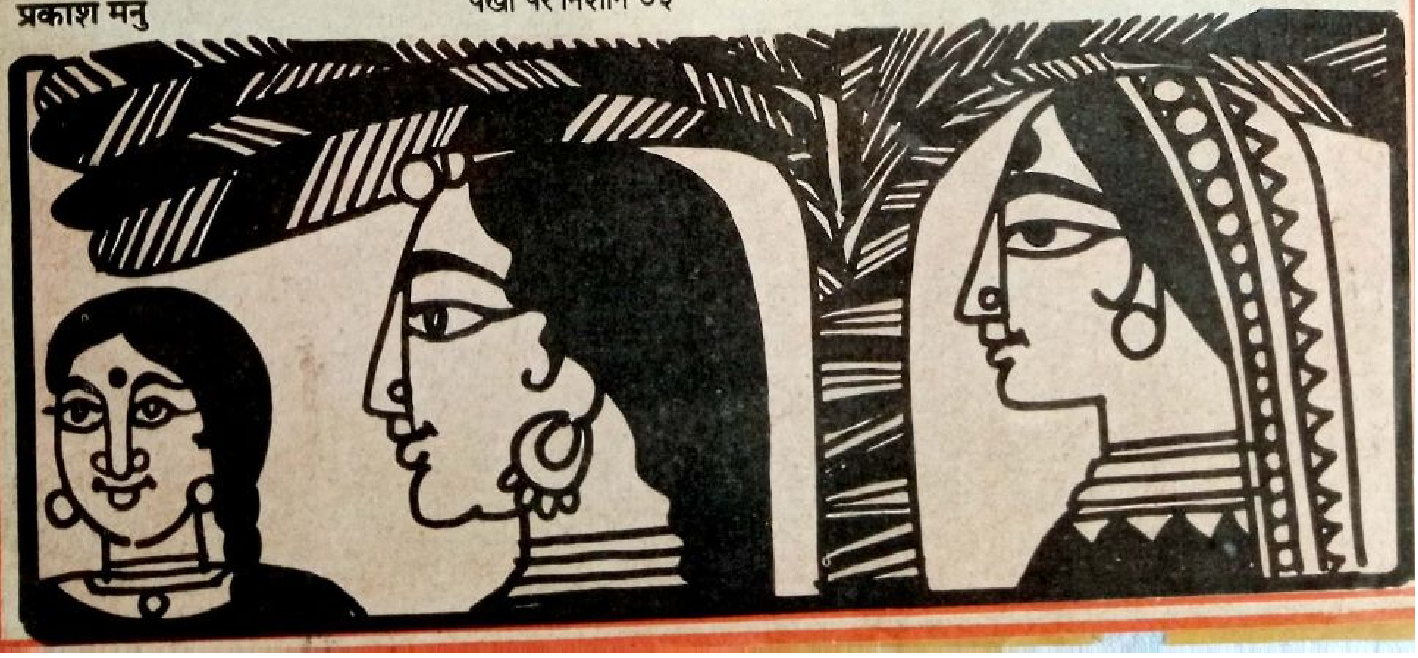
कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

मुखपृष्ठ : प्रदीप सोनी; एलबम : रामकृष्ण शर्मा

सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'
उप-सम्पादक : देवेन्द्रकुमार, रत्नप्रकाश शील, क्षमा शर्मा, डा. चन्द्रप्रकाश; चित्रकार : प्रशांत सेन



देवता की पूजा

—ओमप्रकाश शर्मा



एक पंडित जी थे। उनका एक ही लड़का था। जब पढ़-लिख गया, तो उन्होंने उसे और आगे ज्ञान प्राप्त करने के लिए भेजा। चलते समय बोले—"देखो, बेटा! यदि मार्ग में तुम्हें सोनचिरैय्या मिल जाए, तो उसे अपने दक्षिण की ओर रखकर ही आगे यात्रा करना।"

बेटा, जिसका नाम, वेणुगोपाल था, पिता जी के चरण छूकर यात्रा पर चल पड़ा। रास्ते में उसे विद्या पढ़ने के लिए जाने वाले तीन युवक और मिले। चारों साथ-साथ यात्रा करने लगे। यात्रा थी लम्बी। एक दिन प्रातः ज्यों ही वे चारों स्नान-पूजाकर अपनी यात्रा पर आगे चले, तो वेणुगोपाल की नजर पेड़ पर बैठी सोनचिरैय्या पर पड़ी। उसने पिता जी की बताई बात साथियों को भी बता दी। कहा—"मेरे पिता प्रसिद्ध ज्योतिषी और प्रकांड विद्वान हैं।" यह सुनकर वे चारों युवक शाम तक यही कोशिश करते रहे कि वह चिड़िया उनके दाहिने ओर किसी पेड़ पर बैठे, पर देर तक प्रयत्न करने के बाद भी ऐसा नहीं हो सका। आखिर परेशान होकर वेणुगोपाल के तीनों मित्र बोले—"भई, तुम जानो और तुम्हारी सोनचिरैय्या। हम तो जाते हैं।" कहकर वे चले गए।

वेणुगोपाल अगले पेड़ की ओर बढ़ गया, जो उसके दाहिने ओर था। उस समय सूरज ढल गया। सोनचिरैय्या उसके दाहिनी ओर के पेड़ पर आकर बैठ गई। वेणुगोपाल बहुत प्रसन्न हुआ।

रात होते-होते वह एक शहर में पहुंचा। वहां एक जगह बारात ठहरी हुई थी। वह भी उसी मकान की मुंडेर पर सुस्ताने के लिए बैठ गया। बारातियों की हंसी-मजाक से उसका मन थोड़ा ताजा हुआ। इतने में दूल्हा के पिता ने वेणुगोपाल को देखा। उसे वेणुगोपाल के नाक-नक्श और उसका व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक लगा। उसके दिमाग में एक बात बिजली की तरह कौंध गई—'अगर यह लड़का दूल्हा बनकर मेरे बेटे की जगह फेरों पर बैठे तो हमारी लाज बच सकती है, वरना हमारे लड़के की शक्ल-सूरत को देखकर ऐसा न हो, लड़की वाले, बिना ब्याह किए हमें वापस लौटा दें। फेरे हो जाने के बाद, तो बात को सम्भाल लेंगे।' दूल्हे का पिता झट वेणुगोपाल के पास आया। बोला—"ब्राह्मण देवता, हमारी थोड़ी मदद कर दो। हम तुम्हें राजी कर देंगे। बड़ी समस्या में फंसे हैं।"

"कहिए न क्या करना है?"—वेणुगोपाल ने पूछा।

"सुनो, धीरे से कहने की बात है। इस काम के बदले, मैं तुम्हें एक सोने की अशर्फी दूंगा।"—दूल्हे के पिता ने कहा।

"आप काम तो बताइए?"— वेणुगोपाल बोला।

दूल्हे के पिता ने उसे सारी बात बता दी। फिर कहा—"भइया, मेरी पगड़ी की इज्जत तुम्हारे हाथ है।" वेणुगोपाल ने अशर्फी के लालच में बात मान ली।

उस रात वेणुगोपाल एक कठपुतली की तरह वह सब करता रहा, जो उसे कहा गया। फेरे हुए। सभी दूल्हे की बड़ाई कर रहे थे। सास-ससुर बड़े प्रसन्न थे। लड़की दीपा भी बड़ी खुश थी। रिवाज के

अनुसार दूल्हा-दुल्हन को कुल देवताओं की पूजा करने के लिए अकेला छोड़ दिया गया। कई तरह की मिठाइयां, पूड़ी-कचौड़ी थाल में सजाकर दीपा की छोटी बहन रख गई। इनसे देवता को भोग लगाना था। बाहर सारी घर की औरतें बैठकर देवता जगाने के गीत गाने लगीं। दूल्हा-दुल्हन देवता के पास बिलकुल अकेले थे।

एक तरफ तो यह सब हो रहा था, दूसरी तरफ वेणुगोपाल का भूख से बुरा हाल था। उसे दिन भर सोनचिरैय्या को दाहिने लाने की कोशिश में थकान भी हो गई थी। फिर दिन भर कुछ खाया नही था। दीपा पूजन करने लगी, तो वेणुगोपाल ने उससे कहा—"देखो, मुझे बेहद भूख लगी है।"

दीपा ने आश्चर्य से देखा, मगर कुछ नहीं कहा। पर फिर जब वेणुगोपाल ने दुबारा भूख लगने वाली बात कही, तो दीपा ने शमति हुए पूछा—"क्यों, क्या पिता जी की बनवाई हुई मिठाई पसंद नहीं आई ?"

एक बार तो वेणुगोपाल के मन में आया कि सारी बात साफ-साफ पता दे, पर उसे तुरंत शर्त की बात याद आ गई। उसने दीपा से कहा—"नहीं ऐसी बात नहीं, पर कभी-कभी ऐसा होता है कि बारात की देखभाल में दूल्हे का ध्यान नहीं रहता। इसीलिए मुझे किसी ने खाने के लिए पूछा ही नहीं।" यह सुनकर दीपा ने सोचा—'मेरे लिए पति से बढ़कर और कौन-सा देवता हो सकता है।' उसने तुरंत पूजा के थाल में से मिठाइयां और पकवान उठाकर वेणुगोपाल के आगे रख दिए। बोली—"लो, खाओ। तुमसे बढ़कर मेरे लिए और कौन है ?" वेणुगोपाल ने पेट भर खाना खाया।

अगले दिन सुबह वेणुगोपाल, अपनी अशर्फी लेकर यात्रा पर रवाना हो गया।

सुबह बारात विदा होनी थी। उससे पहले असली दूल्हा अपनी सास से टीका कराने आगे आया। उसे देखकर सभी चौंके। दीपा ने देखा कि यह तो रात वाला दूल्हा नहीं है। रात उसने अच्छी तरह अपने दूल्हे को देखा था। सामने बैठा कर खाना खिलवाया था। अब सभी को यह लगा कि दूल्हा बदल गया। दीपा ने रो-रोकर अपनी मां से कहा—"मां, रात पूजा में मेरे साथ कोई और था। जिसके साथ मेरे फेरे हुए, वही मेरा पति है। मैं इसके साथ नहीं जाऊंगी।"

मां बोली—"अरी, तुझे कुछ लोक-लाज है कि नहीं। दूल्हे के पिता इतने बड़े आदमी हैं। उनका दूर-दूर तक नाम है। भला, वे क्यों ऐसा करेंगे ?"

दीपा ने और कोई चारा न देख, मां को रात वाली सारी बात बता दी। फिर बोली—"मां, मुझे इससे यही बात पूछ लेने दो। अगर यह असली होगा, तो सही जवाब देगा, वरना असलियत का पता चल जाएगा।"

मां ने उसकी बात मान ली। दूल्हे को लेकर उसकी मां एकांत में आई। मां ने उससे पूछा—"बेटा, रात आपने देवताओं के पूजन के वक्त क्या कहा था ?"

दूल्हा तो नकली था ही, वह बोला—"कहता क्या। यही कहा था कि पूजा करो।"

अब दीपा ने पूछा—"क्या तुम्हें उस वक्त भूख नहीं लगी थी ?"

नकली दूल्हे ने हंसते हुए कहा—"अरे, भूख क्यों





लगती। मैंने उससे पहले क्या भोजन नहीं किया था पेट भर ?''

यह सुनते ही दीपा रोने लगी। अब उसकी मां ने भी अपने पति को दूल्हा बदलने की बात बता दी। बात बढ़ी और यहां तक बढ़ी कि दूल्हे के पिता को खाली बारात लेकर लौटना पड़ा। दीपा अपने बाप के यहां ही रहने लगी। उसने निश्चय किया था—'मेरा जिस से ब्याह हुआ था, जब वह विदा कराने आएगा, तब जाऊंगी।' धीरे-धीरे चार साल बीत गए।

चार साल बाद वेणुगोपाल ने अपनी पढ़ाई पूरी की। वह गांव को लौटता हुआ दीपा के नगर से गुजरा। अचानक उसे अपने एक रात के दूल्हा बनने की बात याद हो आई। सोचा—'चलकर देखना चाहिए, उस घर में क्या हाल हैं।' वह दीपा के घर आया। आवाज दी—''कोई है ?'' अंदर से दीपा के पिता जी निकले।

वेणुगोपाल ने कहा—''थक गया था। प्यास भी लगी थी। सोचा, आपके घर पानी पी लूं। वैसे मैं आपके घर आपकी लड़की की शादी में आ चुका हूं। कैसी है आपकी बेटी। खूब खुश होगी ससुराल में।''

यह सुनकर दीपा के पिता को कुछ अटपटा लगा कि ब्राह्मण देवता यह सब क्यों पूछ रहे हैं ? वह वेणुगोपाल को घर के अंदर ले आया। दीपा लोटा-भर कर पानी लाई। उसने वेणुगोपाल को देखा, तो शक्ल परिचित -सी लगी। उसका माथा ठनका।

वेणुगोपाल भी दीपा को पहचान गया, पर चुप रहा।

आखिर उससे रहा न गया। उसने दीपा के पिता से कहा—''लगता है, आपकी बेटी आजकल आई हुई है ?'' दीपा के पिता ने अनमने भाव से कहा—''क्या आप जानते हैं। इसके साथ अजीब घटना घटी। आप तो बारात में थे, क्या आपको पता नहीं ?'' वेणुगोपाल बोला—''कैसे पता होता, मैं तो दूसरे दिन बारात विदा होने से पहले ही मुंह अंधेरे चला गया था। क्यों, क्या हुआ ?''

अब दीपा के पिता ने उसे सारी बात कह सुनाई। इससे पहले कि वेणुगोपाल कुछ कहता, दरवाजे पर आकर दीपा ने कहा—''बापू, अतिथि को खाना खिला दो।'' खाना खिलाते समय दीपा ने पानी का गिलास लाकर रखा, तो फिर उसने वेणुगोपाल को ध्यान से देखा। अब उसे लगा कि वह उसे पहचानती है। वह बिना कुछ कहे-सुने अंदर चली गई। अपनी मां से उसने कहा—''मां, तुम अतिथि से पूछो कि दूल्हा देवताओं के पूजन के वक्त भूखा हो, तो दुल्हन क्या करे।''

दीपा की मां ने वेणुगोपाल से दीपा वाला सवाल पूछा। वेणुगोपाल ने झट कहा—''मां जी, दुल्हन उसे अपने देवताओं के भोजन के थाल में से खिला दे।'' फिर क्या था—दीपा की मां भी उसे पहचान गई। उसने दीपा के पिता के कान में सारी बात कह दी। बस, असली दूल्हा मिल गया। मां – बेटी भी खुश। उसके पिता भी विद्वान दामाद को पाकर फूले न समाए। दूसरे दिन ही भोज हुआ। दीपा के पिता ने आठ बैलों के रथ में बैठाकर उसे विदा किया। वेणुगोपाल दुल्हन के साथ घर आया, तो उसके मां-बाप तो जैसे खुशी से झूम उठे। तभी तो कहते हैं, सच्चाई कभी नहीं छिपती। ●



लक्ष्मी-गणेश



तीन रंग के फल

— शांति अग्रवाल

दक्षिण भारत में चंद्रनगर नामक राज्य था। वहां रामदेव नाम का राजा राज करता था। चंद्रनगर धन-धान्य से परिपूर्ण था। प्रजा सुखी थी। राजा प्रजा को संतान के समान चाहता था। राजा का एक बेटा था जयदेव। राजकुमार अत्यंत सुंदर तथा मृदुल स्वभाव का था। प्रजा उसे प्राणों से भी अधिक प्यार करती थी। राजा के मंत्री धर्मदेव का पुत्र वीरेंद्रदेव राजकुमार का घनिष्ठ मित्र था। यह भी एक संयोग ही था कि राजकुमार और मंत्रीपुत्र दोनों का जन्म एक ही दिन हुआ था।

राजकुमार जब बड़ा हो गया, तो राजा ने उसका राज्याभिषेक करने का विचार किया। उसने एक जन-सभा बुलाई। सभा के सामने यह प्रस्ताव रखा। सभी ने उस प्रस्ताव को सराहा और सहर्ष स्वीकार कर लिया। पलक झपकते ही यह शुभ समाचार पूरे राज्य में फैल गया। लोग खुशी से झूम उठे। राजकुमार ने जब यह सुना, तो वह राजा के पास आया। बोला— "पिता जी, मैं चाहता हूं कि आप ही यहां के राजा रहें। मैं तो सेवक ही रहना चाहता हूं। आप जो भी आज्ञा देंगे, मैं उसका पालन करूंगा।"

राजा बोले— "बेटा, राजा तो प्रजा का सेवक ही होता है। अब तुम बड़े हो गए हो। तुम्हें ही राज-काज देखना चाहिए। मेरा मार्ग दर्शन तुम्हें मिलता रहेगा।"

यह सुनकर राजकुमार हाथ जोड़कर बोला— "राज मुकुट सिर पर धारण करने से पहले मैं देश का भ्रमण करना चाहता हूं, जिससे मैं उस देश से भली प्रकार परिचित हो जाऊं, जिसकी मुझे सेवा करनी है।"

राजकुमार की बात सुनकर राजा अत्यंत प्रसन्न हुए। राजकुमार को देश भ्रमण की अनुमति दे दी।

मंत्रीपुत्र वीरेंद्रदेव ने जब यह सुना, तो वह भी राजा तथा अपने पिता की आज्ञा लेकर अपने मित्र के साथ जाने को तैयार हो गया। अगले दिन राजसी वस्त्र पहन, तलवार कमर से लटका दोनों मित्र अपने-अपने घोड़े पर सवार होकर देश-भ्रमण के लिए चल पड़े। चलते-चलते वे एक सुंदर उद्यान में पहुंचे।

उस उद्यान की शोभा निराली थी। सुगंधित, रंग-बिरंगे फूलों वाले पौधे और फलों से लदे पेड़ों की शोभा अद्‌भुत थी। वहां मीठे जल का सरोवर भी था। दोनों ने सरोवर का जल पिया। मीठे-मीठे फल खाए और उद्यान में घूमने लगे। घूमते-घूमते वे एक विशाल वृक्ष के नीचे पहुंचे। थके तो थे ही। रात भी हो चली थी। विश्राम करने के लिए उसी पेड़ के नीचे लेट गए।

थोड़ी देर में राजकुमार तो सो गया, पर वीरेंद्रदेव को नींद ही नहीं आ रही थी। अचानक उसके कानों में कुछ आवाज आई। वह चौकन्ना होकर सुनने लगा। उस पेड़ पर तोते का एक जोड़ा रहता था। तोता-तोती आपस में वार्तालाप कर रहे थे। वीरेंद्रदेव पक्षियों की भाषा जानता था, इसलिए उसने उनकी बात समझ ली।

तोते ने तोती से कहा— "देखो, ये दोनों नवयुवक कितने सुंदर हैं!"

वह दुखी होकर बोली— "हां, तुम ठीक कहते हो, पर इन पर संकट की घड़ी आने वाली है।"

"कैसी संकट की घड़ी?"— तोते ने घबराकर पूछा।

तोती बोली— "इस वृक्ष की दो बहुत लम्बी शाखाएं हैं। एक शाखा की तरफ है चमत्कार और दूसरी की तरफ विपत्ति। अब देखना है, किसके भाग्य में क्या है?" इतना कहकर वे मौन हो गए। वीरेंद्रदेव बड़े असमंजस में पड़ गया। सोचने लगा— 'किस शाखा की तरफ क्या है, यह तो तोती ने बतलाया ही नहीं।' रात भर वह सोच-विचार करता रहा। सुबह होने पर राजकुमार जागा। तभी वीरेंद्रदेव ने दोनों दिशाओं में दो पौधे लगाकर राजकुमार से कहा— "मित्र, आज हम दोनों दो अलग-अलग दिशाओं में जाएंगे। फिर कोई नया अनुभव प्राप्त कर, यहीं वापस आएंगे। जो पहले लौटेगा, वह दूसरी दिशा वाले पौधे को देखेगा। यदि वह मुरझाया हुआ लगे, तो सोचेगा, कि उसके मित्र पर कोई विपत्ति आई है। और उसकी सहायता के लिए वह उसी दिशा में जाएगा।"

ऐसा निश्चय हो जाने पर राजकुमार पश्चिम दिशा वाली शाखा की ओर तथा वीरेंद्रदेव पूर्व दिशा वाली शाखा की ओर चल दिया।

दोनों अपनी-अपनी दिशाओं में गए। रास्ते में राजकुमार को एक आलीशान महल दिखाई दिया, पर उसके दरवाजे का कहीं पता नहीं चल रहा था। आश्चर्य चकित राजकुमार दीवारों को थपथपाकर देखने लगा। अचानक एक हल्की-सी आवाज के साथ एक बड़ा पत्थर एक तरफ को सरक गया। वहां एक दरवाजा दिखाई देने लगा। राजकुमार महल के अंदर चला गया। वहां उसने एक अत्यंत सुंदर युवती को देखा। वह सुबक-सुबककर रो रही थी। राजकुमार ने उससे पूछा— "तुम कौन हो? क्यों रो रही हो? क्या मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकता हूं?"



"मैं रूपनगर की राजकुमारी रूपमती हूं । एक दैत्य मुझे यहां उठा लाया है । वह मुझसे विवाह करना चाहता है । उसने मुझे धमकी दी है, यदि मैंने उसकी बात नहीं मानी, तो वह मुझे जान से मार देगा । पर तुम कौन हो ? यहां कैसे आ गए ? तुम फौरन यहां से चले जाओ । दैत्य अभी आता ही होगा । वह तुम्हें मार डालेगा ।"— रूपमती ने कहा ।

"नहीं, मैं ऐसे नहीं जाऊंगा । मैं चंद्रनगर का राजकुमार जयदेव हूं । तुम्हें भी अपने साथ लेकर जाऊंगा ।"— राजकुमार ने कहा । पर इससे पहले कि वह कुछ कर पाता, दैत्य चुपके से वहां आ धमका । उसने अपनी माया से राजकुमार को बंदर बना दिया ।

उधर वीरेंद्रदेव चलते-चलते एक नदी के किनारे पहुंचा । वहां उसने एक ऐसा पेड़ देखा, जिस पर लाल, हरे और पीले, तीन रंग के फल लगे थे । उसने लाल रंग का एक फल तोड़ा । जैसे ही उसने खाना शुरू किया, वह बंदर बन गया । उसकी कुछ समझ में नहीं आया कि यह कैसे हो गया ? उसने पीले रंग का फल तोड़कर खाया, तो वह फिर से मनुष्य बन गया । उसने सोचा— 'क्यों न हरे रंग का फल भी खाकर देखूं ?'— ऐसा सोचकर उसने हरे रंग का फल खाया । खाते ही वह पक्षी बन गया । फिर पीले रंग का फल खाकर मनुष्य बन गया । उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा । उसने उन चमत्कारी फलों को एकत्र किया और लौट चला ।

विशाल वृक्ष के पास वापस पहुंचकर उसने पश्चिम दिशा वाले पौधे को मुरझाया हुआ पाया । वह तुरंत पश्चिम दिशा की तरफ भागा । अंत में वह भी दैत्य वाले महल के पास पहुंच गया । वहां उसने एक पेड़ से जयदेव का घोड़ा बंधा हुआ देखा । उसने समझ लिया कि हो न हो, जयदेव इसी महल में है । पर महल के द्वार का तो कहीं अता-पता नहीं था । हां, महल में से किसी के रोने की आवाज आ रही थी । उसने फौरन हरे रंग का फल खाया । पक्षी बन कर महल में प्रवेश किया । फिर पीले रंग का फल खाकर मनुष्य बन गया ।

वीरेंद्रदेव को देखकर रूपमती चौंक पड़ी । बोली— "अरे, तुम कौन हो ? यहां कैसे आ गए ? तुम तुरंत यहां से भाग जाओ । वह राक्षस आ गया, तो तुम्हें भी अपनी माया से बंदर बना देगा, जैसे निर्दोष राजकुमार जयदेव को उसने बंदर बना दिया है ।" इतना कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगी ।

"तुम चिंता मत करो । वह राक्षस हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।"— कहकर वीरेंद्रदेव ने पीले रंग का एक फल बंदर बने जयदेव को खिलाया । फल खाकर वह पुनः मनुष्य बन गया ।

"इससे पहले कि वह राक्षस आ जाए, हम लोगों को यहां से निकल जाना चाहिए ।"— वीरेंद्रदेव बोला । उसने हरे रंग का फल काटकर सबको खिलाया । वे तीनों पक्षी बन गए, फिर उड़कर महल से बाहर आ गए । बाहर आकर उन्होंने पीले रंग का फल खाया और मनुष्य बनकर घोड़ों पर सवार हो गए । विशाल वृक्ष के पास पहुंचे । सबने चैन की सांस ली । रात वहीं बिताकर सवेरे घर की ओर प्रस्थान का निश्चय कर, उसी पेड़ के नीचे लेट गए ।

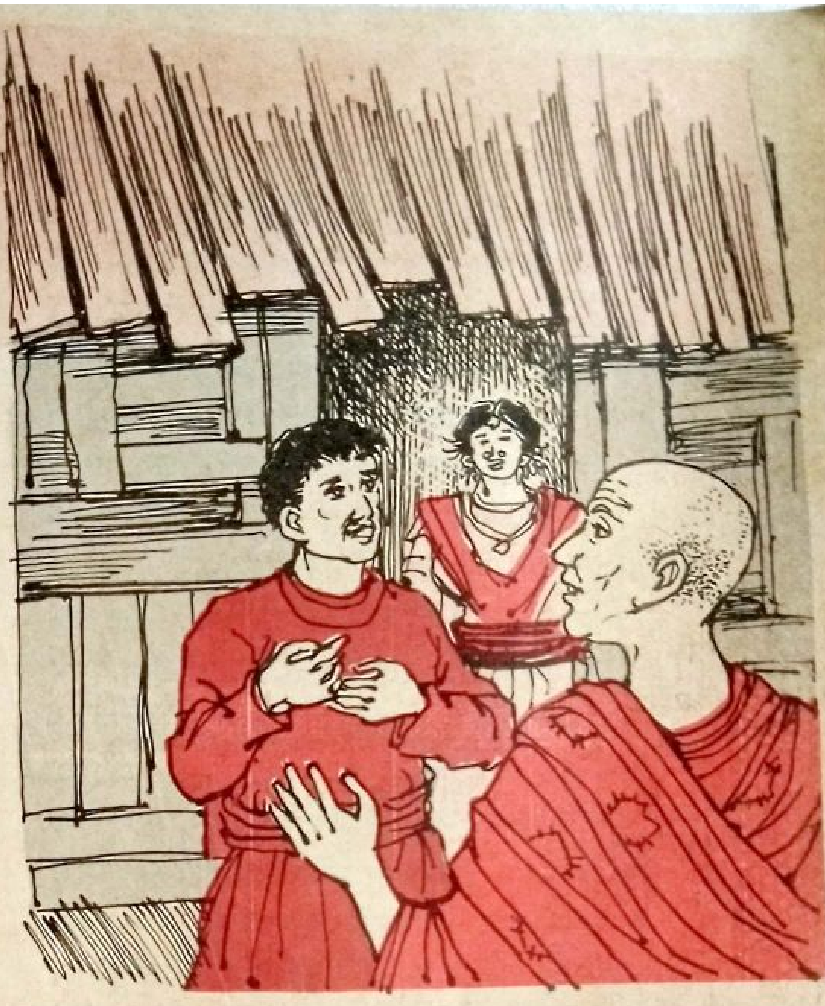
रात में वीरेंद्रदेव ने फिर तोती की आवाज सुनी । वह तोते से बोली— "कितना अच्छा होता, यदि वह राक्षस मर जाता, पर वह मरेगा कैसे ? उसकी जान तो इस वृक्ष की पश्चिम दिशा वाली शाखा में है ।"

प्रातःकाल होते ही वीरेंद्रदेव ने उस शाखा को काट दिया । इस प्रकार राक्षस के साथ-साथ उसकी माया का भी अंत हो गया । राजकुमार, राजकुमारी और वीरेंद्रदेव घर लौट आए । राज्य में खूब खुशियां मनाई गईं । राजा रामदेव ने रूपमती को रूपनगर पहुंचा दिया । रूपनगर के राजा विजयदेव ने अपनी बेटी रूपमती का विवाह राजकुमार जयदेव के साथ करने का संदेशा भेजा, जिसे राजा रामदेव ने सहर्ष स्वीकार कर लिया ।

फिर एक दिन बड़ी धूमधाम से राजकुमार के राज्याभिषेक तथा विवाह का कार्य सम्पन्न हो गया । •

ला मेरी चादर

—शंकरलाल मस्करा



सिक्किम के किसी पहाड़ी गांव में मां-बेटा रहते थे। गांव में सबसे खस्ता हाल कुटिया उन्हीं की थी। उनका जीवन भी दुःख और अभावों से भरा था। लड़के का नाम था केसांग। उसका पिता बहुत पहले मर गया था। मां इधर-उधर काम करके अपना और अपने बेटे का पेट भरती थी। उस दिन कोहरा छाया था, मां-बेटे दोनों घर पर थे। उसी समय दरवाजे पर आवाज सुनाई दी। केसांग ने भाग कर दरवाजा खोला। देखा, एक बौद्ध भिक्षु खड़ा था।

केसांग की मां ने भिक्षु को एक रोटी दे दी। भिक्षु ने उसी कुटिया में बैठकर रोटी खाई, फिर हंसकर बोला—"माई ! सच बता, यह किसका हिस्सा दिया तूने ?"

"किसी का नहीं भंते ! यह तो आपका ही था।"—केसांग की मां ने उत्तर दिया।

इस पर भिक्षु बोला—"माई ! अब तो एक गरम कपड़ा दिलवा दो। बहुत ठंड लग रही है।"

केसांग की मां उदास हो गई। बोली—"भंते ! घर में तो कुछ भी नहीं है।"

पर भिक्षु ने एक तरफ रखी बंडी देख ली थी। बोला—"यही दे दो न ! देखो, मेरी चादर कितनी फट गई है ! जगह-जगह से तार-तार हो गई है।"

केसांग की मां रसोई में चली गई।

तभी भिक्षु ने केसांग से कहा—"बेटा, जरा पानी तो लाओ मेरे लिए।" केसांग पानी लेकर आया, तो भिक्षु वहां नहीं था। उसकी जगह पैबंद लगी चादर पड़ी थी और गरम बंडी गायब थी।

केसांग को ठंड लगी, तो भिक्षु की चादर उठाकर ओढ़ ली। उसे लगा कि चादर चाहे जितनी जर्जर हो, उसे ओढ़ते ही ठंड मानो गायब हो गई है। वह चादर ओढ़कर ही बाहर निकल पड़ा। केसांग खूब घूमा। भूख लगी, तो छोटे-छोटे पहाड़ी संतरे खा लिए। वहीं पर झरने का पानी पीकर सो गया।

एकाएक कें-कें की आवाज सुनकर केसांग की नींद खुल गई। वह झट-से उठ बैठा। आसमान में मेघ घिरे हुए थे। रह-रहकर बिजली चमक रही थी। फिर मोटी-मोटी बूंदें पड़ने लगीं। केसांग ने चादर कसकर शरीर के चारों ओर लपेट ली। घर की तरफ चला, तो देखा—एक कुत्ता रास्ते में घायल पड़ा था। पास बैठा दूसरा कुत्ता कूं-कूं कर रहा था। केसांग का दिल पसीज उठा। बरसात की परवाह न कर, वह वहीं बैठ गया और अपनी चादर उतारकर कुत्ते को ओढ़ा दी। खुद भागकर पेड़ के नीचे छिप गया।

तभी बिजली कौंधी। उसने डरकर आंखें बंदकर लीं। खोलीं, तो देखा—जमीन पर पड़ी चादर तेजी से हिल रही है। उसने चादर हटाकर देखा। जमीन पर पड़े कुत्ते ने आंखें खोलीं और कान फड़फड़ाता उठ खड़ा हुआ। देखते-देखते दोनों कुत्ते वहां से नौ दो ग्यारह हो गए। केसांग को आश्चर्य हो रहा था। घायल कुत्ता एकदम से उठकर कैसे भाग गया ? उसने चादर ओढ़ ली और घर की तरफ चल पड़ा।

चलता रहा, लेकिन जंगल-झाड़ खत्म नहीं हुए। अब पता चला कि वह रास्ता भटक गया है।

चलते-चलते केसांग एक शहर के बाहर जा पहुंचा। शहर में एकदम सन्नाटा था। दुकानें बंद थीं। बहुत-से लोग पंक्ति में सिर झुकाए खड़े थे, किंतु कोई किसी से बात नहीं कर रहा था। केसांग हैरानी से देखता रहा। फिर उसने एक आदमी से इस बारे में पूछा। जवाब मिला—"तुम्हें पता नहीं, आज सुबह हमारे प्यारे राजकुमार की मृत्यु हो गई है।"

केसांग भी पंक्ति में खड़ा हो गया। थोड़ी देर बाद वह बढ़ता हुआ राजमहल के विशाल कक्ष में जा पहुंचा। सब तरफ सिसकियां सुनाई पड़ रही थीं। उसने देखा, एक पलंग पर सफेद चादर से ढका राजकुमार मृत पड़ा था। केसांग एकटक राजकुमार को देख रहा था। अचानक उसने देखा कि वही भिक्षु आकर राजकुमार के सिरहाने खड़ा हो गया, जो उसकी बंडी लेकर चला गया था। केसांग ने तत्काल चादर उतारी और बोला—"बाबा! यह लो अपनी चादर। मेरी बंडी दे दो।" उसने चादर भिक्षु की तरफ फेंक



दी, लेकिन यह क्या! भिक्षु वहां से गायब हो गया। चादर राजकुमार के शव पर जा गिरी।

सब तरफ शोर मच गया। सिपाही केसांग को पकड़ने दौड़े। लेकिन तभी राजकुमार चादर फेंककर उठ बैठा। यह चमत्कार देखकर सभी हक्के-बक्के रह गए। राजकुमार ने वह कटी-फटी चादर ओढ़ ली और पलंग पर बैठ गया। खबर मिलते ही राजा दौड़े-दौड़े आए।

राजा ने केसांग को गले से लगा लिया। उसे अपने साथ महल में ले गए। सारे शहर में बिजली की तरह इस चमत्कार की बात फैल गई। राजा ने सारे शहर में रोशनी करने की आज्ञा दे दी। तोपें दागी जाने लगीं। केसांग खुद चकित था कि यह हुआ कैसे? पूछने पर उसने राजा को सारी बातें सच-सच बता दीं।

राजा ने उसी वक्त केसांग की मां को लाने का आदेश दिया। राजा ने केसांग से कहा—"बेटा, अब मैं तुम्हें कहीं जाने नहीं दूंगा। आज से मेरे दो बेटे हैं। तुम्हारे कारण ही राजकुमार के प्राण लौटे हैं।" केसांग ने भिक्षु की फटी-पुरानी चादर को श्रद्धापूर्वक उठाकर माथे से लगा लिया। अगले दिन उसकी मां भी आ गई। राजा ने उनके रहने के लिए एक शानदार महल की व्यवस्था कर दी। केसांग और उसकी मां की तो दुनिया ही बदल गई।

दो दिनों बाद महल के दरवाजे पर उसी भिक्षु की आवाज सुनाई दी। केसांग दौड़ता हुआ बाहर गया और उसके चरणों पर लोट गया। उन्हें श्रद्धापूर्वक अंदर ले आया। उसने देखा, भिक्षु बाबा नंगे बदन थे। बाबा मुसकरा कर बोले—"बच्चा! तेरी बंडी कुछ जमी नहीं। ला, मेरी चादर।" कहकर उन्होंने रुई की बंडी केसांग के सामने रख दी। केसांग ने भिक्षु को चादर लाकर दे दी।

केसांग की मां बोली—"भंते! यह सब इसी चादर का चमत्कार है।"

भिक्षु ने कहा—"माई! चादर का काम केसांग को यहीं तक पहुंचाना था। अब तुम दोनों सुख से रहो, दूसरों की भलाई करो।" ●

चांद की मां

— विनीता कुमार

एक था तांती। उसकी दो पत्नियां थीं। दोनों पत्नियों से एक-एक बेटी थी। बड़ी पत्नी की बेटी का नाम था सुखिया और छोटी की बेटी का नाम था दुखिया। तांती बड़ी पत्नी से अधिक स्नेह रखता था। घर-गृहस्थी का सारा कार्य दुखिया और उसकी मां के सिर था। घर का काम निपटाने के बाद जो समय बचता था, उसमें वे दोनों चरखा काततीं और सूत के गोले बनातीं। फिर भी उन्हें रात-दिन फटकार ही मिलती। दिन डूबे मुट्ठी भर भात खाने को मिलता था।

एक दिन तांती अचानक स्वर्ग सिधार गया। बड़ी वाली पत्नी ने देखते-ही-देखते तांती का जमा किया हुआ सारा धन अपने पास छिपा लिया।

दुखिया और उसकी दुखियारी मां को मार-पीटकर अलग कर दिया। सुखिया और उसकी मां सोलहों प्रकार के व्यंजन बना-बनाकर खातीं। उधर दुखिया मां-बेटी के भाग्य में बासी भात व नमक आता। दुखिया मां-बेटी रात-दिन सूत कातकर कपड़ा बनातीं। किसी दिन एक अंगोछा तैयार हो जाता, तो किसी दिन गज भर का कोई कपड़ा, जिसे बेचकर वे दो जून का अन्न जुटा पातीं।

एक दिन सुबह-सुबह दुखिया की मां ने देखा कि चूहों ने सारा सूत काट-काटकर नष्ट कर दिया। जो रुई बची थी, वह भी एकदम सील गई थी। दुखिया की मां धूप में रुई की पूनियां सूखने के लिए डालकर, घाट पर कपड़े धोने चली गई। दुखिया को पूनियों की रखवाली पर छोड़ गई। पवन का एक झोंका आया और अपने साथ पूनियों को उड़ा ले गया। बेचारी दुखिया ने कूद-फांदकर पूनियों को रोकने की चेष्टा की, परंतु तेज हवा में पूनियां उसके हाथ न आईं। वह फफक-फफककर रोने लगी।

उसी समय हवा उसके कानों में फुसफुसाने लगी— "दुखिया री दुखिया, रोती क्यों है? तू मेरे संग चल। सब रुई मिलेगी। रुई, नरम-नरम रुई।" दुखिया ने आंसू पोंछ डाले और भागती-दौड़ती हवा के पीछे हो ली। बहुत दूर जाने पर मार्ग में एक गाय मिली। गाय ने पुकारा— "दुखिया री दुखिया, कहां जा रही हो? मेरा खूंटा तो साफ करती जा।"

दुखिया ने बड़े जतन से खूंटे को झाड़-पोंछकर साफ किया। थोड़ी-सी घास लाकर गाय के आगे डाल दी और फिर हवा के पीछे हो ली। अभी कुछ दूर ही गई थी कि रास्ते में एक सिंहोड़े का पेड़ मिला। पेड़ ने पूछा— "दुखिया री दुखिया, इतनी जल्दी-जल्दी कहां जा रही हो? जरा मेरी तो सुनो। मेरे आसपास इतने कांटे तथा झाड़-झंखाड़ हो गए हैं। मैं बहुत तकलीफ में हूं। क्या तुम मेरे पास के इन कांटों को साफ कर दोगी?" दुखिया ने बड़े परिश्रम से पेड़ के चारों तरफ फैले कांटों को साफ किया। फिर हवा के साथ चल दी।

कुछ दूर जाने पर ही उसे एक घोड़ा मिला। दुखिया को देखकर बोला— "दुखिया री दुखिया, बहुत भूख लगी है, दो मुट्ठी घास तो देती जा।" घोड़े की बात सुनकर दुखिया रुक गई। उसको घास देकर फिर चल दी। हवा के साथ-साथ चलती, दुखिया अंत में एक उजले महल में जा पहुंची।

महल में एकदम सन्नाटा था। वहां सुंदर सजी हुई, सफेद बालों वाली एक बुढ़िया बैठी सूत कात रही थी। एक ओर पूनियों के ढेर लगाती जा रही थी, तो दूसरी ओर थान के थान कपड़े बनते जा रहे थे।

दुखिया चकित रह गई। हवा बोली— "दुखिया री दुखिया, यह चांद की बुढ़िया मां हैं। इनके पास जाकर प्रणाम कर और जैसी रुई चाहती है, इनसे मांग ले। तू जितनी चाहेगी, उतनी मिल जाएगी।"

दुखिया डरते-डरते आगे बढ़ी। बोली— "दादी मां, हमारी रुई हवा उड़ा ले गई है। हम कहां से खाएंगे? क्या करेंगे? घर लौटकर जाएंगे, तो मां डांटेंगी। इसलिए जो रुई हवा उड़ा ले गई है, वह मुझे दे दो।"

बुढ़िया ने दुखिया की ओर प्यार से देखा।

बोली— "छठी माई, छठी माई, माय की बाछरी की अलाय-बलाय दूर हो। जियो बिटिया, जियो । अच्छा अब जा ! नहा-धोकर कुछ खा ले, फिर रुई लेकर घर जाना ।"

दुखिया उस कमरे में गई, जहां कपड़ों का ढेर लगा था । उसने एक सादा-सा कपड़ा अपने लिए लिया । वहां रखे उबटन, तेल, फुलेल में से उसने जरा-सा तेल सिर में मला और नहाने के लिए पानी में उतरी । पहली डुबकी लगाते ही वह अति सुंदर और गौरवर्ण की हो गई । दूसरी डुबकी में वह सोने-चांदी से लद गई । वह आश्चर्य चकित हो, पानी से बाहर निकल आई । रसोई घर की ओर बढ़ गई । नाना प्रकार के व्यंजनों को छोड़, मुट्ठी भर भात इमली, मिर्च, नमक के साथ खा-पीकर वह बुढ़िया से रुई मांगने आई । बुढ़िया ने उसे रुई की पिटारी देकर, आशीष देते हुए विदा किया ।

लौटते समय राह में उसी घोड़े ने पुकारा—"दुखिया, यह बछेड़ा तेरे लिए छोड़ा था। इसे लेती जा ।" नन्हा-सा बछेड़ा दुखिया के साथ चल पड़ा ।

दुखिया सिंहोड़े के पेड़ के पास से निकली, तो वह बोला— "दुखिया री दुखिया, तेरे लिए मुहरों की गगरी रखी है, इसे लेती जा ।" उसने गगरी बछेड़े की पीठ पर लाद दी ।

इसके बाद, फिर वही गाय मिली। उसने भी दुखिया के संग एक कपिला बछिया लगा दी । दुखिया भागते-दौड़ते घर पहुंची और मां की गोद में जा गिरी । मां को अपनी सारी कथा सुनाई । दुखिया की मां सुखिया के घर गई । वह इस धन का हिस्सा उसे देना चाहती थी, किंतु सुखिया ने मुंह मोड़ लिया । अपशब्द कहकर उन दोनों का अपमान किया— "चोरी का धन है, हमें नहीं लेना ।" सुखिया की मां अपनी बेटी पर बरस पड़ी कि कल उस चांद की बुढ़िया के सन-से सफेद बाल उखाड़कर नहीं लाई, तो तेरी हड्डी-पसली तोड़ दूंगी । उसी रात को दुखिया की पिटारी से एक राजकुमार निकला, जिसके माथे पर मुकुट, गले में हार और हाथ में तलवार थी । उसने कहा— "मैं दुखिया से ब्याह करूंगा ।" दुखिया की मां के आंसुओं में हंसी के फूल खिल उठे । उसने राजकुमार के हाथों में अपनी बेटी सौंप दी ।

दूसरे दिन सुखिया की मां ने अपनी रुई धूप में पसार दी । सुखिया को रखवाली पर बैठा दिया । जग दिखावे को घाट की ओर कपड़े धोने चली गई । तेज हवा चलने लगी । अभी रुई अच्छी तरह उड़ भी नहीं पाई थी कि सुखिया बिना बुलाए ही हवा के पीछे-पीछे लग गई । उसे भी रास्ते में वही गाय मिली । उसने सुखिया को पुकारा, किंतु सुखिया ने मुड़कर भी न देखा । आगे बढ़ने पर जिस जिस ने दुखिया को पुकारा था, बारी-बारी से सबने सुखिया को पुकारा, किंतु वे सब निराश हो गए । हवा के पीछे लगी-लगी सुखिया चांद के देश में जा पहुंची । कूद-फांदकर सीधे चांद की बुढ़िया मां के दरवाज़े पर जाकर ही रुकी । बुढ़िया ने झटपट सूत-चर्खे को समेटकर एक ओर रख दिया और पूछा— "तू कौन है बेटी ?"

मुंह बिचकाते हुए सुखिया ने कहा— "दुखिया को क्या भूल गई तू ? मैं दुखिया की बहन सुखिया हूं, किंतु पहले यह तो बता कि तेरी अकल मारी गई ? उसे इतना सारा धन दे डाला । अच्छा बोल, मुझे क्या देती है ? झटपट दे दे, नहीं तो तेरा कचूमर निकाल दूंगी ।"

बुढ़िया यह सुनकर जैसे पत्थर हो गई । बोली— "अच्छा पहले नहा-धो ले, फिर दूंगी ।" सुखिया कपड़ों के कमरे में पहुंची । अपने लिए अच्छे-अच्छे कपड़े छांटे, एक अच्छी साड़ी ली, सुगंधित तेल और साज-सिंगार की पिटारी लेकर पोखरे पर नहाने पहुंची । तेल-उबटन घिस-घिसकर बदन को रगड़ा और डुबकी लगाई ।

पहली डुबकी से रूप बदल चुका था । वह अति सुंदर हो गई थी । दूसरी डुबकी में शरीर पर गहने लद गए, किंतु लालसा फिर भी बनी रही । उसने एक और डुबकी लगाई । तीसरी डुबकी लगाने के बाद उसको अपना चेहरा पहचानने में धोखा होने लगा । गले का

सुर भयावना हो गया। चेहरे पर बड़े-बड़े चकत्ते पड़ गए। शरीर भर में फफोले पड़ गए। सिर के बाल सन की तरह सफेद और नाखून बघनखे जैसे हो गए। क्रोध के मारे वह बुढ़िया को जली-कटी सुनाने लगी।

चांद की बुढ़िया मां माया ममता के सुर में बोली— "तीन डुबकियां लगाने पर यही होता है। अच्छा जा,कुछ खा-पीकर ठंडी हो ले।" बुढ़िया को एक ओर ठेलकर, सुखिया रसोई में घुस गई। सारे व्यंजन चखती। जितने खाती नहीं, उससे अधिक खराब करती। ठूंस-ठूंसकर खा, बुढ़िया के पास पहुंची।

—"रुईवाली पिटारी कहां है री!" बुढ़िया ने इशारे से पिटारी का कमरा दिखा दिया। सुखिया ने चुनकर बड़ी-सी पिटारी उठाई और घर को रवाना हुई।

मार्ग में जो उसे देखता, वह डर के मारे भाग खड़ा होता। वह जिस रास्ते से आई थी, उसी रास्ते से लौटी। घोड़े ने एक दुलत्ती मारी। सिंहोड़े ने अपनी एक डाल हरहराकर उस पर गिरा दी। गाय ने सींग मारते हुए सुखिया को दूर तक खदेड़ा।

सुखिया गिरती-पड़ती अपने घर के पास पहुंची। दरवाजे पर ऐसी ठोकर लगी कि सीधे मुंह के बल गिर गई। उसकी मां उसे देखकर पल भर को डर गई। सोचने लगी, यह चुड़ैल कहां से आ गई ? जब वह सुखिया को पहचान पाई, तो पछाड़ खाकर गिर पड़ी और रोने लगी। फिर पिटारी को घर के भीतर ले गई और सोचने लगी कि शायद पिटारी से ही हमारी मुश्किलें आसान हो जाएं। शायद दुखिया की तरह सुखिया का राजकुमार दूल्हा भी इस पिटारी से निकल आए। फिर तो खूब धन-दौलत घर में आ जाएगी। जब रात हुई,तो सुखिया की मां ने उससे कहा— "जा बिटिया, गहने पहन ले।" रात भर वह सुख के सपने देखती रही। पौ फटने पर भी जब सुखिया की नींद न खुली, तब उसकी मां ने उसे बहुत पुकारा। गांव वालों के साथ मिलकर उसके किवाड़ तुड़वाए। कमरे के भीतर जो देखा, तो सन्न रह गई। वहां सुखिया के स्थान पर एक विशाल अजगर लेटा था। ●

मुझे मत छूना

—डा. राज बुद्धिराजा

एक थी जयभोला। जब वह हंसती, आंगन में चांदनी बिछ जाती। जब वह गाती, जल-तरंग बज उठती। ग्वालपाड़ा के घने जंगलों वाली तराई में उसका छोटा-सा घर था। घर-द्वार के सामने थी धान-खेत की पगडंडी। सूरज की किरणें सब दिन वहां आंख-मिचौनी खेलतीं। जयभोला कभी चिड़िया-चुग्गों को दाना खिलाती और कभी गाय-बछिया को रोटी-चावल खिलाती। कभी सुंदर-सुंदर पौधों को सींचती, कभी ओखल में धान कूटती।

इसी तरह दिन गुजरते गए। हंसते-गुनगुनाते जयभोला काम करती जाती। व्यापारी पिता जयनाथ के नेत्र खुशी से छलछला उठते। सौतेली मां की आंखें गुस्से में लाल-पीली हो जातीं। पर पिता की इस लाड़ली को वह कुछ न कह पाती।

रोजी-रोटी कमाने के लिए जयनाथ को अक्सर घर से दूर जाना पड़ता। लौटने पर वह सबसे पहले अपनी बेटी को पुकारता। पूरा आंगन उसके लिए तोहफों से भर देता।

एक बार उसे घर से लम्बे अरसे के लिए बाहर जाना पड़ा। जाते-जाते वह अपनी पत्नी से कह गया—"जयभोला मुझे प्राणों से अधिक प्रिय है। इसकी खूब अच्छी तरह देखभाल करना। लौटते समय मैं तुम्हारे लिए भी ढेर सारे तोहफे लाऊंगा।"

कहने को सौतेली मां ने कह दिया—"तुम फिक्र मत करो जी। तुम्हारी बेटी, मेरी बेटी। मैं इसे जी-जान से प्यार करूंगी।" पर उसके मन में तो कुछ और ही था। पति की गैर हाजिरी में वह उसे ज्यादा से ज्यादा सताती। बात-बात पर मीन-मेख निकालती। कोसती, डांटती-डपटती और कभी-कभी मारती-पीटती। पर जयभोला थी कि बिना उफ किए सब-कुछ सहन कर जाती।

जैसे-जैसे वक्त गुजरता गया, जयभोला पर

अत्याचार भी बढ़ते गए। नन्ही-सी जान को सौतेली मां, कोल्हू के बैल की तरह जोते रखती। गाय-बछियों को चारा-पानी, आंगन की लीपापोती, रसोई का चौका-बासन, सब-कुछ जयभोला के नन्हे-नन्हे हाथों को ही करना पड़ता। खाने के नाम पर रूखा-सूखा परोस दिया जाता।

एक बार जयभोला की सहेली की शादी थी। उसने जाने की इच्छा जाहिर की, तो सौतेली मां ने खुशी-खुशी जाने की इजाजत दे दी। उसने अपनी बेटी के लिए नई पोशाक बनवाई और कुछ जेवर भी बनवाए। मां का व्यवहार जयभोला को बड़ा अजीब लगा।

जब वह जाने लगी, तो मां ने उसके हाथों में कपड़ों की गठरी देते हुए कहा—"इसमें बहुत खूबसूरत पोशाक है। शादी में यही पहन लेना।"

लेकिन वहां जाने पर जयभोला को असलियत पता चली। इधर शादी में खुशियों की शहनाई बज रही थी, उधर जयभोला की आंखों से आंसुओं की धारा। पोशाक के नाम पर उस गठरी में मैले-कुचैले फटे-पुराने कपड़े थे और जेवर के नाम पर लोहे के पतले, मुड़े-तुड़े तार।

जयभोला ने अपनी सहेली के कपड़े पहने। जैसे-तैसे शादी में शामिल हुई। लौटने पर सौतेली मां ने उससे पोशाक के बारे में पूछा। जयभोला थर-थर कांपने लगी। उसकी जबान से एक भी बोल नहीं फूटा।

फिर क्या था! मारने-पीटने का एक और मौका उसके हाथ में आ गया था। जितना वह रोती, उसे और ज्यादा पीटती। सजा के तौर पर जयभोला को खेत पर धान कूटने का काम दिया गया।

जैसे ही वह मुट्ठी भर धान ओखल में डालती, सौतेली मां उसके नन्हे हाथ पर मूसल का वार करती। उसके चीखने का कोई असर न पड़ता। उसके दोनों हाथ कुचले जा चुके थे। अब उसे पैरों से धान डालने को कहा गया। इसी तरह दोनों पैरों को भी लहू-लुहान कर दिया गया। अंत में सौतेली मां ने जोर से मूसल का वार उसके सिर पर किया। जयभोला चीखती-चिल्लाती मौत की नींद सो गई।

अपने कुकर्म पर पर्दा डालने के लिए, सौतेली मां ने वहीं गड्ढा खोदकर जयभोला को गाड़ दिया। कुछ दिनों के बाद उस स्थान से एक बेल निकली, जो घर की दीवारों को ढकती हुई पड़ोसियों की दीवारों तक जा पहुंची। वक्त आने पर उसमें सुंदर-सुंदर कद्दू झूलते दिखाई दिए। बेल को छूने के लिए जैसे ही कोई आगे आता, वह कराह उठती—

मुझे मत छूना
मैं हूं तेरी जयभोला,
पिता गए परदेस,
मां ने मारा-गाड़ा।

हर बार छूने पर बेल का पत्ता-पत्ता यही बोलता। जैसे ही सौतेली मां को पता चला, उसने पोल खुल जाने के डर से बेल को उखाड़कर दूर नदी में फेंक दिया।

कुछ समय बाद, वह बेल खूबसूरती से नदी की लहरों पर फैल गई।

उधर जयनाथ को यह चिंता सता रही थी कि न जाने उसकी प्यारी बेटी किस हाल में होगी? जैसे-जैसे लौटने के दिन निकट आते गए, उसकी चिंता भी बढ़ती गई। नदी के किनारे पहुंचते ही उसने खूबसूरत बेल को लहलहाते हुए देखा। जयनाथ ने सोचा—'जयभोला इसे पाकर कितनी खुश होगी।'

मगर तोड़ने के लिए जयनाथ ने जैसे ही उसे छुआ, बेल बोल उठी—

मुझे मत छूना
मैं हूं तेरी जयभोला,
मां ने मुझे मारा
यहां फेंका।

वही हुआ, जिसका जयनाथ को डर था। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। जैसे-तैसे धैर्य धारण करके उसने पान का पत्ता हथेली पर रखा और कहा—"यदि तुम मेरी प्यारी जयभोला हो, तो सारिका पक्षी बनकर मेरी हथेली का पान खा लो।"

इतना कहने की देर थी कि सारिका की चोंच पान कुतरने लगी । व्यापारी पिता ने खूबसूरत सारिका को चांदी के पिंजरे में बंद कर दिया ।

घर जाकर जयनाथ 'जयभोला...जयभोला' कहकर पुकारने लगा । मगर जयभोला हो, तो आए ।

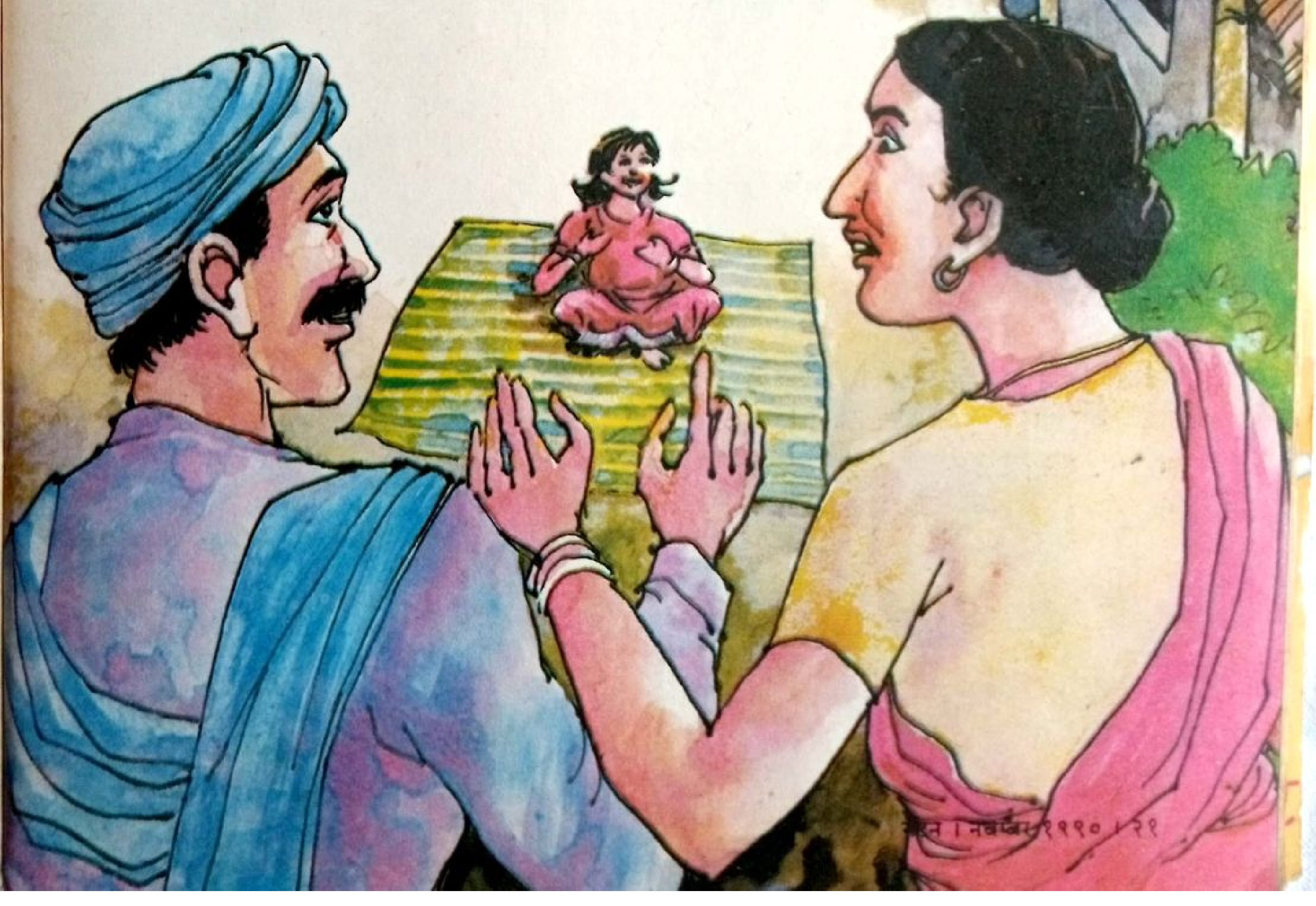
"वह तो अपनी सहेली के घर गई है ।"—सौतेली मां ने कहा । पर जयनाथ तो बेटी के लिए पागल हो गया था ।

—"यदि तुम मेरी जयभोला हो, तो इस खूबसूरत चादर पर बैठ जाओ ।"

और जयभोला चांदी के पिंजरे को खोल, फिर से नन्ही बच्ची बनकर उस चादर पर आ बैठी । वह मंद-मंद मुसकरा रही थी ।

सौतेली मां ने देखा, तो डर के मारे कांपने लगी । जयनाथ ने उसे घर निकाला दे दिया था ।

एक बार फिर से आंगन में चांदनी बिछ गई थी। जलतरंग बज उठी थी ।●



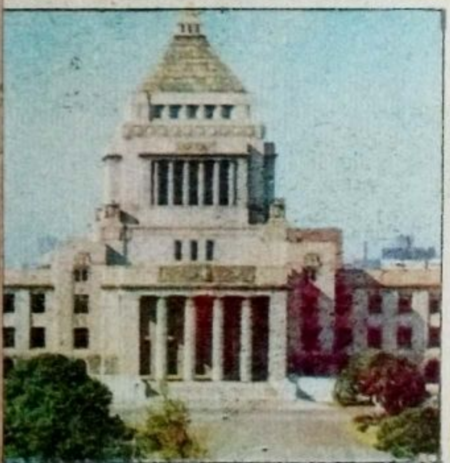
नए-पुराने रंगों का देश जापान



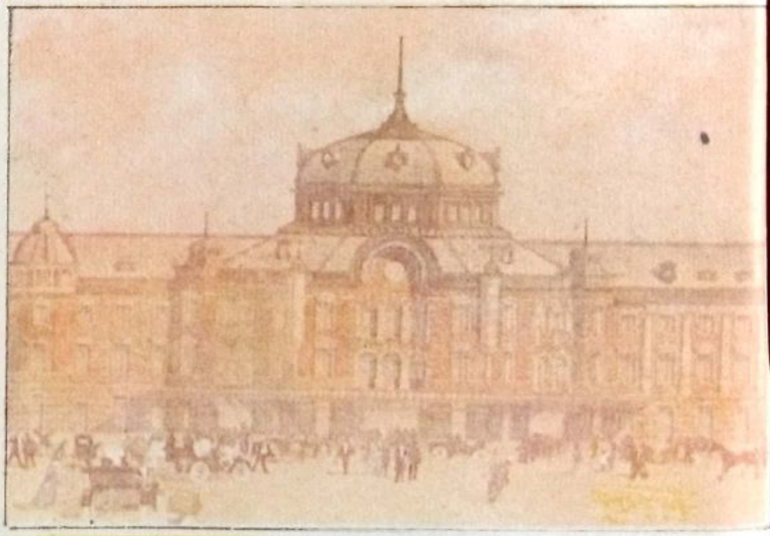
जापान का प्रसिद्ध हिमेजि दुर्ग ↑



'हानाबी'— रंग-बिरंगी आतिशबाजी । ↑



जापान का संसद भवन ←



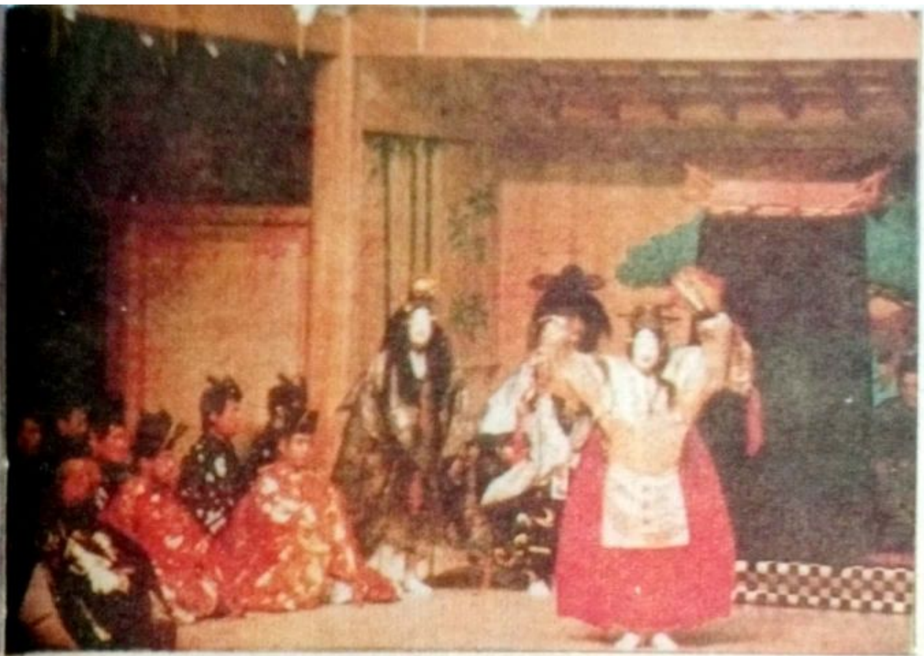
→ जापान की राजधानी तोक्यो का रेलवे स्टेशन

शिचि गो सान पर्व के अवसर पर जापानी बच्चे मंदिर के बाहर । ↓





→ क्योतो में हेरआन मंदिर का द्वार ।



प्राचीन शैली के जापानी नाटक का एक दृश्य।

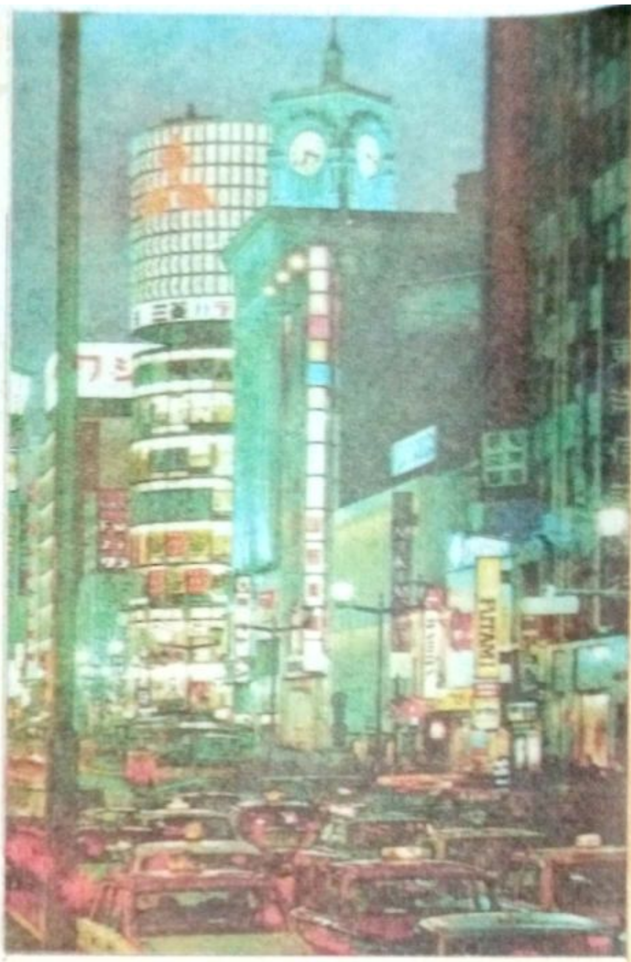
हिना मात्सुरी— गुड़ियों का त्योहार





रंग-बिरंगी जापानी पतंगें! क्या कहने!

सौजन्य : डॉ. सत्यभूषण वर्मा



रात में जगमग तोक्यो का गिंजा क्षेत्र

जापानी रोबोट— दुनिया भर में इनकी मांग है।



बच्चों के बनाए चित्र

डाक टिकटों पर



छम छमाछम



डाक टिकट : गोपीचंद श्रीनागर

शिलांग देवता

—डा. श्यामसिंह शशि

मेघालय यानी बादलों का घर । यहां प्रायः पूरा साल वर्षा होती रहती है । कभी मूसलधार, तो कभी रुक-रुककर । इस प्रदेश में चेरापूंजी स्थान है, जहां दुनिया की सबसे अधिक वर्षा होती है । यहां अधिकतर गारो, खासी तथा जयंतिया जनजाति के लोग रहते हैं ।

मेघालय में शिलांग बड़ा पुराना नगर है । शिलांग पीक एक पहाड़ी का नाम है । कहते हैं, यह स्थान देवताओं को बड़ा प्रिय था । यहां की प्राकृतिक सुषमा देखते ही बनती थी । स्वर्ग लोक से देवता यहां के सौंदर्य को देखने आते थे । यहां क़ी धरती स्वर्ग से भी बढ़कर थी । इसलिए देवताओं में यहां आने की होड़ लगी रहती थी ।

शिलांग के आदिवासी बताते हैं कि प्राचीन काल में यहां एक विचित्र प्रकार की लता थी । यह लता



सोपेन बेंग पहाड़ पर लटकी हुई थी, जो सीधे आकाश की ओर जाती थी । उसी लता से देवता धरती पर उतरते थे और अवकाश का आनंद लेते थे । यहां की हवा में चंदन-सी सुगंध थी और प्रपातों से झरता पानी गंगाजल-सा मीठा था । एक अजीब-सी मस्ती का वातावरण था यहां का । देवताओं का मन वापस जाने का न होता, लेकिन स्वर्गलोक से ज्यों ही संकेत मिलता, तो फिर बारी-बारी से देवता लता पर चढ़ने लगते और यहां की भूमि देवताओं से खाली हो जाती ।

देवताओं का स्वर्ग से धरती पर आना-जाना अनंत काल तक इसी तरह होता रहा । वे जब स्वर्ग लौटते, तो महीनों धरती की प्रशंसा करते रहते । जिस तरह बच्चे गर्मियों की छुट्टियों की प्रतीक्षा करते हैं, उसी प्रकार देवता भी वार्षिक अवकाश के लिए लालायित रहते । बाद में देवता पृथ्वी पर तो आ जाते, किंतु लौटने में आनाकानी करते । उन्हें यहां के आदिमानव आकर्षित करते । भोले-भाले लोग उनके स्वागत-सत्कार में कोई कमी नहीं छोड़ते थे । यहां के पशु-पक्षी तक उन्हें पहचानने लगे थे ।

कुछ देवताओं ने तय किया कि जब धरती पर उन्हें स्वर्ग से भी बढ़कर सुख मिलता है, तो फिर लौटकर क्यों जाएं ? एक वृद्ध देवता बोला—"देवताओं में अहं बहुत आ गया है । कुछ ईर्ष्या-द्वेष में पागल हो गए हैं । इसलिए यहां के सीधे-सादे आदिवासियों के बीच रहना अधिक हितकर है ।"

आखिरकार देवताओं ने स्वर्ग लौटना बंद कर दिया । उन्होंने स्वर्ग लोक से आने वाले सभी आदेश रद्द कर दिए । वे बड़े मजे में अपना जीवन व्यतीत करने लगे । कुछ ने खेतीबाड़ी का धंधा भी अपना लिया । लेकिन कुछ आदिवासियों की रोटियां तोड़ते रहे । उनकी भलमनसाहत का लाभ उठाते रहे ।

देवता, जिन्हें सुर भी कहा जाता था, एक दूसरे से बड़ी ईर्ष्या करने लगे । मित्रों-रिश्तेदारों की उन्नति देखकर कोई भी खुश नहीं होता । उनमें लालच भी



बढ़ता गया। अहंकार इतना बढ़ गया कि गृह युद्ध की नौबत आ गई।

युद्ध के बाद संधि और फिर शांति की तलाश मनुष्य का स्वभाव रहा है। देवसभा और आदिवासियों की महासभा बुलाई गई। दोनों ओर से प्रस्ताव आए। जमकर बहस हुई। एक देवता बड़ा दबंग था। बड़ी-बड़ी मूंछें, मोटी-मोटी आंखें, गोल-मटोल चेहरा और लम्बा-चौड़ा बदन। देखने में वह भीम लगता। वह रावण की तरह अट्टहास और महाबलि की भांति लम्बे-लम्बे डग भरता। उसने सबको भयभीत कर रखा था। सब उसकी ताकत का लोहा मानते थे। कुछ देवताओं ने उसके सामने घुटने टेक दिए। पर बहुत-से खुलकर विरोधी खेमे में चले गए। जो डरपोक थे, वे आकाश लता पर चढ़कर वापस स्वर्ग लौट गए। लोग विशालकाय देवता से आतंकित थे। वह अपने को शिलांग देवता घोषित कर चुका था और सबको तंग करता रहता था।

एक दिन उसे एक युक्ति सूझी—'स्वर्गारोहण की लता ही को क्यों न काट दूं, ताकि धरती पर बसे देवता कभी स्वर्ग वापस ही न जा सकें।'

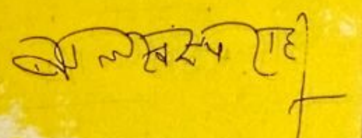
एक सुबह उसने हाथ में सोने की कुल्हाड़ी पकड़ी और सोपेन बेंग की पहाड़ी की तरफ चल पड़ा। सब लोग सोए हुए थे। पक्षियों की चहचहाने की ध्वनि गूंज रही थी। पहाड़ी पर पहुंचते ही उसने आव देखा न ताव, एक झटके में लता पर कुल्हाड़ी चलाई और उसे काट दिया। कानों को चीरती हुई एक आवाज आई और आकाश लता सदा के लिए स्वर्ग से अलग हो गई। स्वर्ग और धरती के बीच आने-जाने का मार्ग बंद हो गया।

शिलांग देवता अब यहां का एकछत्र सम्राट बन गया। उस समय सात देवता भी यहां बस चुके थे। वे अब वापस तो जा नहीं सकते थे। इसलिए अपने-अपने परिवारों के साथ अलग-अलग जगह जाकर रहने लगे। जिन स्थानों पर जाकर वे बसे, उन्हें 'सप्तगृह' अथवा 'सात घोंसले' की संज्ञा दी गई। कहा जाता है कि सारी मानव जाति इन्हीं सात परिवारों की संतान है, जो धीरे-धीरे सारे विश्व में फैल गई।

शिलांग देवता के बारे में कई कथाएं प्रचलित हैं। कहते हैं, वह देवता आज भी यहां के लोगों की रक्षा के लिए कभी-कभी प्रकट होता रहता है। ●

कवि एक रंग अनेक





सूरज का रथ

सूरज का रथ बड़ा निराला,
जुते हुए हैं घोड़े सात।

घोड़ा एक लाल भड़कीला,
घोड़ा एक हरा चमकीला,
घोड़ा एक चमाचम पीला,
एक बड़ा ही गहरा नीला,
एक आसमानी बर्फीला,
एक जामुनी छैल-छबीला,
एक संतरे-सा चटकीला,
हर घोड़ा बेहद फुर्तीला !

अगर रास्ता रोके कोई,
कसकर खूब जमाते लात।

सर्दी में दौड़ें ये सरपट,
गर्मी में करते कुछ झंझट,
पी जाते हैं नदियां गट-गट,
कुछ जल भाप बनाते झटपट,
कहीं गिराते ओले पट-पट,
बादल से कहते—पीछे हट,
पर्वत से करते हैं खटपट,
सातों ही घोड़े हैं नटखट !

रोक न पाती इनका रास्ता,
आए आंधी या बरसात।
सूरज का रथ बड़ा निराला,
जुते हुए हैं घोड़े सात।





रंग जमाया टी. वी. ने

फीके पड़े तमाशे सारे, रंग जमाया टी. वी. ने।
ए बी सी डी ई एफ जी,
चित्रहार की धूम मची,
सबने इतवारों की शाम,
कर डाली टी. वी. के नाम,
सैर-सपाटे, खेल-कूद का किया सफाया टी. वी. ने।

टिक-टिक-टिक भई, टिक-टिक-टिक,
आता जब धारावाहिक,
बैठक में सब जम जाते,
काम-काज सब थम जाते,
पढ़ने-लिखने के चक्कर से हमें बचाया टी. वी. ने।

अ आ इ ई उ ऊ ए,
छुटकू टी. वी. को घूरे,
आता नहीं नहाना है,
टी. वी. का दीवाना है,
बच्चा हो या बड़ा, सभी को खूब रिझाया टी. वी. ने।

कैलेंडर

घर में सजी हुई चीजों में
कैलेंडर का ठाठ निराला।

सुंदर-सुंदर चित्रों वाला,
चिकना-चिकना, रंग-बिरंगा,
फर-फर फहराता है जैसे
लाल किले पर लगा तिरंगा।

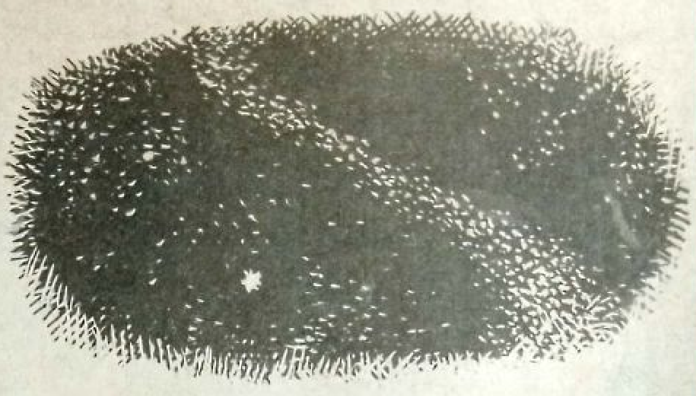
फूलदान से भी बढ़-चढ़कर
घर की शान बढ़ाने वाला।

साल, महीना, दिन, तारीखें,
सब हैं इसको याद जबानी,
टीचर जी के बाद यही है,
शायद सब से ज्यादा ज्ञानी।

जो भी पूछो, बतलाएगा,
इसने उत्तर कभी न टाला।

पापा-मम्मी खुश हो जाते
जब पहली तारीख बताता,
हमें छुट्टियां दिखा-दिखाकर
बार-बार कितना ललचाता।

इतवारों के मुंह पर लाली,
शेष दिनों का मुंह है काला।



आकाशगंगा

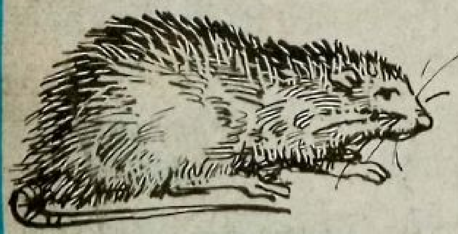
गंगा एक यहां बहती है, एक वहां आकाश में।

धरती की गंगा है निर्मल,
शर्बत से मीठा इसका जल,
हर प्यासे की प्यास बुझाती,
भारत का इतिहास सुनाती,

इसकी अच्छाई आई थी गांधी और सुभाष में।

नभ की गंगा तारों वाली,
चांदी रचे किनारों वाली,
रंगों भरी फुहारों वाली,
चमकीली मंझधारों वाली,

हमें रात भर नहलाती है शीतल, मृदुल प्रकाश में।
गंगा एक यहां बहती है, एक वहां आकाश में।



बड़ा सताया

चूहे राजा, आ जा, आ जा,
घी से चुपड़ी रोटी खा जा,
मैंने चूहेदान लगाया,
तरह-तरह का माल सजाया।

तूने मुझको बड़ा सताया,
किशमिश खाई, काजू खाया,
मूंगफली का किया सफाया,
फिर भी तुझ को चैन न आया।

चढ़ा मेज-कुर्सी पर मेरी,
चीजें कुतर, लगा दी ढेरी,
कई पुस्तकें रद्दी कर दीं,
कई कापियां भद्दी कर दीं।

सब कपड़े छलनी कर डाले,
जूतों के तस्मे चर डाले,
परदों तक की शान बिगाड़ी,
तूने क्या-क्या चीज उजाड़ी!

किसी तरह जब पार न पाया,
थककर चूहेदान लगाया,
तेरा बचना है अब मुश्किल,
बाहर निकल, छोड़ अपना बिल।

आ जा बच्चू, जल्दी आ जा,
आ जा, हलवा-पूरी खा जा,
होंगे तेरे वारे-न्यारे,
तुझे वचन देता हूं प्यारे।

तुझे नहीं फिर आने दूंगा,
खाने की हर चीज रखूंगा—
सदा पहुंच से बाहर तेरी,
अब तो जान बख्श दे मेरी!



खुली छत

—श्रीनिवास वत्स

रिढाणा नामक गांव में लोग अपनी कुलदेवी की पूजा करते थे । शीतला सरोवर के किनारे देवी का मंदिर था । किसी घर में बच्चा पैदा होता, तो सर्वप्रथम देवी के मंदिर में जाकर पूजा-अर्चना की जाती । विवाह के बाद जब तक वर-वधू कुलदेवी के मंदिर में पूजा न कर लेते, उनके विवाह की रस्म पूरी नहीं समझी जाती थी । कुलदेवी की कृपा से गांव में सुख-समृद्धि थी । बीमारी में देवी के तालाब का पानी जादू-सा असर करता । मंदिर के आसपास उगी दूब और मिट्टी के लेप से चर्मरोग ठीक हो जाते थे ।

धीरे-धीरे रिढाणा ग्राम के इस मंदिर की चर्चा आसपड़ोस के गांवों में होने लगी । देवी माता के चरणों की धूल से सभी बीमारियों का इलाज सम्भव है, ऐसा जानकर दूर-दूर से लोग मां के दर्शनों के लिए आने लगे ।

लोगों की सुविधा के लिए कर्मन नामक एक जमींदार ने गांव में एक और तालाब खुदवाया । उसके घाट पर शीशे की सीढ़ियां बनी थीं । तालाब के किनारे उगे वृक्षों की छाया के कारण, उसका जल ठंडा रहता था । पास ही कुंआं था । उसका पानी पीने के काम आता था । कुछ समय बाद भाकू नामक एक अन्य किसान ने श्रमदान द्वारा दूसरे तालाब की खुदाई की । करमन वाला, भाकू वाला आदि तालाबों के साथ-साथ गांव में शंसर, गोमती आदि दूसरे तालाब भी बन गए ।

तालाबों में पशु-पक्षी पानी पीते । गर्मियों में दोपहर को लोग वृक्षों की छाया में विश्राम करते ।

एक बार काफी वर्षा हुई । आसपास के सभी गांव बाढ़ से घिर गए । लोग घरों को छोड़, सुरक्षित स्थाने की ओर जाने लगे ।

रिढाणा गांव में भी पानी भर गया था । कुलदेवी का मंदिर थोड़ा ऊंचाई पर था । वहीं पानी नहीं पहुंच पाया था । वर्षा रुकने का नाम नहीं ले रही थी । यहां के लोग भी गांव छोड़ने की सोचने लगे । उन्होंने निर्णय किया, यदि ऐसे ही बारिश होती रही, तो वे सब कल गांव छोड़कर चले जाएंगे ।

उसी रात पड़ोसी गांव का लखीराम नामक एक व्यक्ति अपनी गाय को लेकर वहां से गुजरा । देवी माता के मंदिर के पास उसे सूखी जगह दिखाई दी । सोचा, 'रात को यहीं रुक जाऊं । सुबह आगे

चलूंगा।' वह मठ में जाकर बैठ गया। बाहर सूखी जगह में गाय बैठ गई। थकावट के कारण शीघ्र ही लखीराम को नींद आ गई। सपने में उसे देवी दिखाई दीं। उनके हाथ में एक कलश था।

देवी ने लखीराम से कहा— 'यहां के लोग सुबह गांव छोड़कर जाने की सोच रहे हैं। तुम उनसे कहना, वे गांव न छोड़ें।'

'लेकिन यहां तो पानी ने तबाही मचा रखी है। लोग भूखों मर जाएंगे।' —लखीराम बोला।

देवी ने कलश से एक बीज निकाल कर लखीराम को दिया। कहा— 'तुम इसे मठ के बाहर सूखी जगह पर बो देना। तीन-चार दिन में यह सारा पानी सोख लेगा।'

सुबह हुई। लखीराम की नींद खुली। उसे स्वप्न की बात अभी भी याद थी। पर बीज कहां मिले! वह बाहर गाय के पास गया। देखकर हैरान रह गया। गाय के पैरों के पास बिलकुल वैसा ही बीज पड़ा था, जैसा उसने स्वप्न में देखा था।

तब तक गांव के लोग भी देवी माता के अंतिम दर्शन हेतु वहां आ गए थे। लखीराम को देख, उन्होंने उसे भी साथ चलने को कहा।

लखीराम ने स्वप्न वाली बात गांव के लोगों को बताई। वह बीज भी दिखाया, जो उसे मिला था।

सुनकर ग्रामीण बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कुलदेवी का स्मरण कर, बीज को सूखी जगह में बो दिया। फिर सब अपने-अपने घरों को लौट आए। उन्होंने निर्णय किया—'यदि सचमुच तीन दिन में पानी सूख गया, तो हम गांव छोड़कर नहीं जाएंगे।'

थोड़ी देर बाद वर्षा रुक गई। धूप निकल आई। तेज हवा चलने लगी। पानी सूखना शुरू हो गया। अब प्रतिदिन जलस्तर घटता जा रहा था। तीसरे दिन सब खेत दिखाई देने लगे। घरों, गलियों में कहीं भी बाढ़ के पानी का निशान नहीं था। लोग बहुत प्रसन्न हुए। सब मिलकर माता के मंदिर में पूजा करने पहुंचे। लखीराम सबसे आगे था।

बाढ़ समाप्त हुई, तो लोगों ने खेती करना पुनः शुरू कर दिया। जमीन प्यासी नहीं थी। खूब अनाज पैदा हुआ। लखीराम कुलदेवी का चमत्कार देख चुका था। सोचा—'अब जीवन भर यहीं रहूंगा। देवी की पूजा करूंगा।' उस दिन से लखीराम गाय के साथ रहने लगा। एक आश्रम बना लिया और गांव के बच्चे पढ़ाने लगा।

समय के साथ उस बीज ने भी पेड़ का आकार ले लिया। उस वृक्ष की शाखाएं दूर-दूर तक लग गईं।



उन्हीं दिनों गांव में एक जटाधारी साधु आया। उसे तंत्र-विद्या का ज्ञान था। उसने गांव के बाहर समाधि लगाई। समाधि की समाप्ति पर उसने वहां एक विशाल डेरा बनाने का निर्णय लिया। तंत्र-मंत्र से गांव वालों को तरह-तरह के करतब दिखाए। गांव के लोग डर गए। उन्होंने डेरे के निर्माण के लिए काफी धन दिया, श्रमदान भी किया। कुछ ही दिनों में वहां विशाल भवन खड़ा हो गया। सिर्फ अट्टालिका की छत के लिए एक शहतीर की कमी थी।

एक दिन लखीराम देवी की पूजा में लीन था। जटाधारी साधु वहां पहुंचा। लखीराम से कहा—"डेरे के निर्माण में तुमने क्या योगदान दिया?"

लखीराम ने आदरपूर्वक उसे बैठाया। विनम्रता से कहा—"महाराज, मैं माता से प्रार्थना करूंगा कि आपके डेरे की छत पूरी कर दे।"

साधु को गुस्सा आया, बोला—"तुम क्या प्रार्थना करोगे ? वह सब तो मैं स्वयं भी कर सकता हूं । मठ के बाहर उगा पेड़ मुझे बहुत अच्छा लग रहा है । इसे कटवाओ । यह डेरे की अट्टालिका के काम आएगा ।"

"लेकिन महाराज, यह तो गांव वालों को बाढ़ से बचाता है ।"—लखीराम बोला ।

बाबा ने कहा—"तुम हमें रोकोगे, तो हम अपने तपोबल से पूरे गांव को डुबो देंगे ।"

लखीराम चुप हो गया । उसे बाबा की अभिमान भरी बातें अच्छी नहीं लगीं ।

थोड़ी देर बाद वह जटाधारी एक कुल्हाड़ी लेकर आया । गांव के दूसरे व्यक्ति भी बाबा को रोकना चाहते थे । परंतु किसी में इतना साहस न था ।

बाबा ने कुल्हाड़ी उठाकर पेड़ पर प्रहार किया । अचानक एक सर्प और एक कछुआ वहां प्रकट हो गए । बाबा ने सर्प को मंत्रबल से वश में कर लिया । कछुए को पकड़ना चाहा, पर कछुए ने उछल कर उसके पैर में काट लिया । क्षण भर में ही जटाधारी अचेत होकर गिर पड़ा और तड़पने लगा । लोग कुछ समझ पाते, इससे पहले ही कछुआ और सांप वहां से जा चुके थे । कुछ देर बाद जटाधारी का देहांत हो गया ।

लखीराम तथा गांव के अन्य लोगों ने हाथ जोड़कर कुलदेवी से प्रार्थना की । वे बाबा के शव को डेरे में ले आए ।

रात को लखीराम को लगा, जैसे कुलदेवी कह रही हों— 'बाबा को उसके घमंड की सजा मिल गई । तुम आदरपूर्वक उसका अंतिम संस्कार कर दो । घमंड कभी फलता नहीं, यह दिखाने के लिए डेरे की अट्टालिका की छत अधूरी ही रहेगी । तुम डेरे को उतना ही आदर देना, जितना इस मठ को देते हो ।'

इस घटना को सैकड़ों साल बीत गए । रोहतक जिले के इस गांव में आज भी माता के मठ के साथ दादा लखीराम की समाधि है । कुछ दूरी पर वह डेरा है, जिसकी छत आज भी अधूरी है । ●

थाली रख लो

—आशीष उपाध्याय

एक गांव में मनसुख नाम का एक आदमी रहता था । पहले वह बहुत अमीर था, परंतु बाद में गरीब हो गया । अपने अच्छे समय में ही उसने अपनी बहन विजया का विवाह दूसरे गांव के एक अमीर घराने में कर दिया था । विजया अब भी धनी थी, पर वह मनसुख की कुछ भी सुधि नहीं लेती थी । शुरू से ही वह घमंडी स्वभाव की थी ।

एक बार की बात है ; त्योहार का समय था, पर



मनसुख के घर में खाने को कुछ भी नहीं बचा । तब उसकी पत्नी ने जिद करके, उसे विजया के पास भेजा । मनसुख बहन का स्वभाव जानता था, इसलिए वहां नहीं जाना चाहता था । पर पत्नी की जिद के आगे उसे झुकना ही पड़ा । वह बहन के घर की ओर चल दिया ।

वहां पहुंच, मनसुख ने देखा कि उसकी बहन का आलीशान घर खूब सजा-संवरा है । उसने एक दासी से भीतर कहलवाया कि मनसुख आया है । दासी ने जाकर कहा—"मालकिन, तुम्हारा भाई आया है ।" सुनते ही विजया बोली—"जा, गोशाला में बैठा दे ।"

दासी ने मनसुख को गोशाला में बैठा दिया । गोशाला में बैठा मनसुख बाहर सबको खाते-पीते देख

रहा था । पर उसे पूछने वाला कोई न था । वह सोच रहा था—'पत्नी की जिद के कारण मुझे कितना लज्जित होना पड़ रहा है ।' मन ही मन पछता रहा था ।

जब उत्सव समाप्त हुआ, तब उस दासी ने मनसुख को उदास बैठे देखा । वह अपनी मालकिन के पास गई । बोली—''मालकिन, सब खा-पीकर चले गए, पर तुमने अपने भाई को नहीं पूछा । वह अभी तक भूखे ही बैठे हैं ।''

''जा, जाकर बचा-खुचा मांड़ दे आ ।''—विजया ने कहा ।

दासी गई और थाली भर मांड़ मनसुख को दे आई । यह देख, मनसुख को अपने पर बड़ी ग्लानि



हुई । उसके मुंह से निकला—''धरती मां, तुम फट जाओ और यह थाली रख लो ।'' आश्चर्य ! तभी भूकम्प आया । धरती फट गई और थाली उसमें समा गई ।

मनसुख अपने भाग्य पर दुखी होता हुआ, अपने घर की ओर चल पड़ा । रास्ते में उसे, वेश बदलकर घूम रहे शिव-पार्वती ने देखा । उसे देख, पार्वतीजी ने भगवान शिव से कहा—''भगवन् ! यह व्यक्ति दुखी जान पड़ता है । इसका दुःख दूर कीजिए ।''

पार्वती के कहने पर भगवान शिव रूप बदलकर मनसुख के पास गए । उनके पूछने पर मनसुख ने उन्हें सब कुछ बताया । यह सुनकर भगवान शिव ने कहा—''चिंता न करो । रास्ते में तुम्हें बेल का एक पेड़ मिलेगा । उस पर से तुम जितने बेल तोड़ सको, तोड़ लेना । तुम्हारा भला हो ।''

घर पहुंचने पर उसकी पत्नी इतनी बड़ी गठरी देख, बड़ी प्रसन्न हुई । उसने कहा—''मैं न कहती थी, तुम्हारी बहन जरूर कुछ न कुछ अवश्य देगी ।'' पर मनसुख चुप रहा ।

गठरी जब खोली गई, तो उसमें से सोने के बेल निकले । उन बेलों में रत्न भरे हुए थे । यह देख, मनसुख आश्चर्य चकित रह गया । उसने मन ही मन उस अजनबी को प्रणाम किया ।

समय बदला, मनसुख फिर से धनवान हो गया । उधर उसकी बहन गरीब होने लगी । व्यापार में लगातार घाटा हुआ । हालत बहुत खराब हो गई, तब उसने सोचा—'चलूं । हो सकता है, भैया कुछ सहायता करें ।'

अपने भाई के पास आकर विजया ने रो-रोकर सब-कुछ कह सुनाया । यह सुन, मनसुख ने फिर धरती माता को पुकारा । उनसे अपनी अमानत मांगी । धरती मां ने वही मांड़ वाली थाली मनसुख को दे दी ।

मनसुख ने वह थाली अपनी बहन की ओर बढ़ा दी । यह देख, वह बहुत लज्जित हुई । उसने मनसुख से क्षमा मांगी।मनसुख को दया आ गई । उसने बहन का अपराध क्षमा कर दिया ।

मनसुख की सहायता से विजया फिर धनवान हो गई थी । परंतु अब उसमें पहले जैसा घमंड नहीं रह गया था । ●

बचपन की कहानियां

फूल की महक

वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य

प्राइमरी कक्षा तक मैं गांव के स्कूल में ही पढ़ता था। पढ़ाई-लिखाई में बहुत होशियार था। हमेशा कक्षा में प्रथम आता। सरकार की ओर से मुझे हर साल छात्र वृत्ति मिलती थी।

पांचवीं कक्षा में भी मैं प्रथम आया तथा सरकार की ओर से मुझे छात्र वृत्ति भी मिली। इस छात्रवृत्ति ने मेरे मन में घमंड का बीज बो दिया। मैं अपने आपको पता नहीं, क्या समझने लगा। जिद कर बैठा—'मैं गांव के स्कूल में नहीं पढ़ूंगा। गांव का स्कूल अच्छा नहीं है। यहां पढ़ाई अच्छी नहीं है। टीचर अच्छे नहीं हैं। मैं टाउन स्कूल जाऊंगा।'

मेरे इस हठ तथा घमंड को देखकर मेरे गांव के एक व्यक्ति बहुत दुखी थे। उनका नाम था आनन्दो बरुआ। वह हमेशा मेरे मार्ग दर्शक रहे। उन्होंने मुझे समझाते हुए कहा—'एक फूल की तरह जीना सीखो। फूल की तरह कांटों में भी खिलना सीखो। उसी तरह कोमल और मृदुभाषी बनो। अपनी महक चारों ओर बिखेरो। तुम गांव के स्कूल में नहीं पढ़ना चाहते, बेशक मत पढ़ो, लेकिन गांव के स्कूल की और यहां के अध्यापकों की बुराई मत करो। तुम यहां तक कैसे पहुंचे हो? इसी गांव के स्कूल में पढ़कर। आज तुम उसके शुक्रगुजार होने के बजाए, यह कह रहे हो कि गांव का स्कूल अच्छा नहीं है। उन विद्यार्थियों के बारे में सोचो, जो इस स्कूल में पढ़ेंगे। उनके मन में तो गांव के स्कूल के प्रति घृणा न पैदा करो।' यह सुनकर मेरी गर्दन शर्म से झुक गई।

आनन्दो बरुआ की इस बात को मैंने जीवन का आधार बनाया। मैं टाउन स्कूल अवश्य गया, क्योंकि मेरे अध्यापक भी यही चाहते थे। उन्होंने ही मेरे माता-पिता को समझाया तथा टाउन स्कूल भेजने के लिए राजी किया, लेकिन गांव के स्कूल के प्रति जो श्रद्धा आनन्दो बरुआ ने जगाई थी, वह आज भी



बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य
अध्यक्ष : साहित्य अकादमी

मेरे दिल में कायम है। उस स्कूल को, जहां मेरे भविष्य की नींव रखी गई, मैं शत्-शत् प्रणाम करता हूं।

इसी प्रकार मैंने एक फूल की तरह अपने लेखन की महक से सारे वातावरण को महकाया है। ●

राजा ने देखा

रविशंकर

बहुत समय पहले की बात है। बंगाल के एक छोटे-से कस्बे में भीष्मदेव नामक राजा का राज्य था। वह बहुत ही विवेकी तथा बुद्धिमान था। प्रजा उससे खुश थी। राजा को शिकार का बड़ा शौक था। वह शिकार पर अकेला ही जाता था। सैनिकों या मंत्री को साथ नहीं ले जाता था।

एक बार राजा शिकार करने गया, तो रास्ता भूल गया। कई दिन तक भूखा-प्यासा जंगल में भटकता रहा। उसे प्यास बहुत लगी थी। वह घोड़ा रोककर एक तालाब के किनारे उकड़ू बैठकर पानी पीने लगा। तभी उसे खनखनाती हुई-सी हंसी सुनाई दी। "कौन हो तुम?"—राजा ने शंकित होकर पूछा।

—"मैं वनदेवी की बेटी हूं।"

"तुम सामने क्यों नहीं आतीं। छिपकर क्यों बैठी हो?"—राजा ने कहा। "सामने देखो!" और राजा ने जब नजर उठाकर सामने देखा, तो हरे-हरे परिधान में एक सुंदर कन्या उसके सामने खड़ी थी। वह मंद-मंद मुसकरा रही थी। उसकी सुंदरता को देखकर राजा की आंखें चौंधिया गईं। राजा ने कहा—"फूलकुमारी, तुम! मैं राजा भीष्मदेव हूं। तुमसे विवाह कर, मैं तुम्हें अपने राज्य की पटरानी बनाना चाहता हूं।"

फूलकुमारी तुरंत राजी हो गई। दोनों ने विवाह कर लिया। शादी के चाव में कुछ दिन यूं ही निकल

गए । एक दिन राजा को शिकायत मिली— 'महाराज, हमारे राज्य पर अवश्य कोई बड़ा संकट आने वाला है । राज्य में पशु-पक्षियों की संख्या दिन-ब-दिन घटती ही जा रही है ।'

सुनकर राजा की नींद हराम हो गई । उसकी समझ में नहीं आ रहा था, राज्य के पशु-पक्षी कहां गायब हो रहे हैं ? एक दिन रात को जब राजा की नींद खुली, तो उसने देखा, रानी बिस्तर पर नहीं है । उसने उठकर इधर-उधर देखा, पर रानी कहीं दिखाई नहीं दी । रानी को खोजते-खोजते राजा बाहर आ गया।

लेकिन उसे रानी दिखाई नहीं दी । थक-हारकर जब वह अपने बिस्तर पर लौटा, तो उसने देखा कि रानी वहीं सो रही है । उसका माथा ठनका । राजमहल के बाहर आने-जाने का एक ही रास्ता था, इसीलिए वह समझ नहीं पा रहा था कि रानी कहां से बाहर गई और कब अंदर आई ? इस समय उसने चुप रहने में ही भलाई समझी । वह सो गया ।

अगले दिन सोने का बहाना किए, राजा चुपचाप आंखें मूंदे लेटा रहा । कुछ देर बाद रानी उठी । उसने राजा को हिलाकर पूछा—"सो गए क्या ?" राजा ने जानकर खर्राटे भरने शुरू कर दिए । रानी को विश्वास हो गया कि राजा गहरी नींद में सो गया है । वह चुपके से कमरे से बाहर निकल गई । राजा भी जल्दी से उठा । रानी के पीछे-पीछे हो लिया । रानी के कदम तेजी से घुड़साल की ओर बढ़ते जा रहे थे । राजा एक कोने में खड़ा होकर देखने लगा । उसके देखते-देखते खूबसूरत रानी का चेहरा अत्यंत भद्दा, कुरूप, काला हो गया । दांत लम्बे तथा बड़े हो गए । फिर उसने घोड़ों को पकड़कर, मार-मारकर खाना शुरू किया । अब उसका चेहरा और भी कुरूप हो गया था । राजा से और नहीं देखा गया । वह अपने कमरे में लौट आया और चुपचाप सो गया ।

राजा समझ गया कि रानी कोई चुड़ैल है । बिना इसकी शक्ति का अंदाजा लगाए, इसको छेड़ना ठीक नहीं । उसने गुप्त रूप से एक तांत्रिक को बुलाकर सारी बात बताई । उस तांत्रिक की मदद से राजा ने चुड़ैल को पकड़कर एक बहुत बड़े किले में कैद कर दिया । इस प्रकार बुद्धिमान राजा के राज्य में एक बार फिर अमन चैन लौट आया । •



पंडित रविशंकर
प्रसिद्ध सितारवादक

फूल बनी लड़की

गिरीश कारनाड

बच्चो ! आजकल मैं आपके लिए कर्नाटक की एक मशहूर परी कथा पर आधारित टी.वी. सीरियल बना रहा हूं । सुनो, उसकी कहानी सुनाता हूं—

एक गरीब औरत थी । उसकी दो बेटियां थीं । लोगों के घरों में काम करके वह अपना तथा बच्चों का पेट पालती थी । एक दिन छोटी लड़की ने अपनी बड़ी बहन से कहा—"हमें मां की मदद करनी चाहिए । मुझे एक जादू आता है । मैं आंगन में ध्यानमग्न होकर बैठ जाऊंगी । तुम इस घड़े का पानी मुझ पर डाल देना । उससे मैं फूलों वाला एक पेड़ बन जाऊंगी । तुम जितने चाहे फूल तोड़ लेना, लेकिन ध्यान रखना, कोई कली या पत्ता न टूटने पाए । इसके बाद तुम दोबारा इस घड़े का पानी मुझ पर डालना । मैं फिर से लड़की बन जाऊंगी ।" अब रोज वह लड़की फूलों वाला पेड़ बन जाती । दूसरी बहन फूल इकट्ठे कर उन्हें बाजार में बेच आती ।

एक दिन राजकुमार ने उन फूलों को देखा और सूंघा । वह फूलों की सुगंध से इतना प्रभावित हुआ कि उसने सेवकों से कहा—"तुरंत पता लगाओ, ये फूल आते कहां से हैं ?" सेवकों ने बहुत खोज की। एक दिन पता लग ही गया । अब राजकुमार ने अपने पिता से कहा— "मैं फूलों की माला बनाने वाली लड़की से विवाह करना चाहता हूं।" राजा की आज्ञा कौन टाल सकता था ? दोनों का विवाह हो गया । दो दिन तक राजकुमार उदास रहा । उसने अपनी पत्नी से कोई बात नहीं की । तीसरे दिन जब उसकी पत्नी ने



गिरीश कारनाड
फिल्म अभिनेता एवं
अध्यक्ष : संगीत-नाटक अकादमी

उसकी उदासी का कारण पूछा, तो राजकुमार ने कहा—"मैं इन फूलों का रहस्य जानना चाहता हूं।" जिद करने पर राजकुमारी ने उसे सारी बात बता दी । और कहा—"आज तुम फूलों से सेज सजाना ।"

राजकुमार ने वैसा ही किया । हर रोज वे सोते समय फूल तोड़कर अपने चारों ओर फैला लेते।

राजा की बहन ने देखा, उसके भाई-भाभी के कमरे से रोज सबेरे ढेरों अनेक प्रकार के मुरझाए फूल उठाकर बाहर फेंके जाते हैं । एक दिन जब राजकुमार कहीं बाहर गया हुआ था, तो राजा की बहन तथा उसकी कुछ सखियां जबरदस्ती अपनी भाभी को राजमहल से दूर ले गईं ।

लड़की ने सारी बातें विस्तार से समझा दीं । उन्होंने घड़े से पानी डालकर उसे फूलों के पेड़ के रूप में बदल दिया । मगर फूल तोड़ने की जल्दी में उन्होंने उसकी कलियां, पत्ते और टहनियां भी तोड़ दीं । इसके बाद लड़की पर पानी डाला, मगर वह केवल मांस का एक लोथड़ा बनकर रह गई ।

एक गाड़ीवान वहां से गुजर रहा था । लड़की के कराहने की आवाज सुनकर वह उसके पास गया । देखा, एक बिना-हाथ पैर की लड़की सड़क पर पड़ी है । उसने उसे उठाकर गाड़ी में रखा, फिर राजमहल के द्वार पर छोड़ आया ।

राजकुमार अपनी पत्नी के वियोग में इतना दुखी था कि वहां लेटी पत्नी की ओर उसका ध्यान नहीं गया । अचानक उसने सिसकियां सुनीं । उसने आंखें उठाकर देखा, तो भौचक्का रह गया । अपनी पत्नी को पहचान लिया । वह रो रही थी । फिर उसने सारी कहानी राजकुमार को सुनाई । कहा—"तुम उस जगह पर जाओ । टूटी हुई टहनियां तथा शाखाएं लाओ । उनको जोड़कर दोबारा इस घड़े का पानी मुझ पर डालो । मैं ठीक हो जाऊंगी ।" राजकुमार ने वैसा ही किया । लड़की के हाथ-पैर फिर से वापस आ गए ।●

एक रात की बात

(गुमान मल लोढा)



गुमानमल लोढा
प्रसिद्ध न्याय विद
एवं संसद सदस्य

मेरा बाल्यकाल जोधपुर में बीता । जब पिता की मृत्यु हुई, मैं बहुत छोटा था । मां के संरक्षण में ही पढ़ाई-लिखाई की । मुझे मां का भरपूर प्यार मिला ।

पिता की मृत्यु हो जाने के बाद मां हमारे भविष्य के विषय में कुछ अधिक ही चिंतित रहती थीं । उन दिनों अंग्रेजों का शासन था । बच्चे-बच्चे के मन में अंग्रेजों के लिए घृणा थी । जगह-जगह आजादी की लहर उठ रही थी । मैं रात्रि को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का कार्य कर बारह बजे के बाद ही घर पहुंचता था । मां मेरी इस आदत से बड़ी परेशान थीं ।

एक दिन मां नाराज हो गईं । जब मैं घर लौटा, तो मां ने दरवाजा नहीं खोला । बोलीं—"जहां से आए हो, वहीं चले जाओ । इस घर में तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं है ।" मैं एक मकान के बाहर चौपाल पर ही सो गया । रात को गश्ती पुलिस कर्मचारी ने मुझे जगाया—"कौन हो तुम ?"

"मां ने घर से निकाल दिया है, इसलिए यहां सो रहा हूं ।"—मैंने सच-सच कह दिया ।

"तुम जरूर कोई गलत काम करते हो, इसलिए तुम्हारी मां घर में रखना नहीं चाहतीं । दफा पचपन और दफा एक सौ नौ के अंदर हम तुमको गिरफ्तार करता है । तुम्हारा घर कहां है ?" मैं उसको साथ लेकर घर आ गया । दरवाजा खटखटाया, मां ने ही दरवाजा खोला । पुलिस वाला बोला—"यह तुम्हारा लड़का जरूर बदमाशों के साथ रहता है ।"

पुलिस वाले को पीछे धकेलते हुए मां ने झट से मुझे अपने पास खींच लिया । बोलीं—"कौन कहता है मेरा लड़का बदमाश है ?" अब पुलिस वाला माफी मांग रहा था ! ऐसा होता है मां का प्यार ।●

प्रस्तुत : मंजीतकौर भाटिया





आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं । ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है । नीचे इसी चित्र की नकल है । नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया । उसने कुछ गलतियां कर दीं । आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए । क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं । सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है । १० गलतियां ढूंढ़ने वाला **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं । आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए । आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित **समय— १५ मिनट ।**

कहानी लिखो : ८४

सामने प्रकाशित चित्र को देखकर एक रोचक कहानी लिखिए । उसे १० नवम्बर '९० तक सम्पादक 'नंदन', हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली—१ के पते पर भेज दीजिए । चुनी हुई कहानी को पुरस्कार मिलेगा । उसे प्रकाशित भी किया जाएगा ।

परिणाम—जनवरी '९१



चित्र पहेली : ८४

'एक दिन चिड़ियाघर में' विषय पर रंगीन चित्र बनाकर १० नवम्बर '९० तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए । चित्र के पीछे अपना नाम-पता तथा उम्र स्पष्ट शब्दों में अवश्य लिखें । चित्र पेंसिल से नहीं, चटख रंगों में बनाकर भेजें । चुना हुआ चित्र पुरस्कृत कर, प्रकाशित किया जाएगा । परिणाम—फरवरी, १९९१

मखमल के पत्ते

—प्रतिभानाथ

बहुत पुरानी बात है। पृथ्वी पर पेड़ तो थे, पर सबके सब बिना पत्तों के। किसी भी पेड़ पर पत्ते नहीं लगते थे। जंगलों में केवल पेड़ों के सूखे-सूखे तने दिखाई देते थे। जमीन पर केवल छोटी घास होती थी। न हरी-भरी झाड़ियां,न लहराती हुई बेलें।

इससे जंगल में रहने वाले जीव-जंतुओं को बड़ा कष्ट होता था। दोपहर को जब सूरज ठीक ऊपर चमकता, तो मारे गरमी के उनकी बुरी हालत हो जाती। छाया ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वे सब इधर-उधर मारे-मारे फिरते। छाया तो कहीं होती ही नहीं थी।

एक बार जंगल के सब जीव इकट्ठे होकर राजा के पास गए। बोले—"महाराज, आप हमारी सहायता कीजिए। हम वनों में रहते हैं। दिन भर धूप सताती है। कहीं छाया नहीं मिलती। हमारी समस्या हल कीजिए।"

जानवरों की बात सुनकर राजा सोचने लगा। थोड़ी देर में उसने अपने मंत्री नागौन को बुलाया। उससे कहा—"हमारे वस्त्रालय में जाकर हरी मखमल का थान उठा लाओ।"

नागौन थान उठा लाया। अब राजा ने कहा "एक तेज धार वाली कैंची और एक बड़ी बोतल गोंद की भी ले लो। ये चीजें लेकर जंगल में चले जाओ। मखमल के टुकड़े काट-काटकर, गोंद लगाओ। फिर उन्हें पेड़ों की डालियों पर चिपकाते जाओ। ये टुकड़े पत्ते कहलाएंगे। इनसे जानवरों को छाया मिलेगी। वे गरमी से बच जाएंगे।"

नागौन ने उत्तर दिया—"जी महाराज, जो आज्ञा।" मन ही मन वह बहुत खुश था कि चलो रोज दरबार में हाजिरी देने से जान बची। जंगल में तो अपना ही राज होगा। दिन भर सोएंगे। खूब मजे उड़ाएंगे।

नागौन राजा की बताई चीजें लेकर उसी दिन जंगल में चला गया। वहां एक गुफा में रहने लगा। रोज सवेरे राजमहल से उसके लिए खाना पहुंच जाता। वह खा-पीकर सो रहता। न तो उसने पत्ते काटे, न चिपकाए। इसी तरह कई दिन बीत गए। जंगल के जानवर अब भी छाया की खोज में परेशान थे।

वे कई बार नागौन की गुफा में गए। उसे जगाने की भरपूर कोशिश की। कभी उसे गुदगुदाते, तो कभी गुरति। कई बार मधुमक्खियों ने नागौन को काटा भी, पर वह था कि गहरी नींद में सोया रहता था। अंत में दुखी होकर जानवर फिर राजा के पास गए। बोले—



''महाराज, मंत्री जी ने तो पेड़ों पर एक भी पत्ता नहीं लगाया । जल्दी ही कुछ कीजिए, नहीं तो हम गरमी के मारे मर जाएंगे ।''

यह सुन, राजा का मुंह गुस्से से लाल हो गया । वह उसी समय एक बड़े-से काले बादल पर सवार होकर जंगल की ओर चल दिया ।

राजा जंगल में जा उतरा । उसने देखा, नागौन एक बड़ी चट्टान की ओट में गहरी नींद में सो रहा है । किसी भी पेड़ पर एक भी पत्ता नहीं था । वे पहले जैसे थे । गुस्से में भरा हुआ, राजा नागौन के पास जा खड़ा हुआ । चिल्लाकर बोला—''नागौन, यह सब क्या हो रहा है ? उठो और अपना काम शुरू करो ।'' पर नागौन सोता रहा । राजा ने उसे पकड़कर जोर से हिलाया।

पर नागौन सोता ही रहा । अब तो राजा सचमुच बहुत ही नाराज हो गया । उसने जोर से ताली बजाई । ताली बजते ही आंधी चलने लगी । बहुत से पेड़ जड़ से उखड़ गए । बड़े-बड़े पत्थर अपनी जगह से हिल गए और लुढ़ककर जा पड़े । नागौन शायद फिर भी सोता रहता, पर उसकी दाढ़ी झटके से आसमान में चली गई ।

जैसे ही दाढ़ी उड़ी, नागौन हड़बड़ाकर उठ बैठा । अपने सामने राजा को देखा, तो उछलकर खड़ा हो गया । प्रणाम करके बोला —''महाराज, इस आंधी-तूफान में आपने यहां आने का कष्ट क्यों किया ? मुझे बुलवा लेते ।''

राजा ने गरजकर कहा—''हमें इसलिए आना पड़ा कि तुमने अपना काम नहीं किया । जवाब दो, अभी तक पेड़ों पर पत्ते क्यों नहीं चिपकाए गए ? काम में इतनी देर क्यों हो रही है ?''

राजा को नाराज देखा, तो नागौन डर गया । हाथ जोड़कर बोला—''महाराज, काम में देर हुई इसके लिए सेवक को क्षमा करें । मैं इतने दिन से यही सोच रहा था कि पत्ते किस शक्ल के बनाऊं । बस, इसी सोच-विचार में इतना समय लग गया ।''

राजा ने कहा—''हम तुम्हें तीन दिन का समय



और देते हैं । यदि इन तीन दिनों में तुम जंगल के सभी पेड़ों पर पत्ते न लगा पाए, तो तुम्हें कड़ी सजा दी जाएगी ।'' इतना कहकर राजा फिर काले बादल पर सवार हुआ और वहां से चल दिया । अब नागौन फौरन काम में जुट गया । उसके हाथों में जैसे बिजली-सी भर गई थी । फर्राटे से पत्ते काटता और गोंद से चिपकाता जाता । तीसरे दिन दोपहर के समय तक जंगल के सभी पेड़ हरे-हरे पत्तों से लद गए थे । पर एक गड़बड़ हो गई । जल्दी-जल्दी में नागौन सब पत्ते एक शक्ल के नहीं काट पाया । कोई पत्ता गोल था, तो कोई लम्बा और कोई नाव के आकार का । कोई पतला था, कोई चौड़ा तो किसी के पांच कोने थे । यही कारण है कि आज पेड़ों के पत्ते अलग-अलग आकार के होते हैं ।

तीन दिन बीत गए । राजा के आने का समय हो रहा था । नागौन का काम समाप्त हो चुका था, परंतु कुछ मखमल अब भी बाकी थी । उसने जल्दी-जल्दी बाकी मखमल की कतरनें काट लीं । जमीन पर गोंद फैलाकर उस पर कतरनें बिखेर दीं । इनसे झाड़ियां बन गईं और हरी-भरी लहराती हुई बेलें उग आईं ।

राजा आया । नागौन का काम देखकर बहुत खुश हुआ । उसे इनाम दिया । जंगल के जानवर भी बहुत खुश थे । उनकी मुसीबत दूर हो गई थी ।●



राम पंडित

— वैजयंती सावंत टोणपे

राम पंडित बेचैन थे। सामने बैठे लोग दावत उड़ा रहे थे, पर उनसे किसी ने अब तक खाने को नहीं कहा था। 'देखो तो कैसे लोग हैं!'—राम पंडित मन ही मन सोच रहे थे।

राम पंडित का ऐसा सोचना स्वाभाविक था, क्योंकि उन दिनों लोग शुभ अवसर पर पंडितों को बुलाकर बढ़िया भोजन कराना और भरपूर दान-दक्षिणा देना अपना सौभाग्य मानते थे। पर न जाने पाटिल के मन में क्या था? वह अपनी बेटी के ब्याह की धूमधाम में लगा था। उसे राम पंडित का जरा भी ख्याल नहीं था।

आखिर राम पंडित उठ खड़े हुए। उन्होंने मन ही मन कहा—'ऐसे बात बनने वाली नहीं। मुझे ही कुछ करना होगा।' उन्होंने पत्नी लक्ष्मी की ओर देखा। वह बच्चों के साथ एक तरफ चुपचाप बैठी थी। उन्होंने इशारे से लक्ष्मी को अपने पास बुलाया। उसके कान में कुछ कहा और फिर वहां से बाहर आ गए।

पाटिल की बेटी की विदाई हो रही थी। लड़की डोली में जा बैठी, पर दूल्हे का घोड़ा गायब था। अब क्या हो? सब तरफ शोर मच गया। कई लोगों ने घोड़े को इधर-उधर ढूंढ़ा, पर कुछ पता नहीं चला। यह तो जैसे अपशकुन था। दूल्हे का घोड़ा तो मिलना ही चाहिए था। पाटिल बहुत परेशान था।

तभी लक्ष्मी पाटिल के पास पहुंची। उससे कहा—"मैं जानती हूं कि आप क्यों परेशान हैं? मेरे पति पहुंचे हुए ज्योतिषी हैं। आप उनसे कहिए। वह घोड़े का पता लगाने में आपकी सहायता कर सकते हैं।"

पाटिल ने कहा—"बहन, उन्हें जल्दी से बुला दीजिए। घोड़ा मिल जाए, तो मेरी लाज बचे।"

थोड़ी देर बाद राम पंडित प्रकट हुए। गम्भीर चेहरा, हाथ में पोथी-पत्रा लिए। पाटिल ने उनसे घोड़ा न मिलने की बात बताई। राम पंडित ने कहा—"आप चिंता न करें।" फिर पंचांग देखकर गणना करने लगे। सब लोग चुप बैठे थे। काफी देर तक गणना करने और अंगुलियों पर हिसाब लगाने के बाद राम पंडित ने कहा—"यहां से आधी कोस उत्तर में एक खंडहर है। वहीं दूल्हे का घोड़ा मिलेगा। जाइए, ले आइए।"

सचमुच घोड़ा वहीं बंधा मिला। पाटिल की जान में जान आई। उसने राम पंडित के पैर पकड़ लिए।

कहा—''पंडित जी, आपका अहसान कभी न भूलूंगा। आपने आज मेरी प्रतिष्ठा बचा ली। आपका ज्योतिष ज्ञान चमत्कारिक है।'' और उसने राम पंडित को सोना, कपड़े, बहुत-सा पकवान देकर विदा किया। रास्ते में लक्ष्मी ने राम पंडित से हंसते हुए कहा—''यह भी खूब रही। पहले घोड़ा छिपाया, फिर उसका पता बताया।''

राम पंडित ने कहा—''और बदले में कितना धन पाया। चलो, अब कुछ समय आराम से कटेगा।'' सचमुच राम पंडित के दिन चैन से बीतने लगे। अब उनके परिवार को किसी चीज की कमी नहीं थी।

राम पंडित के ज्योतिष ज्ञान की चर्चा राजा ने सुनी। उन्होंने राम पंडित को तुरंत बुला भेजा। ''हम तुम्हें राजदरबार का प्रमुख पंडित नियुक्त करते हैं।''—राजा ने कहा।

''महाराज, हमें इस अवसर पर इनके ज्ञान की छोटी-सी परीक्षा भी लेनी चाहिए। आशा है, यह मेरी बात का बुरा नहीं मानेंगे।''—यह कहते हुए राजपुरोहित ने राम पंडित की ओर देखा।

''जी, हां। जब चाहे मुझे परख लें।''— राम पंडित ने कह दिया। उनके इस तरह उत्तर देने से राजा और भी प्रभावित हुए।

राम पंडित को एक बड़ा भवन रहने के लिए दे दिया गया। अब तो और भी ठाठ हो गए थे। लेकिन कुछ दिन बाद परीक्षा की घड़ी आ ही गई। रानी का कीमती हार चोरी हो गया। राजा ने राम पंडित से हार का पता लगाने को कहा।

राम पंडित उलझन में फंस गए। अब यह कैसे कहते कि उन्हें ज्योतिष का जरा भी ज्ञान नहीं। यह सब तो झूठमूठ का नाटक था। इसी तरह तीन दिन बीत गए। राजा नाराज हो गए। उनके आदेश पर राम पंडित को एक कमरे में बंद कर दिया गया। उन्हें राजा का आदेश सुना दिया गया—'कल सुबह तक हार का पता नहीं लगाया, तो दंड मिलेगा।'

राम पंडित बुरी तरह घबरा गए। वह बैठे-बैठे अपने को कोसने लगे—''अरे, यह सब मेरी जिह्वा का दोष है। जिह्वा, तेरे कारण ही यह दिन देखना पड़ा। न मैं कहता, न यह होता। अब तो सजा जरूर मिलेगी।'' राम पंडित ने कई बार यह बात दोहराई।

तभी कमरे का दरवाजा खुला। महारानी की नौकरानी जिह्वा अंदर आकर उनके पैरों पर गिर पड़ी। वह रोती हुई बोली—''पंडित जी, आप तो जादू जानते हैं। आपको कैसे पता कि महारानी का हार मैंने चुराया है, क्योंकि अभी-अभी आपने कई बार मेरा नाम लिया। मैं अपना अपराध स्वीकार करती हूं।''

राम पंडित समझ गए कि बात क्या हुई है। यह संयोग ही था, जब उन्होंने अपनी जिह्वा को कोसा, तो रानी की नौकरानी बाहर ही खड़ी थी। उसका नाम जिह्वा था। इस बार तो संयोग से ही प्राण बचे थे। उन्होंने कहा—''जिह्वा, तुमने मेरे आगे अपनी गलती मान ली, तो समझो तुम्हारे प्राण बच गए। अब तुम जाकर हार को चुपचाप बाहर वाले पीपल की जड़ में



गाड़ दो। और किसी से भी इस बारे में कुछ न कहना।"

इसके बाद राम पंडित ने राजा को बताया कि हार पीपल के नीचे गड़ा हुआ है। खोदने से हार वहां मिल गया। अब तो सारे राज्य में राम पंडित की प्रशंसा होने लगी। राजा ने उन्हें भरपूर इनाम दिया।

लेकिन राजपुरोहित अभी संतुष्ट नहीं था। उसने कहा—"महाराज, एक छोटी-सी परीक्षा और ली जानी चाहिए।" फिर राजा के कान में कुछ कह दिया। कुछ देर बाद एक मटका लाया गया। उसका मुंह कपड़े से बंधा हुआ था। राजा ने कहा—"बताओ ज्ञानी पंडित, इस मटके में क्या है?"

राम पंडित के देवता कूच कर गए। उन्हें मौत सामने नजर आने लगी। वह मन ही मन कहने लगे— 'अब कौन बचाएगा मुझे?' उन्हें बचपन के दिन याद आ गए। पिता जी कितना कहा करते थे कि पढ़-लिख ले, नहीं तो पछताएगा। पर राम पंडित ने उनकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया, अनपढ़ ही रह गए। अब पछताने से भला क्या हो सकता था।

राम पंडित बंद घड़े के पास ही जमीन पर बैठ गए। फिर बोले—"बोल मेंढक, अब क्या करेगा?" राम पंडित के पिता उनकी उछलकूद देखकर उन्हें मेंढक कहकर पुकारा करते थे। इस समय पुरानी बातें याद करते-करते वही नाम उनके मुंह से निकल गया था।

राम पंडित के इतना कहते ही राजा चकित भाव से बोले—"वाह, राम पंडित, तुमने तो चमत्कार कर दिया। सचमुच इस घड़े में मेंढक बंद है। जरा बताओ तो सही, तुमने यह कैसे जान लिया?"

"तुम जीत गए राम पंडित।"—राजपुरोहित ने हारे हुए स्वर में कहा। कपड़ा हटाते ही एक मेंढक घड़े से बाहर कूदकर भाग गया।

राम पंडित आसमान की ओर देखकर भगवान को धन्यवाद दे रहे थे। उसी ने हर बार की तरह इस बार भी उनके प्राण बचाए थे। ●

फिर गए दिन

—उपासना जोशी

घने जंगलों के बीच एक गांव था। गांव के पास बहती थी कल-कल करती हुई एक नदी। नदी का पाट बहुत चौड़ा नहीं था, किंतु नदी थी बहुत गहरी। आने-जाने के लिए गांव वालों ने लकड़ी का एक पुल बना लिया था। इसी गांव में एक युवक रहता था। नाम था निरांग। वह स्वभाव से बहुत फक्कड़ था। घर में अकेला रहता था। मां-बाप बहुत पहले चल बसे थे। विवाह उसका हुआ नहीं था। नदी से मछलियां पकड़ना और उन्हें बड़े गांव की हाट में बेचना, यही उसकी आजीविका का साधन था। मगर कुछ दिनों बाद वह इस काम से भी ऊब गया।

उसके मन में गांव के मुखिया जैसा बनने की चाह थी। वह देखता था कि गांव के मुखिया के पास एक बड़ा घर है। सवारी के लिए घोड़ा और कई खेत हैं। वह भी ऐसे ठाठ से रहना चाहता था, मगर कड़ी मेहनत के बाद भी वह पैसा जमा नहीं कर पाया था। सोचा करता था, कैसे बना जाए धनवान?

एक रात की बात है, निरांग अपनी झोंपड़ी के आगे चारपाई पर लेटा था। बाहर पेड़ों से छन-छनकर चांदनी धरती पर फैलने लगी थी। निरांग आज अपनी गरीबी से बहुत ही दुखी था। वह सोचने लगा—'क्या मेरे भाग्य में सचमुच ही सुख-चैन नहीं है? मैंने सुना था, हमारा देवता सबकी मुराद पूरी करता है। मैं तो रोज ही देवता को जाकर फूल चढ़ाता हूं। उसके चरण छूता हूं। मगर देवता ने आज तक मुझ पर कृपा नहीं की।' यह सोचते-सोचते उसे झपकी आ गई। तभी उसने देखा, देवता उसके सामने खड़ा हुआ कह रहा है—'निरांग, तुम परेशान न हो। अब तुम्हारे दिन फिरने वाले हैं। ऐसा करो, सुबह उठकर उत्तर दिशा की ओर बढ़ते चले जाना। फिर जो भी चीज तुम्हें सबसे पहले जमीन पर पड़ी हुई मिले, उसे उठा लेना।' इसके बाद निरांग की नींद गहराती गई। जब उसकी आंखें खुलीं, तो ऊषा की लाली फूटने लगी



थी । वह उठकर कुछ करता, तभी उसे सपने की याद आ गई । वह सोचने लगा—'क्या पता, देवता ने मेरी प्रार्थना सुन ही ली हो, इसे आजमाकर देखना चाहिए ।' बस, उसने जूते पहने और किसी से कुछ कहे बिना गांव छोड़कर उत्तर दिशा की ओर चल पड़ा ।

वह नदी के पास पहुंचा । तब तक दिन का उजाला पूरी तरह फैल चुका था । वह नदी पार करने के लिए पुल के पास आया । तभी वहां उसने सूत की लम्बी डोरी पड़ी देखी । सपना उसे याद था, इसलिए उसने सूत की डोरी उठा ली । सोचने लगा—'मिला भी, तो क्या ! भला यह सूत की डोरी मेरा क्या उद्धार करेगी ?' उसने हाथ की अंगुली में डोरी लपेट ली और आगे बढ़ चला । दूर तक झाड़ियों का लम्बा सिलसिला था । अचानक एक टिड्डा उड़कर आया और निरांग के कंधे पर बैठ गया । उसने टिड्डे को उड़ा दिया, मगर टिड्डा उड़कर फिर उसके सिर पर जा बैठा । अब तो निरांग गुस्से से भर उठा । उसने टिड्डे की टांग को डोरी से बांध, उसे हवा में उछाल दिया । टिड्डा बेचारा उड़ने लगा, मगर वह उड़कर जाता कहां ? निरांग बहुत खुश था । वह डोरी हिलाता हुआ आगे बढ़ रहा था । अब यह उसके लिए खेल बन गया था ।

इस तरह वह डोरी हाथ में पकड़े आगे बढ़ता गया । कुछ दूर चलने के बाद उसे एक बैलगाड़ी दिखी । वह उसी रास्ते पर आ रही थी, जिस रास्ते से निरांग जा रहा था । बैलगाड़ी में स्त्री, पुरुष और उनका बच्चा बैठे हुए थे । बच्चे ने उड़ते हुए टिड्डे को देखा । उसने सोचा-'यह कोई खिलौने बेचने वाला है ।' बच्चा मचल गया । मां से बोला—"मैं तो यही खिलौना लूंगा ।" मां ने निरांग को पास बुलाकर कहा—"भैया, यह बच्चा जिद कर रहा है । तुम डोरी और उससे बंधा हुआ टिड्डा इसे दे दो ।"

निरांग बच्चे की उत्सुकता देख रहा था । उसने डोरी बच्चे को थमा दी । बोला—"ले, उड़ते हुए घोड़े का आनंद तू भी ले ।" इतना कहकर वह जाने लगा, तभी महिला ने उसे दो बड़े-बड़े संतरे देते हुए कहा—"लो, ये संतरे तुम खा लेना ।"

संतरे लेकर निरांग आगे बढ़ चला । अब सूरज कई बांस ऊपर चढ़ चुका था । धूप में तेजी आ गई थी । चलते-चलते निरांग काफी दूर निकल आया । तभी उसने पेड़ के नीचे एक औरत को लेटे हुए देखा । उसके पास दो पुरुष भी बैठे थे । एक बड़ी-सी गठरी थी उनके पास । निरांग ने उनके पास जाकर पूछा—"क्या बात है ? यह लेटी क्यों है ?"

उनमें से एक ने कहा—"हम अपना माल बेचने जा रहे हैं । कपड़े के व्यापारी हैं हम । यह मेरी पत्नी है । हमारे साथ आई है । अचानक चक्कर आने शुरू हो गए । धूप की गरमी से शायद ऐसा हुआ है ।"

निरांग ने दोनों संतरे उन्हें दे दिए । बोला—"संतरों का रस निचोड़कर इसके मुंह में डाल दो, अभी ठीक हो जाएगी ।"

हुआ भी ऐसा ही। संतरों का रस पीने के बाद वह उठ बैठी। उसके शरीर में ताजगी आ गई। दोनों आदमी बहुत खुश हुए। उन्होंने गठरी में से दो थान निरांग को देते हुए कहा—"तुमने हमारी सहायता की, उसके बदले यह भेंट स्वीकार करो।"

अब निरांग को लगा, उसका सपना रंग ला रहा है। देखते-देखते एक छोटी-सी डोरी के कारण उसे कपड़े के दो थान मिल गए थे। आगे क्या होगा, यही सोचता हुआ वह थान लेकर आगे चल दिया।

आगे एक पहाड़ी थी। उसने देखा, पहाड़ी से दो घुड़सवार बड़ी तेजी से नीचे उतर रहे हैं। अचानक उनमें से एक घोड़े का पैर फिसला। वह ठोकर खाकर धम्म से नीचे बैठ गया। शायद घोड़े के पैर में मोच आ गई थी। अब वह उठकर चलने लायक नहीं रह गया था। घुड़सवार परेशान थे। उन्हें शायद जाने की जल्दी थी। उन्होंने निरांग को अपने पास बुलाकर कहा—"तुम चाहो, तो कपड़े के एक थान के बदले हम तुमको अपना घोड़ा दे सकते हैं।" यह सुनकर निरांग बहुत ही खुश हुआ। उसे यह आशा कहां थी कि एक थान के बदले इतना खूबसूरत घोड़ा मिल जाएगा। उसने सहर्ष उनकी बात मान ली। उस घोड़े को वहीं छोड़, एक ही घोड़े पर सवार हो, वे वहां से चले गए।

निरांग को जंगल की जड़ी-बूटियों का पता था। वह जड़ी-बूटियां ले आया। उन्हें पत्थर पर पीसकर घोड़े के पैर पर लगाया। दवाई का असर हुआ। एक दो घंटे में घोड़ा उठकर खड़ा हो गया। निरांग ने एक बार फिर उसके पैर में दवाई लगाई, ऊपर से पट्टी भी बांध दी। इसके बाद वह घोड़े की लगाम पकड़कर चलने लगा। उसे आशा थी कि घोड़ा थोड़ी देर में चलने लायक हो जाएगा।

शाम ढलने में अभी देर थी। वह घोड़े को लेकर एक गांव में आया। वह चलते-चलते थक गया था। गांव के बाहर एक सुंदर घर बना था। घर के बाहर एक बूढ़े दम्पति हाथ में सामान लिए कहीं जाने को तैयार थे। अब तक घोड़ा भी लगभग ठीक हो गया था।

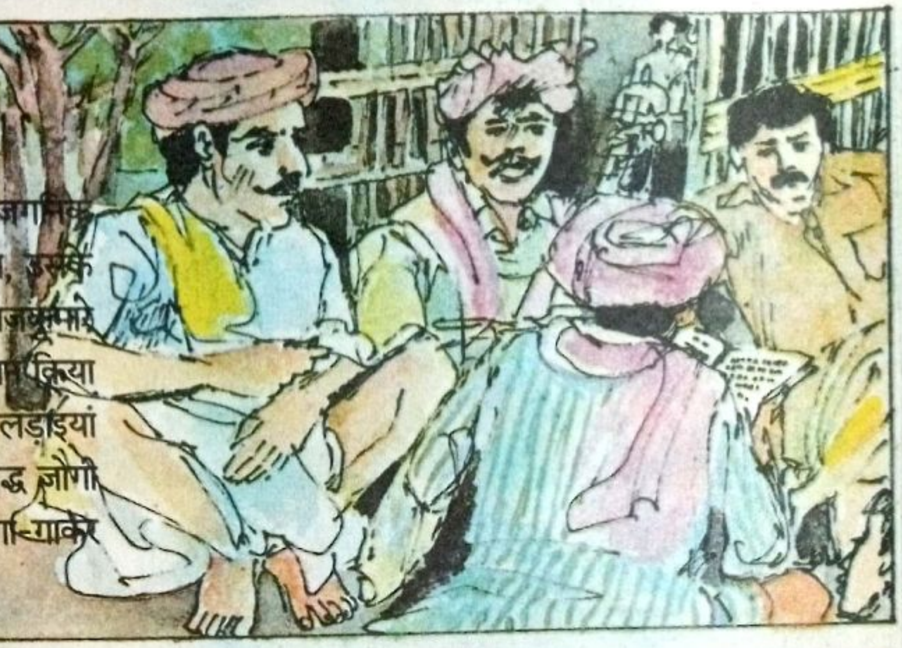
निरांग को देख, उन दोनों के चेहरों पर मुसकान तैर आई। बूढ़े ने कहा—"भैया, तुम समय पर आ गए। हमें तीर्थ यात्रा पर जाना है। जाने का मुहूर्त हो रहा है। हम किसी सवारी के इंतजार में देर से यहां खड़े, यह सोच रहे थे कि यात्रा पर कैसे जाएंगे? हो सके, तो तुम अपना घोड़ा हमें दे दो। बदले में हमारे खेत और घर अपने पास रख लो। हम तो लम्बी यात्रा पर जा रहे हैं। क्या पता लौटें भी या नहीं?"

"आप घोड़ा ले जाइए। जब तक यात्रा से लौटेंगे, मैं आपके खेतों की देखभाल करूंगा।"—यह कहकर निरांग ने उन्हें घोड़ा दे दिया।

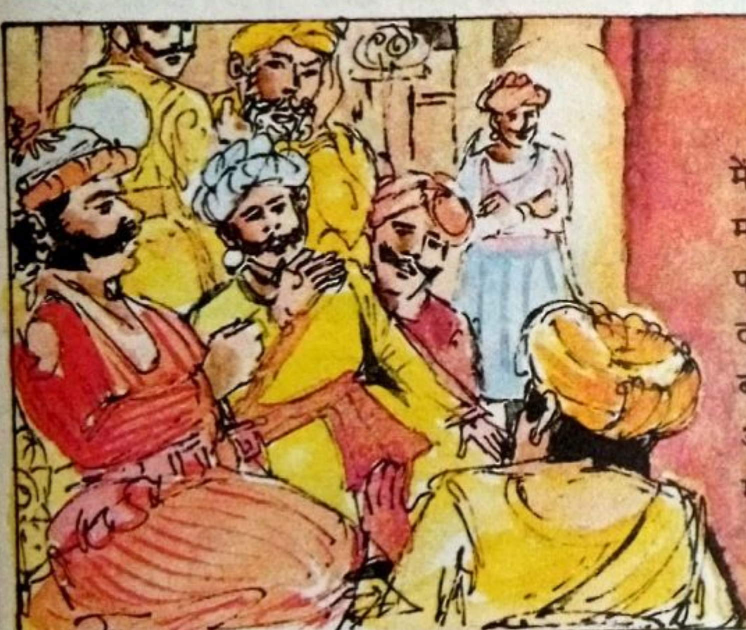
अब निरांग उस घर और खेतों का मालिक था। रात फिर घिर आई। पिछली रात की तरह निरांग खाट पर पड़ा-पड़ा सोच रहा था—'देवता ने मुझे वह सब कुछ दे दिया, जो मैं चाहता था। अब कल से इन खेतों में कड़ी मेहनत करूंगा। बूढ़े दम्पत्ति के लौटने तक एक घोड़ा और खरीद लूंगा।' वह मन ही मन देवता को धन्यवाद देने लगा। फिर उसकी आंखों में नींद तैर आई। आने वाले कल की कल्पना में डूबा-डूबा वह गहरी नींद सो गया।●



आल्हा



आल्हा प्रसिद्ध लोक महाकाव्य है। इसे जगनिक नामक लोक कवि ने लिखा था। इसमें आल्हा, उसके छोटे भाई ऊदल, चचेरे भाई मलखान और राजकुमार ब्रह्मा की वीरता का बड़े रोमांचक ढंग से बखान किया गया है। कहते हैं, आल्हा-ऊदल ने बावन लड़ाइयां लड़ीं। उनके पास उड़न घोड़े थे, और थे सिद्ध जोगी गुरु अमरा। आल्हा काव्य को आज भी गा-गाकर सुनाया जाता है।



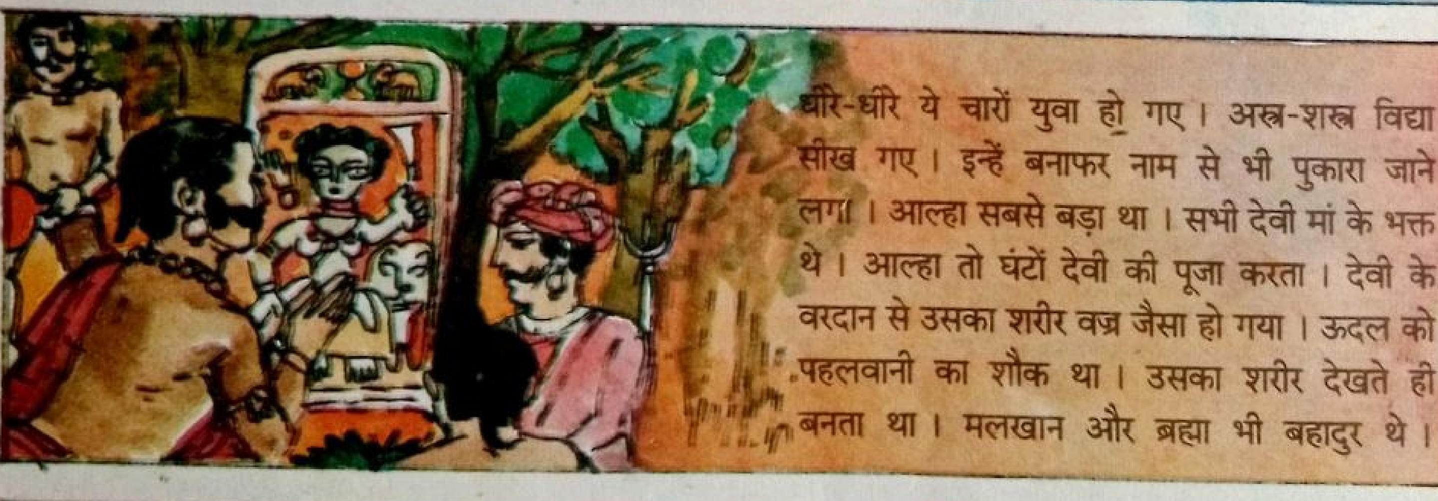
चंदेरी में परमाल नाम के एक राजा थे। उन्हें दहेज में महोबे का राज्य मिला। रानी का नाम था मल्हना। मल्हना का भाई था माहिल। वह सदैव अपने जीजा परमाल को नीचा दिखाने की ताक में रहता था। दरबार में दो बहादुर सरदार थे जस्सराज और बच्छराज। मल्हना की बहन दिवला से जस्सराज का और तिलका से बच्छराज का विवाह हुआ। मंत्री माहिल भी उनसे कुढ़ता था।

रानी दिवला के पास नौलखा हार था। माहिल चाहता था, महोबे का राज्य नष्ट हो जाए। एक दिन उसने गढ़मांडो के राजकुमार करिंगाराय के पास जाकर उसके कान भरे—"इतना कीमती और सुंदर हार तो आपके पास होना चाहिए।" सुनकर करिंगाराय को लालच आ गया। उसने हार छीनने का निश्चय कर लिया।

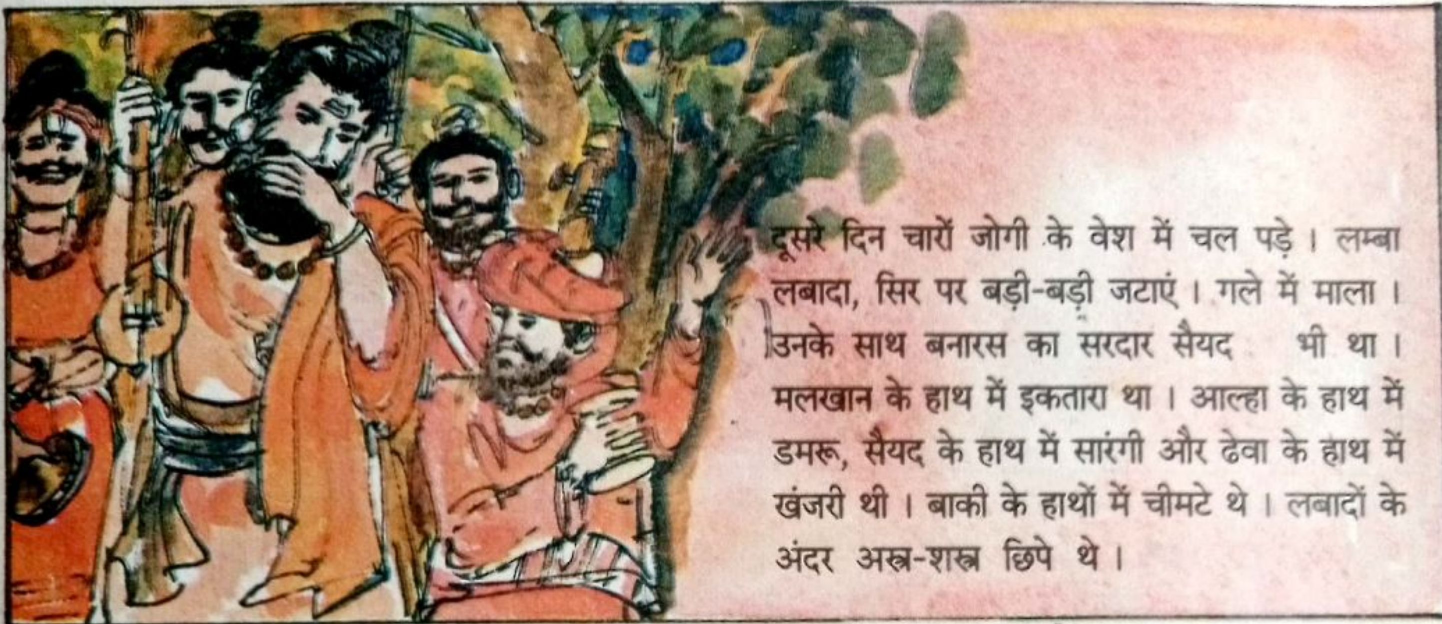


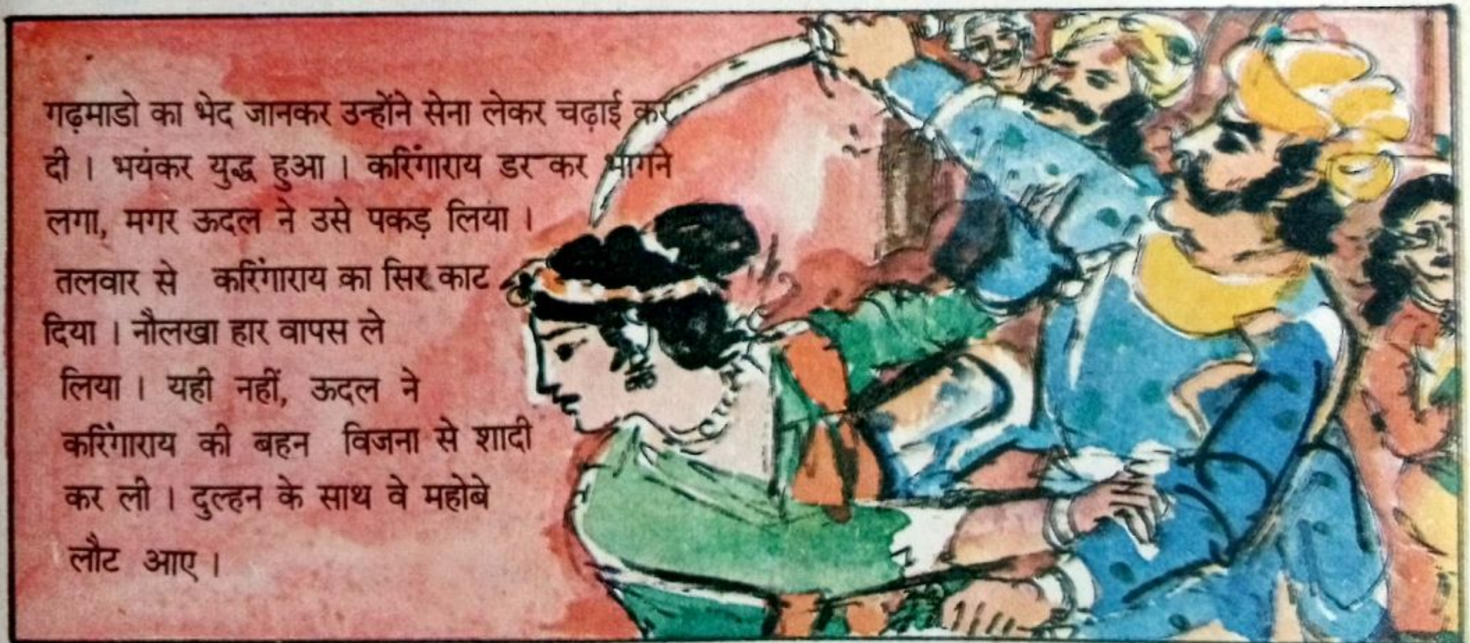

करिंगाराय ने परमाल के पास संदेश भेजा—'या तो हार दे दो, वर्ना युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।' मगर जस्सराज के हाथों उसे मुंह की खानी पड़ी। एक रात करिंगाराय ने धोखे से हमला कर दिया। महल में सब सो रहे थे। करिंगाराय ने रानी से नौलखा हार छीन लिया। इस लड़ाई में जस्सराज और बच्छराज ने खूब वीरता दिखाई। मगर दोनों मारे गए। जीत का डंका बजाता, करिंगाराय वापस चला गया।

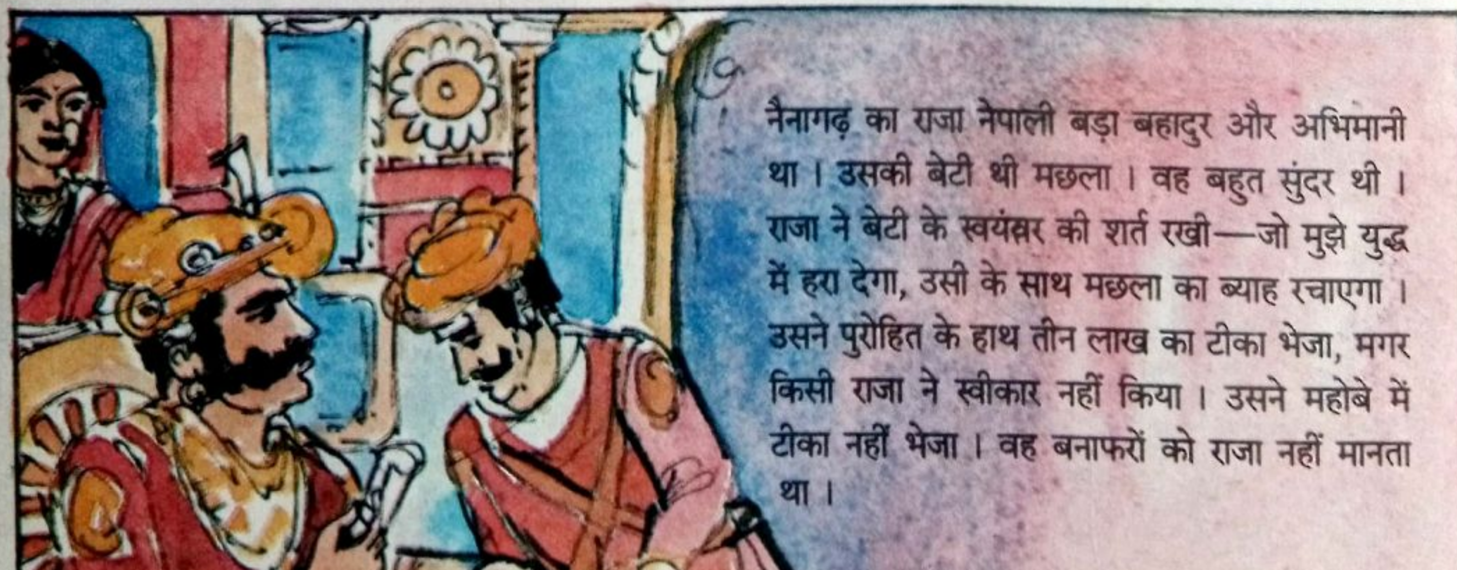

आल्हा-ऊदल जस्सराज के पुत्र थे। बच्छराज के पुत्र का नाम था मलखान और राजा परमाल का पुत्र था ब्रह्मा। ये सभी छोटे थे। रानी मल्हना इन तीनों को अपने बेटे ब्रह्मा की तरह प्यार करती थी। उन्हें एक साथ बैठाकर अपने हाथ से खाना खिलाती।


धीरे-धीरे ये चारों युवा हो गए। अस्त्र-शस्त्र विद्या सीख गए। इन्हें बनाफर नाम से भी पुकारा जाने लगा। आल्हा सबसे बड़ा था। सभी देवी मां के भक्त थे। आल्हा तो घंटों देवी की पूजा करता। देवी के वरदान से उसका शरीर वज्र जैसा हो गया। ऊदल को पहलवानी का शौक था। उसका शरीर देखते ही बनता था। मलखान और ब्रह्मा भी बहादुर थे।


माहिल था चुगलखोर और एक दूसरे को भिड़ाने वाला। एक दिन उसने आल्हा-ऊदल को बता दिया कि उनके पिता का हत्यारा कौन है। बस दोनों भाई गुस्से में भर उठे। आल्हा ने कहा—"हमें वेश बदलकर पहले गढ़मांडो के रास्तों की जानकारी लेनी चाहिए। तभी आक्रमण करना ठीक रहेगा।"


दूसरे दिन चारों जोगी के वेश में चल पड़े । लम्बा लबादा, सिर पर बड़ी-बड़ी जटाएं । गले में माला । उनके साथ बनारस का सरदार सैयद भी था । मलखान के हाथ में इकतारा था । आल्हा के हाथ में डमरू, सैयद के हाथ में सारंगी और ढेवा के हाथ में खंजरी थी । बाकी के हाथों में चीमटे थे । लबादों के अंदर अस्त्र-शस्त्र छिपे थे ।

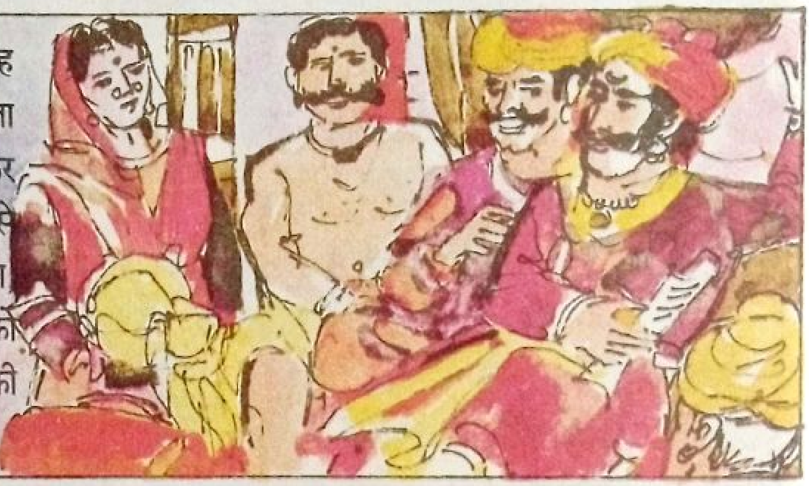

गढ़माडो का भेद जानकर उन्होंने सेना लेकर चढ़ाई कर दी । भयंकर युद्ध हुआ । करिंगाराय डर कर भागने लगा, मगर ऊदल ने उसे पकड़ लिया । तलवार से करिंगाराय का सिर काट दिया । नौलखा हार वापस ले लिया । यही नहीं, ऊदल ने करिंगाराय की बहन विजना से शादी कर ली । दुल्हन के साथ वे महोबे लौट आए ।


नैनागढ़ का राजा नेपाली बड़ा बहादुर और अभिमानी था । उसकी बेटी थी मछला । वह बहुत सुंदर थी । राजा ने बेटी के स्वयंवर की शर्त रखी—जो मुझे युद्ध में हरा देगा, उसी के साथ मछला का ब्याह रचाएगा । उसने पुरोहित के हाथ तीन लाख का टीका भेजा, मगर किसी राजा ने स्वीकार नहीं किया । उसने महोबे में टीका नहीं भेजा । वह बनाफरों को राजा नहीं मानता था ।



नैनागढ़ की राजकुमारी मछला ने आल्हा की वीरता के बारे में सुना था। वह आल्हा से विवाह करना चाहती थी। उसने एक चिट्ठी आल्हा को लिखी। उसे हीरामन तोते की गर्दन में बांध, तोते से कहा—"जा, महोबे की ओर उड़ जा! आल्हा को मेरा संदेश देकर आ।" तोता उड़ चला महोबे की ओर।

तोते द्वारा लाई चिट्ठी पढ़, आल्हा ने तय किया कि वह मछला से विवाह अवश्य करेगा। परमाल को पता चला, तो घबराया। तुरंत रानी मल्हना से जाकर कहा—"अपने बेटों को रोको। नैनागढ़ के राजा से लड़ना, मौत को बुलाना है।" रानी ने तुरंत आल्हा, ऊदल, मलखान और ब्रह्मा को बुला भेजा। चारों को पास बैठाकर समझाया—"बेटा, मछला से विवाह की जिद छोड़ दो।"

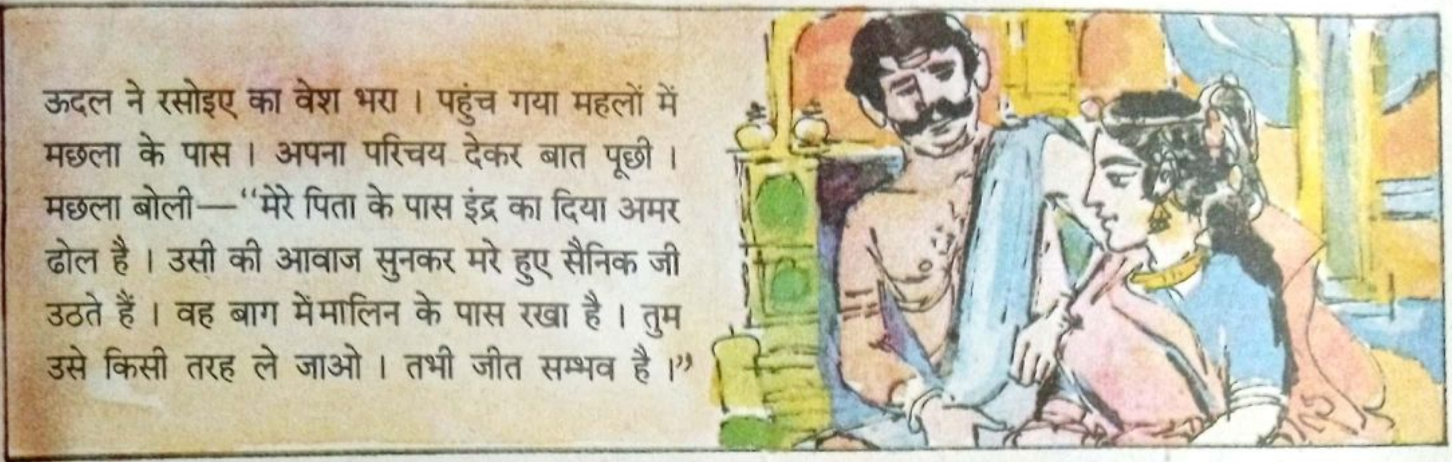


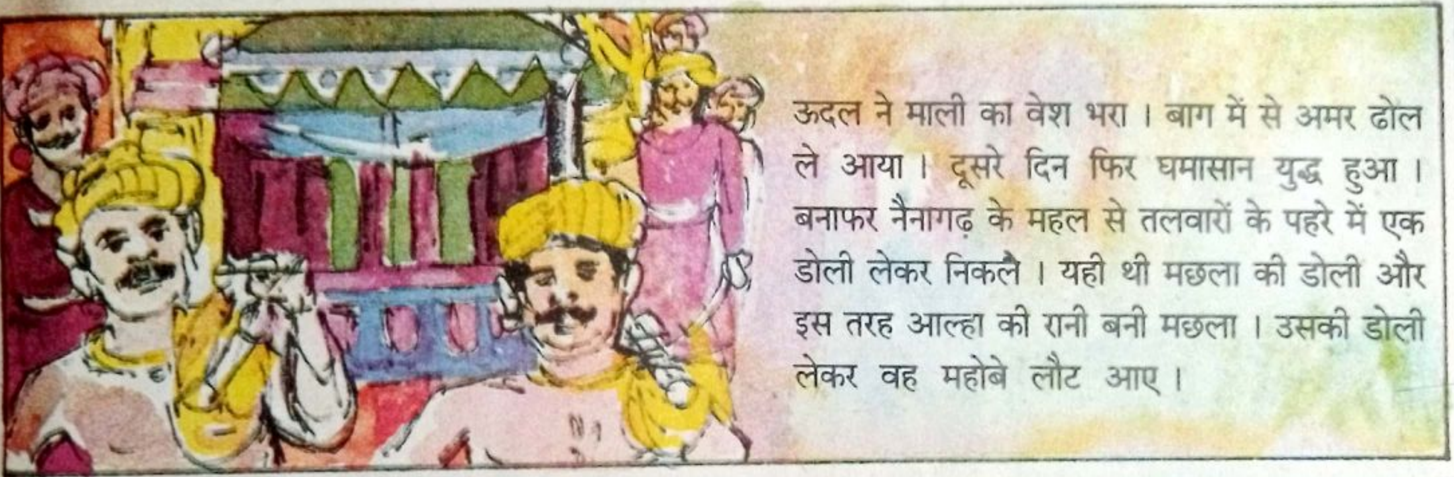


आल्हा-ऊदल फौज लेकर चल पड़े, जा पहुंचे नैनागढ़ के पास और तान दिए तम्बू। ऊदल घोड़े पर चढ़कर पहुंचा दरबार में, जाकर ललकारा—'महोबे वाले आ गए हैं मछला से विवाह रचाने।' इतना सुनकर राजा ने सरदारों से कहा—"पकड़ लो इसे।" वे दौड़े; मगर ऊदल की तलवार वे झेल न सके। उन्हें घायल कर, ऊदल अपने शिविर में जा पहुंचा।

राजा गुस्से से भर उठा। उसने अपने दोनों बेटों जोगा-भोगा को युद्ध करने भेजा। घमासान युद्ध होने लगा। शाम हुई तो ऊदल ने आल्हा से कहा—"भइया, यह क्या जादू है? नैनागढ़ के मरे हुए सैनिक शाम होते ही जीवित कैसे हो गए?" आल्हा बोला—"वेश बदलकर महलों में जाओ। यह राज मछला ही बताएगी।"

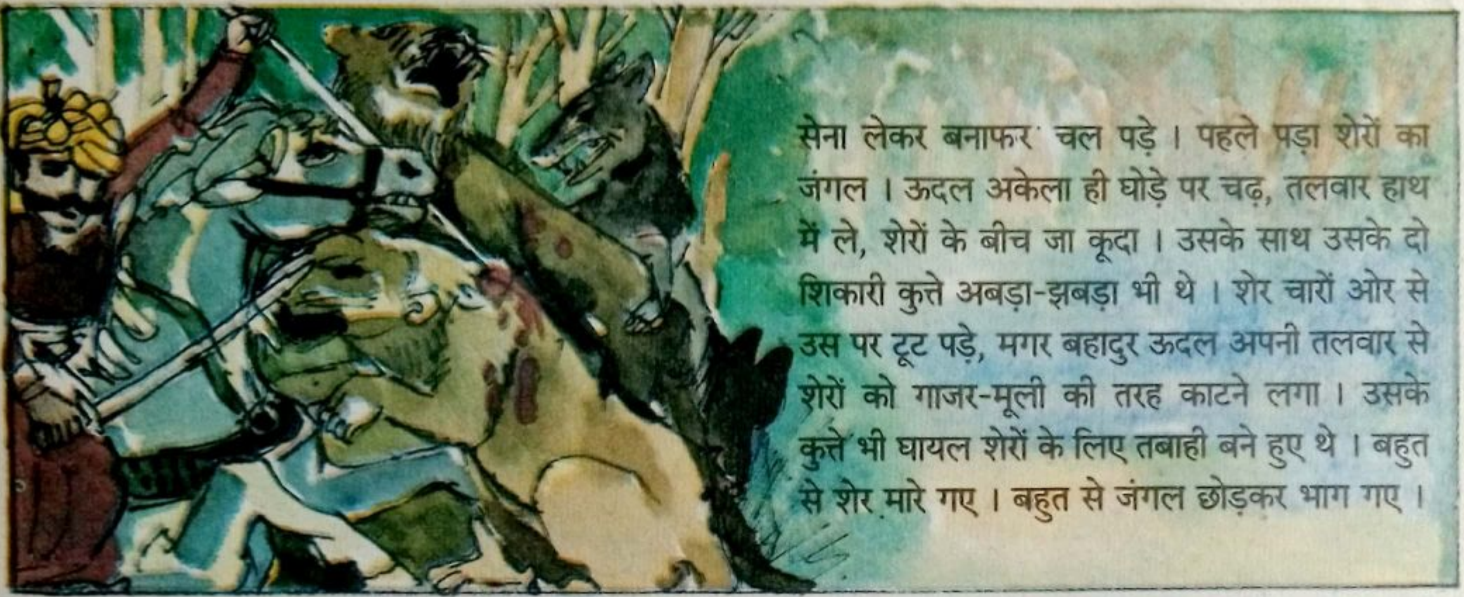


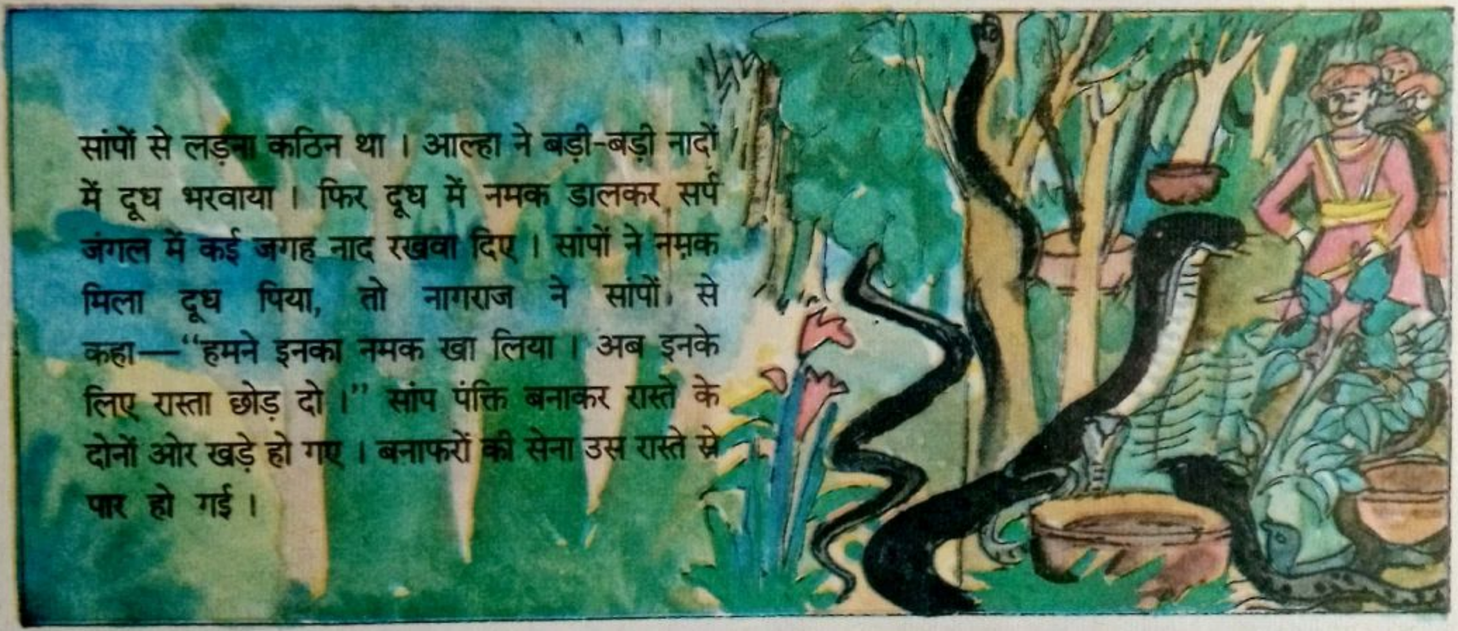

ऊदल ने रसोइए का वेश भरा । पहुंच गया महलों में मछला के पास । अपना परिचय देकर बात पूछी । मछला बोली—"मेरे पिता के पास इंद्र का दिया अमर ढोल है । उसी की आवाज सुनकर मरे हुए सैनिक जी उठते हैं । वह बाग में मालिन के पास रखा है । तुम उसे किसी तरह ले जाओ । तभी जीत सम्भव है ।"


ऊदल ने माली का वेश भरा । बाग में से अमर ढोल ले आया । दूसरे दिन फिर घमासान युद्ध हुआ । बनाफर नैनागढ़ के महल से तलवारों के पहरे में एक डोली लेकर निकले । यही थी मछला की डोली और इस तरह आल्हा की रानी बनी मछला । उसकी डोली लेकर वह महोबे लौट आए ।


फिर हुआ मलखान का विवाह । कांसू का राजा था गजराज । उसकी बेटी का नाम था गजमोतन । राजधानी के बाहर तीन भयानक जंगल थे । एक जंगल में बिच्छू थे, ऐसे कि डंक मारे तो पत्थर भी जल जाए । दूसरे जंगल में भयंकर सांपों का बास था । तीसरे जंगल में रहते थे शेर । राजा ने दरबार में घोषणा की थी—जो इन तीनों जंगलों को पार करेगा, उसी के साथ गजमोतन का ब्याह रचाऊंगा ।


राजा के संदेश के साथ पुरोहित टीका लेकर बहुत-से राजाओं के पास गया, मगर किसी ने इस शर्त को स्वीकार नहीं किया । वह हताश बना जंगल में एक पेड़ के नीचे बैठा था । तभी शिकार खेलता हुआ ऊदल वहां आया । पुरोहित से पूरी बात जानकर वह उसे महोबे में ले आया । तय हुआ—गजमोतन से मलखान का विवाह रचाएंगे ।


सेना लेकर बनाफर चल पड़े। पहले पड़ा शेरों का जंगल। ऊदल अकेला ही घोड़े पर चढ़, तलवार हाथ में ले, शेरों के बीच जा कूदा। उसके साथ उसके दो शिकारी कुत्ते अबड़ा-झबड़ा भी थे। शेर चारों ओर से उस पर टूट पड़े, मगर बहादुर ऊदल अपनी तलवार से शेरों को गाजर-मूली की तरह काटने लगा। उसके कुत्ते भी घायल शेरों के लिए तबाही बने हुए थे। बहुत से शेर मारे गए। बहुत से जंगल छोड़कर भाग गए।


सांपों से लड़ना कठिन था। आल्हा ने बड़ी-बड़ी नादों में दूध भरवाया। फिर दूध में नमक डालकर सर्प जंगल में कई जगह नाद रखवा दिए। सांपों ने नमक मिला दूध पिया, तो नागराज ने सांपों से कहा—"हमने इनका नमक खा लिया। अब इनके लिए रास्ता छोड़ दो।" सांप पंक्ति बनाकर रास्ते के दोनों ओर खड़े हो गए। बनाफरों की सेना उस रास्ते से पार हो गई।


इसके बाद वे पहुंचे बिच्छू वन में। बिच्छू सेना को देख क्रोध में भर उठे। वे जिस घोड़े या हाथी के डंक मारते, वह तुरंत ही गिरकर ढेर हो जाता। कोई चारा न देख, आल्हा ने अपने तांत्रिक गुरु अमरा को याद किया। वह झोली लेकर आए। झोली से भभूत हाथ में ली। मंत्र पढ़ा और उसे ऊपर उछाल दिया। भभूत जमीन पर गिरी, तो धुएं का बादल बनकर चारों ओर फैल गई। उसे सूंघते ही सारे बिच्छू उस जंगल से भाग गए।


इसके बाद बनाफरों को ग्यारह लड़ाइयां और लड़नी पड़ीं। अंत में रानी ने राजा को समझाया—'महोबे के इन शूरवीरों से जीतना कठिन है। भलाई इसी में है कि गजमोतन का विवाह मलखान के साथ करके इन्हें सम्बंधी बना लो। ऐसे रिश्तेदार कहां मिलेंगे।' राजा को बात माननी पड़ी कल के शत्रु अब सम्बंधी बन गए।

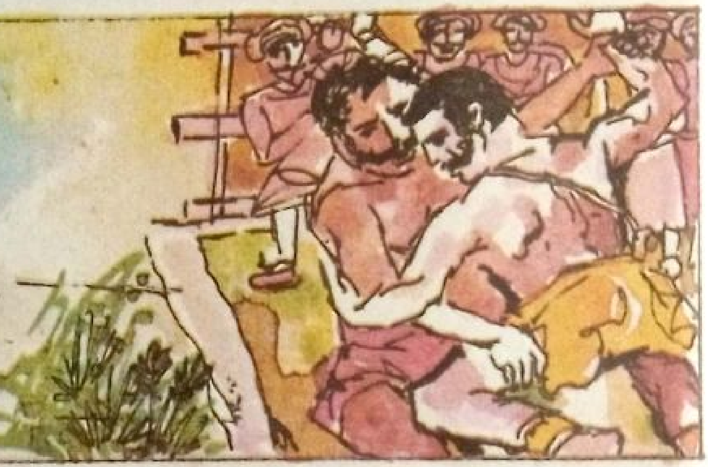

एक बार हरिद्वार में कुंभ का मेला लगा। ये चारों भाई भी मेले में आए। इसी बीच माहिल ने गढ़बांदो के राजकुमार मोतियाराय को भड़का दिया-'अब महोबे में बनाफर नहीं है। तुम उनकी बहन सुरजा को ले आओ।'


मोतियाराय तुरंत सेना सजाकर गया। सावन का महीना था। सुरजा नौलखा बाग में सखियों के साथ झूला झूल रही थी। मोतियाराय ने बाग को चारों ओर से घेर लिया। बाग के रक्षक सैनिकों ने मोतियाराय के सैनिकों से युद्ध किया। मगर कुछ न कर सके। मोतियाराय, सुरजा को ले गया।


चारों भाई लौटकर आए, तो बहन के अपहरण की बात सुन आग-बबूला हो गए। नटों का वेश भरकर गढ़ बांदो जा पहुंचे। बौना चोर भी साथ था। रात को महल की ऊदल और बोना चोर दीवार पर चढ़ वहां पहुंचे, जहां सुरजा थी। वे उसे ले जाने लगे, मगर हाथी पर बैठा, मोतियाराय आ गया। ऊदल से लड़ने के लिए खूनी हाथी बुलाया। ऊदल ने उसका सिर काट दिया। मोतियाराय ने क्षमा मांग ली।



बहुत से युद्ध लड़ने और जीतने के बाद बनाफरों की वीरता की ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी थी। मलखान और ब्रह्मा तथा उनके साथी ढेवा और सैयद जब शत्रु पर धावा बोलते, तो शत्रु भागता नजर आता था। उनके घोड़े हवा में उड़ते, तो सब चकित रह जाते— सर्र सर्र कर उड़ा बछेरा
जैसे कला कबूतर खाए



एक बार सिरसागढ़ की लड़ाई में वहां के राजा ने देवी के वरदान से बनाफ़रों की पूरी सेना को पत्थर बना दिया। बचे सिर्फ आल्हा-ऊदल। मलखान महोबे में था। उसे खबर मिली। वह नंगे पैरों ही गुरु अमरा के पास भागा। गुरु को ले, पहुंचा सिरसागढ़ में। गुरु ने जादू तोड़ दिया। सिरसागढ़ के राजा ने बनाफरों को द्वंद्व युद्ध के लिए ललकारा। ऊदल उससे भिड़ गया। चारों ओर घुमाकर जमीन पर दे मारा।



इनका अंतिम युद्ध दिल्ली के राजा पृथ्वीराज के साथ हुआ। पृथ्वीराज की विशाल सेना से पार पाना कठिन था। फिर भी बनाफर उससे जा भिड़े। बनाफर पृथ्वीराज की बेटी बेला को ब्रह्मा के साथ विवाह कर, ले तो आए— मगर उनके इतने घाव आए थे कि आल्हा को छोड़कर सारे मारे गए। मगर उनकी वीरता की कीर्ति आज तक फैली हुई है।

अपने भाइयों के मारे जाने पर आल्हा के मन में विरक्ति जाग उठी। वह पर्वत पर तपस्या करने चला गया। कहते हैं, आल्हा आज भी अमर है।



हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ४० रुपए
दो वर्ष : ७५ रुपए

वर्ष २७, अंक १, नई दिल्ली; नवम्बर '९०, आश्विन-कार्तिक, शक सं. १९१२

बेसहारा बच्चों की मदद

ओटावा । उसके पास धन था, कारें थीं, सारी सुख-सुविधाएं थीं, वह एक महीने में करोड़ों डालर कमाता था । फिर एक दिन उसने सोचा 'इन करोड़ों डालर से मुझे क्या मिला ? इस पैसे का तब तक क्या लाभ जब तक कि इससे दूसरों की भलाई न हुई ।' बस, उसने अपनी नब्बे प्रतिशत सम्पत्ति का एक ट्रस्ट बना दिया । यह सम्पत्ति अरबों रुपए की है । यह ट्रस्ट बेसहारा बच्चों, बूढ़ों और विकलांगों की मदद करेगा ।

यह व्यक्ति भारतीय मूल के हैं । पहले इनका नाम सुखवंत सिंह था । अब बदलकर स्टीफन सैंडर रख लिया है । वह कनाडा में रहते हैं । भारत भी आते हैं । भारत से उन्हें बहुत प्यार है । वह कहते हैं कि इस देश के लोगों में दया और मानवीयता कूट-कूटकर भरी है । विदेशों में रहने वाले अमीर भारतीयों से उन्हें शिकायत है । वह कहते हैं—"जिस देश ने तुम्हें जन्म दिया, क्या चंद्र पैसों से तुम उसकी मदद नहीं कर सकते ?"

सैंडर ने बहुत गरीबी के दिन देखे हैं । वह चालीस वर्षों से बाहर रह रहे हैं, फिर भी अपने देश के निर्धन लोगों से उन्हें सहानुभूति है । अपने ट्रस्ट का एक दफ़्तर उन्होंने दिल्ली में भी खोला है । सैंडर कंगाल से करोड़पति बने थे, अब करोड़पति होकर सब कुछ त्याग चुके हैं । उनके जीवन की गाथा परीकथा जैसी रोमांचक है ।

अखबार बंद

न्यूयार्क । १८९ वर्ष पुराना अखबार न्यूयार्क पोस्ट बंद हो गया । अखबार करोड़ों रुपए के घाटे में चल रहा था, इसलिए उसे बंद करना पड़ा ।

पहले जैसी यात्रा

मद्रास । जैसी नावें पंद्रहवीं सदी में बनती थीं, वैसी नाव के जरिए थल सेना, वायु सेना और नौ सेना की टुकड़ी सागर अभियान पर निकली हैं । बारह हजार कि.मी. की यह यात्रा काफी जोखिम भरी है । पंद्रहवीं सदी में भी वर्षा के दौरान ऐसी समुद्री यात्राएं काफी मुश्किल मानी जाती थीं ।

शत वर्षीय

तोक्यो । जापान में सौ वर्ष आयु के लोगों की संख्या बढ़ रही है । इस वक्त वहां साढ़े तीन हजार लोग सौ वर्ष से अधिक आयु के हैं ।

दो करोड़ पेड़

नई दिल्ली । इस वर्ष रेल मंत्रालय रेलवे की भूमि पर दो करोड़ से अधिक पौधे लगाएगा । पिछले वर्ष इस भूमि पर दो करोड़ सात लाख पौधे लगाए गए थे ।

हाथियों की एकता

मद्रास । एक नन्हे हाथी की गाड़ी से कटकर मृत्यु हो गई । देखते ही देखते रेलवे लाइन पर हाथियों के झुंड इकट्ठे हो गए । वे बहुत देर तक वहां बैठे शोक मनाते रहे ।

कार चली

म्युनिख । एक कार में ताला लगा था । चालक भी उसमें नहीं था । लेकिन कार अचानक चल पड़ी । रास्ते में दो कारों से टकराई, एक दीवार को तोड़ा । पता चला कि कार के दो तारों को एक कीड़े ने आपस में जोड़ दिया था, जिससे कार चल पड़ी ।

सबसे बड़े बुद्ध

हांगकांग । यहां भगवान बुद्ध की विशाल प्रतिमा स्थापित की गई है । यह विश्व की सबसे बड़ी प्रतिमा है । इसे एक पहाड़ पर स्थापित किया गया है । इसका वजन ढाई सौ टन और ऊंचाई चौंतीस मीटर है । प्रतिमा को पहाड़ पर पहुंचाने के लिए २०२ टुकड़ों में बांटा गया था ।

ओलम्पिक खेल

अटलांटा । १९९६ के ओलम्पिक खेल यहीं होंगे । इससे पहले यूनान ने कहा था कि ये खेल यूनान में होने चाहिएं । यह वर्ष ओलम्पिक खेलों की दोबारा शुरुआत का शताब्दी वर्ष होगा । चूंकि इन खेलों की शुरुआत यूनान मे हुई थी, इसलिए शताब्दी मनाने का अधिकार भी उसे ही मिलना चाहिए । लेकिन अब ये खेल अमरीका के अटलांटा नगर में होंगे । वहां अभी से इन खेलों की तैयारियां शुरू हो गई हैं ।

पहिए नहीं पंजे

वाशिंगटन । अमरीका में एक ऐसा वाहन तैयार किया गया है, जिसमें पहिए के स्थान पर पंजे और टांगें लगी हैं । यह वाहन घने जंगलों में काम करेगा । जंगलों में इसके चलने-फिरने से मिट्टी और पौधों को नुकसान नहीं पहुंचेगा ।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें ।

छिपकर खाना चोरी करने के समान है। —महर्षि वेद व्यास

बालक के अधिकार

संयुक्त राष्ट्र संघ का शिखर सम्मेलन इन दिनों हुआ। सत्तर से अधिक देशों के नेता जमा हुए। राजनीति की उलझन सुलझाने नहीं, बल्कि बच्चों के बारे में कुछ सोचने के लिए। बड़ों ने जो बना दिया, बालक उसी में जीता है। बालक के भी कुछ अधिकार क्यों न हों ? विश्व सम्मेलन ने इस पर जोर दिया—बच्चों के प्रति सरकारें अपनी जिम्मेदारी उठाएं।

इन्हीं दिनों भारत में आरक्षण को लेकर आंदोलन चला। कई बच्चे, अनेक किशोर और युवकों ने आग लगा ली। कुछ मर गए, कुछ अस्पतालों में हैं। आत्मदाह की खबरों से आंखों में आंसू भर-भर आए। पर सरकार के रवैये से निराशा हुई। हर कोई पूछता रहा— "सरकार बच्चों की ओर से क्यों आंख मूंदे है ?"

सबसे धनी महिला

लंदन। ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ दुनिया की सबसे धनी महिला हैं। महारानी को ब्रिटिश सरकार की तरफ से २४ करोड़ रुपए का सालाना खर्च मिलता है। महारानी की निजी आमदनी भी करोड़ों में है। यह आय उन्हें अपनी जमीन-जायदाद आदि से प्राप्त होती है।

डाइनोसोर का अंडा

क्रीवलैंड। वैज्ञानिक ने उस चीज को छुआ और वह सिर पकड़कर बैठ गया। उसके साथी दौड़े आए। ये सभी वैज्ञानिक डाइनोसोर के अवशेषों को खोज रहे थे। यहां इन्हें साढ़े चौदह करोड़ वर्ष पुराना डाइनोसोर का अंडा मिला। वैज्ञानिक सोच रहे हैं कि क्या इस अंडे से डाइनोसोर जैसा जीव फिर से विकसित किया जा सकता है।

अनाथों के नाथ

अमृतसर। पंजाब में आतंकवादी हिंसा के शिकार पंद्रह बच्चों को एस. ओ. एस. ग्राम ने गोद लिया है। इनमें सबसे छोटा बच्चा अमनदीप दो वर्ष का और सबसे बड़ा प्रवीन आठ वर्ष का है।

आइसक्रीम दिन

वाशिंगटन। अमरीका में लोग आइसक्रीम बहुत चाव से खाते हैं। वहां 'आइसक्रीम दिन' मनाया जाता है। उस दिन आइसक्रीम से तरह-तरह की मूर्तियां, इमारतें आदि बनाई जाती हैं। इस बार आइसक्रीम से बनी गोर्बाचोव की प्रतिमा बहुत सराही गई।

कठोर नियम

तोक्यो। पंद्रह वर्ष की एक लड़की स्कूल एक सेकिंड देर से पहुंची। स्कूल के फाटक बंद हुए और लड़की उन फाटकों के बीच में दबकर मर गई। अखबारों ने जापान के विद्यालयों के कठोर नियमों की तीखी आलोचना की है। जापान में कई विद्यालय तो ऐसे हैं, जहां दो विद्यार्थियों को आपस में बातचीत करने के लिए भी प्रधानाचार्य से आज्ञा लेनी पड़ती है।

खर्राटों का इलाज

पेरिस। फ्रांस के एक डाक्टर ने खर्राटों का इलाज खोजा है। डाक्टर ईत्स विक्टर गले की चिकित्सा कार्बन-डाइ-आक्साइड से करते हैं। इससे अस्सी प्रतिशत तक खर्राटे ठीक हो जाते हैं।



नई दिल्ली। श्री नरेश मोहन 'इंडियन न्यूज पेपर सोसाइटी' के अध्यक्ष चुने गए। वह हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह के कार्यकारी अध्यक्ष हैं। 'नंदन' में हमेशा उन्होंने रुचि दिखाई है। अखबार उद्योग में उन जैसे सूझ-बूझ वाले कम हैं। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह हिन्दुस्तान टाइम्स संस्था का सम्मान है।

कनाडा में राजकपूर

टोरंटो। यहां विश्व फिल्म उत्सव में राजकपूर की प्रतिमा स्थापित की गई है। यह कांसे की बनी है। इसे प्रसिद्ध मूर्तिकार मधुभाई पटेल ने तैयार किया है। प्रतिमा को कनाडा ले जाने और वहां स्थापित करने का खर्चा पाकिस्तानी फिल्म उद्योग ने उठाया है। कनाडा में इस तरह सम्मानित होने वाले स्वर्गीय राजकपूर पहले भारतीय हैं।

क्यों पढ़ें

पेरिस। सेकेंड्री और प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों में पुस्तकों के प्रति दिलचस्पी कम हो रही है। वे कोर्स की किताबों के अलावा, कुछ पढ़ना नहीं चाहते। विशेषज्ञों का कहना है कि इसके लिए फ्रांस की दोषपूर्ण शिक्षा नीति जिम्मेदार है। वहां छोटे-छोटे बच्चों को मोटी-मोटी किताबें पढ़नी पड़ती हैं। इसीलिए वे उनसे ऊब जाते हैं।

भारतीय काजू

त्रिवेंद्रम। भारत में केरल सबसे अधिक काजू उत्पादन करता है। दुनिया के बाजार में जितना काजू बिकता है, उसमें से पचास प्रतिशत भारत से जाता है। यह वृक्ष मूलतः ब्राजील का है।

दादा जी का कुत्ता

न्यूयार्क। जो बूढ़े लोग कुत्ता पालते हैं, वे अधिक स्वस्थ रहते हैं। पालतू पशु की देख-रेख से तनाव में कमी आती है। अकेलापन महसूस नहीं होता।

कछुओं के लिए

मानागुआ। यहां आजकल सैनिक आदमियों की नहीं, कछुओं के अंडों की रखवाली कर रहे हैं। चोकोसेंट तट पर कछुए अंडे देते हैं। इन्हें लोग चुरा ले जाते हैं।

घोड़ों के सवार

मास्को। सोवियत संघ के बारह व्यक्ति घोड़ों पर सवार होकर विश्व की यात्रा करेंगे। ये यूरोप, एशिया, अमरीका और अफ्रीका से गुजरेंगे। यह अभियान १९९३ में वहीं समाप्त होगा, जहां से यह शुरू हुआ था।

सौर ऊर्जा से विमान

कैलीफोर्निया। यहां पहली बार सौर ऊर्जा से विमान उड़ाया गया। यह विमान तेरह कि.मी. उड़ा। विमान में सौर बैटरी लगी है जिससे इंजन को ऊर्जा मिलती है।

बिल्ली-तोता-बंदर

मैलबोर्न। लोग दंग रह जाते हैं पीटर के घर को देखकर। बिल्ली, तोता और बंदर इस घर में इकट्ठे रहते हैं। एक साथ खाते-पीते और खेलते हैं। ये तीनों एक-दूसरे को खुश रखने की कोशिश करते हैं। बिल्ली, बंदर और तोते की दोस्ती देखने लोग दूर-दूर से आते हैं।

'हीरों का हार' अंग्रेजी में

बच्चों-किशोरों की पुस्तकों की 'विश्व सम्मान सूची' में अभी तक भारत से केवल एक पुस्तक आई है—'हीरों का हार।' इसके लेखक हैं 'नंदन' के सम्पादक श्री जयप्रकाश भारती। पुस्तक हिन्दी में है। हाल ही में यह पुस्तक अंग्रेजी में दो भागों में छापी गई है। अंग्रेजी में नाम है—दी नेकलेस आफ डायमंड्स! प्रकाशक हैं—पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली – ५। पुस्तक में छोटी-छोटी रोचक कथाएं हैं।

कैमरे की अनोखी आंखें

स्टाकहोम। लेनर्ट निलसन स्वीडन के मशहूर फोटोग्राफर हैं। उनकी दिलचस्पी ऐसे विषयों में है, जिसकी तरफ दूसरों की नजर कम जाती है। हम सब जानते हैं कि मधुमक्खी फूलों का रस चूसती है। लेकिन रस फूलों से कैसे होकर मधुमक्खी के मुंह में पहुंचता है, निलसन ने इसकी तसवीरें खींची हैं। इन तसवीरों को खींचने में उन्हें रात-दिन वर्षों परिश्रम करना पड़ा।

शिक्षा सम्मेलन

जिनेवा। यहां अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता पर एक सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में माना गया कि निरक्षरता दूर करने के लिए दस वर्ष तक कठोर परिश्रम करना होगा। सबसे पहले स्कूल छोड़कर जाने वाले बच्चों को स्कूल में वापस लाना होगा। लड़के-लड़कियों के बीच भेदभाव मिटाकर उन्हें शिक्षा का महत्व समझाना होगा।

सबसे पुराना

येरुशलम। इस्राइल में खुदाई के दौरान आठ हजार वर्ष पुराना कुआं मिला है। यह दुनिया का सबसे पुराना कुआं माना जा रहा है। कुएं के आसपास प्रागैतिहासिक काल के मनुष्य के इस्तेमाल की दूसरी चीजें भी मिली हैं।

नन्हे समाचार

□ भारतीय वायु सेना ने लद्दाख के नुन कुन शिखर पर बेहोश पड़े एक जर्मन पर्वतारोही को बचाकर निकाल लिया।

□ भारत ने 'आकाश' मिसाइल का सफलतापूर्वक परीक्षण कर लिया है।

□ पश्चिम जर्मनी में अश्व प्रदर्शनी हुई। उसमें तीन बौने घोड़े आए। उनकी ऊंचाई कुत्तों जितनी है।

□ हिरन के एक छौने की मां मर गई। एक गड़रिया उसे अपने साथ ले आया। उसे बकरी का दूध पिलाकर पाल रहा है।

□ विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सभी विमान यात्राओं में धूम्रपान पर पाबंदी लगाने की मांग उठाई है।

□ जिम कार्बेट पार्क देश का पहला राष्ट्रीय उद्यान है। उसे १९३५ में स्थापित किया गया था।

□ दुधवा राष्ट्रीय उद्यान में गैंडों की बस्ती बसाई जा रही है। लेकिन नेपाल से आकर जंगली हाथी वहां खूब तोड़-फोड़ मचाते हैं। शायद वे कह रहे हैं— यहां गैंडे नहीं, हम रहेंगे।

□ कोचीन शिपयार्ड में देश का प्रथम तेलवाहक जहाज 'मोतीलाल नेहरू' बनाया गया है।

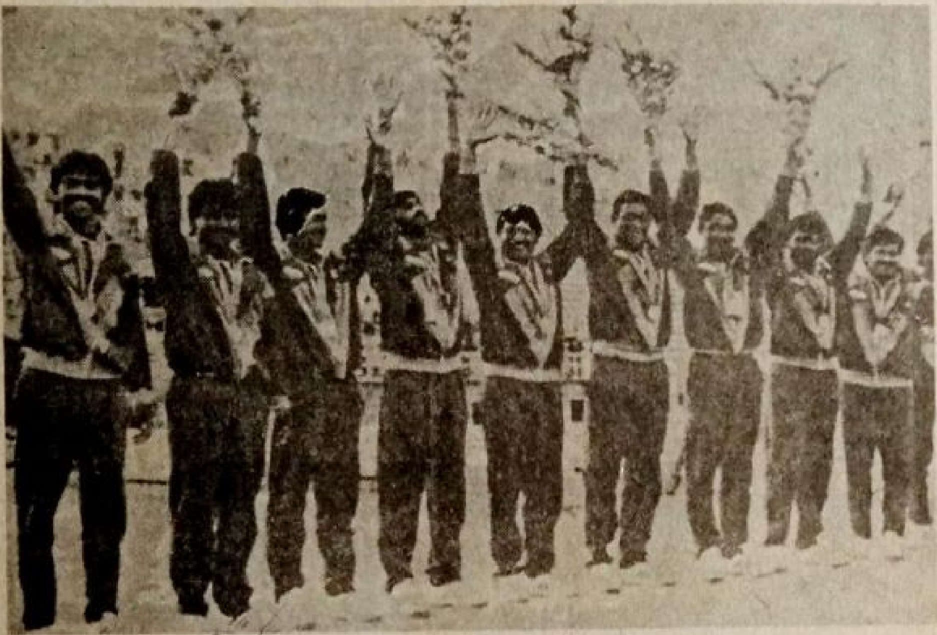
□ आस्ट्रेलिया के एक शहर में प्रेत का स्मारक बनाया जा रहा है। उसमें शीशे और बिजली से विचित्र प्रभाव पैदा किया जाएगा।

□ विदेशों में एक्यूपंक्चर से कुत्ते-बिल्लियों का भी इलाज किया जाने लगा है।

□ पेरिस की एक सड़क पर ११५ फीट ऊंचा सन् १९४० के रेडियो का माडल रखा गया था। उसे देखने दूर-दूर से लोग आए।

□ इंग्लैंड और नेपोलियन बोनापार्ट के बीच १७५ वर्ष पहले वाटरलू में युद्ध हुआ था। पिछले दिनों इसी लड़ाई की वर्षगांठ मनाई गई। लड़ाई के नाटक को दो लाख दर्शकों ने देखा।

सचित्र समाचार





न्यायमूर्ति श्री रंगनाथ मिश्र : भारत के ↑
मुख्य न्यायाधीश बनाए गए।

←
भारतीय कबड्डी टीम : एशियाई खेलों में बंगलादेश को हराकर स्वर्ण पदक जीता।



नौ वर्ष का गजानन शिवशंकर : भार ↑
है सतासी किलो।



एन. कुंजारानी : महिला भारोत्तोलन में कांस्य पदक। ↑

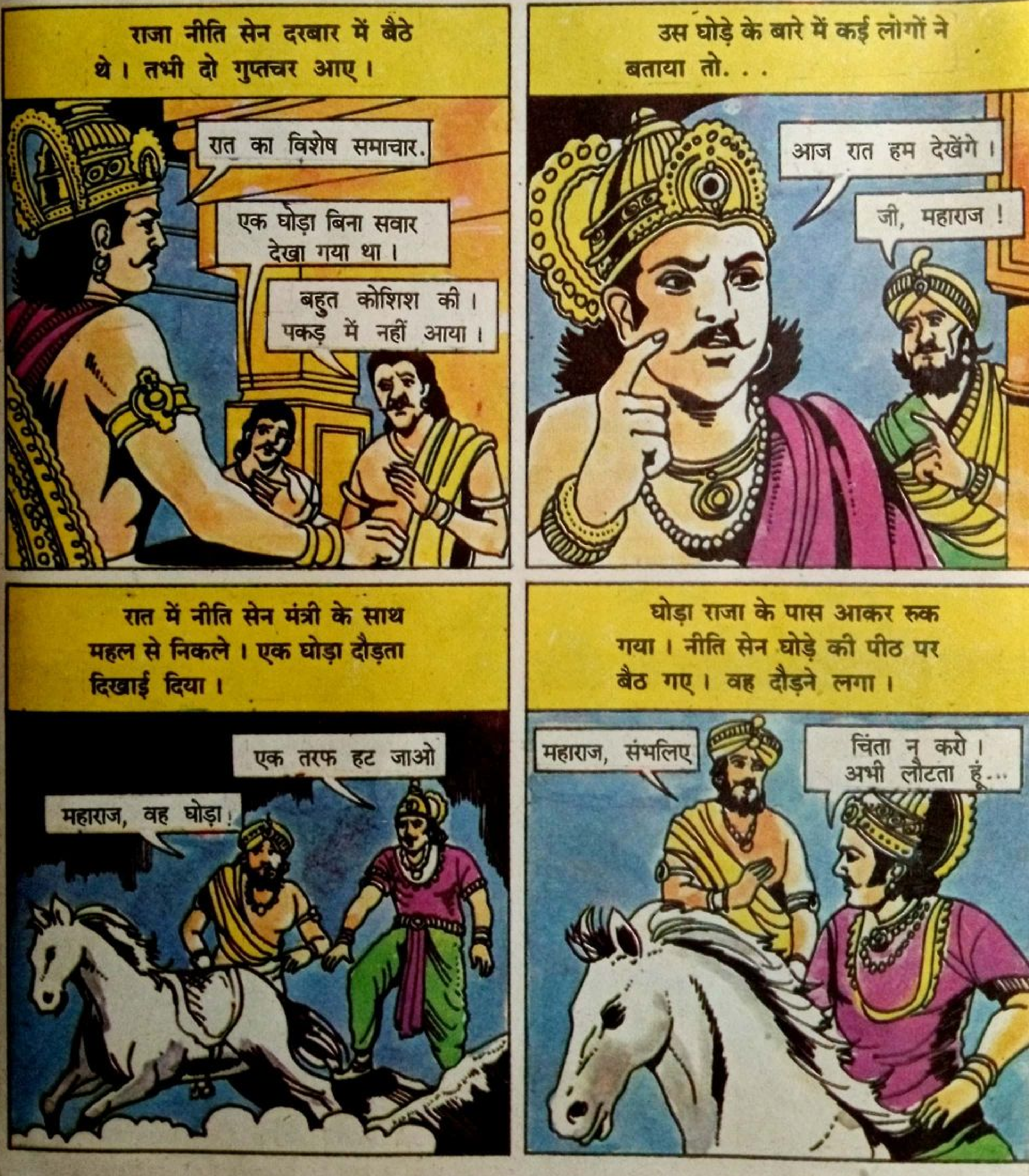


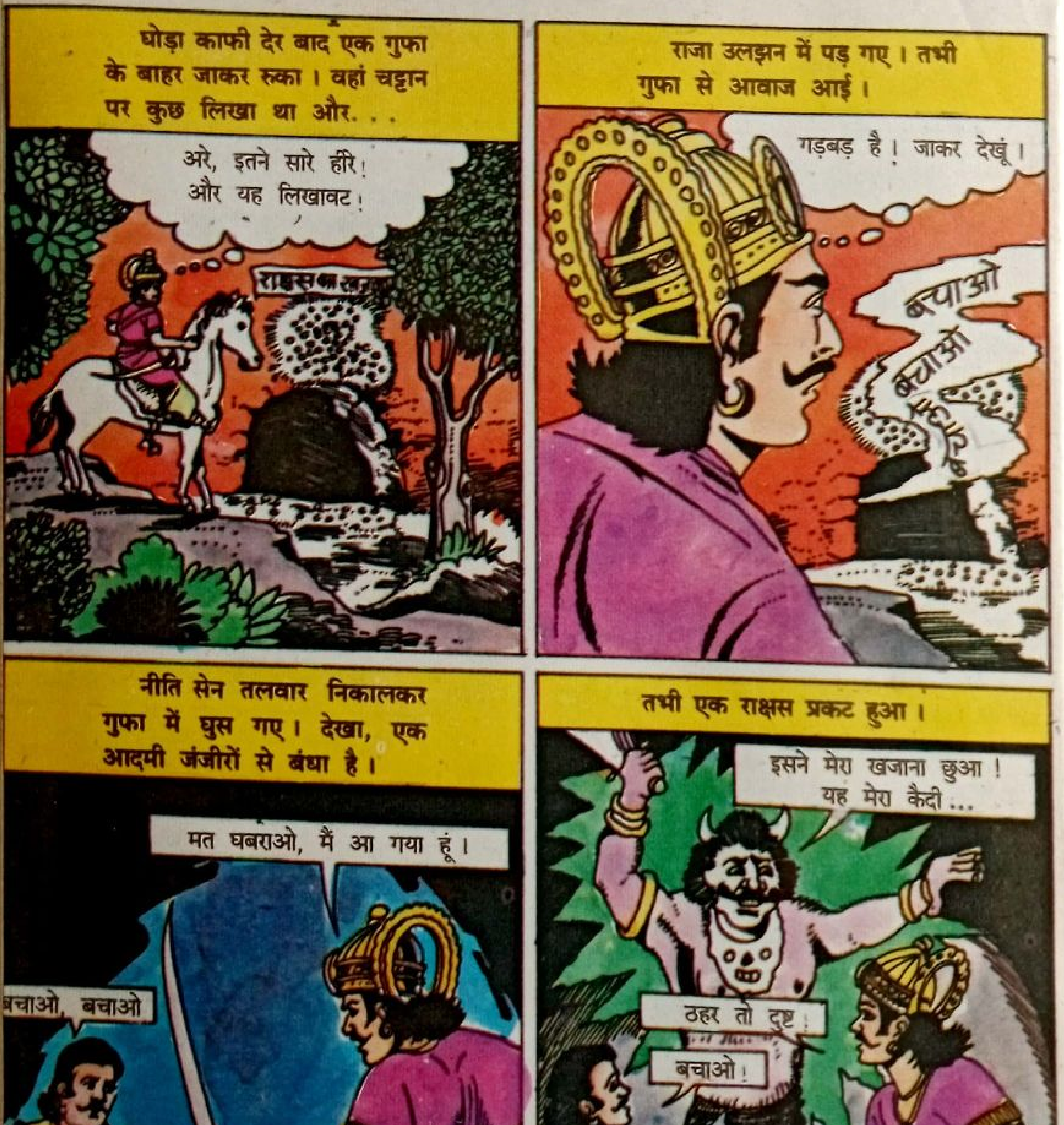
←
अगला दशक इन हंसते-खिलखिलाते बच्चों का होगा। 'बालक के अधिकार पर' संयुक्त राष्ट्र में सम्मेलन हुआ।

कहो बिटिया घर में तो सब ठीक हैं !
बिल्ली मौसी ने नन्ही बत्तख से पूछा।



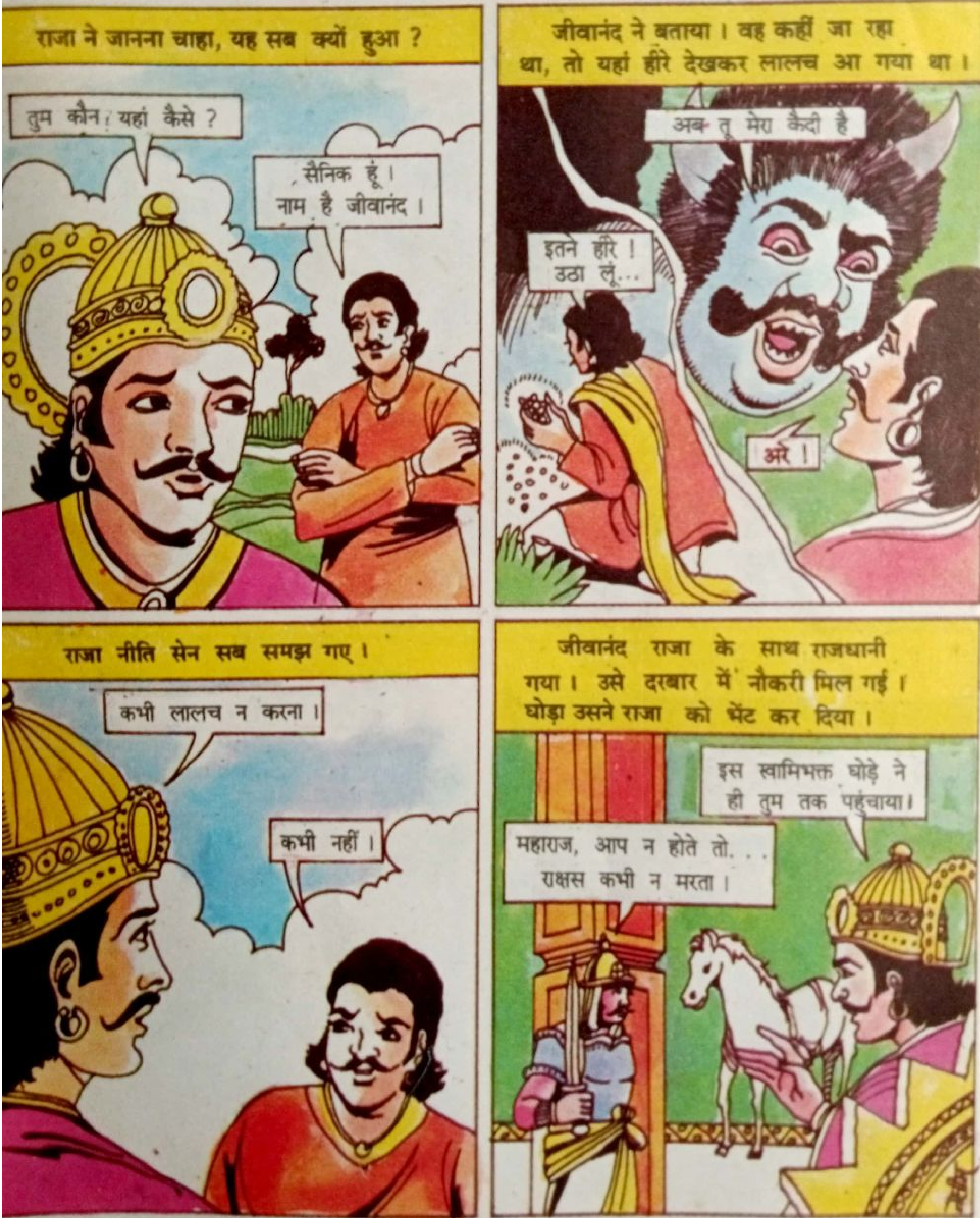
खजाना किसका


राजा नीति सेन दरबार में बैठे थे। तभी दो गुप्तचर आए।
रात का विशेष समाचार.
एक घोड़ा बिना सवार देखा गया था।
बहुत कोशिश की। पकड़ में नहीं आया।
उस घोड़े के बारे में कई लोगों ने बताया तो. . .
आज रात हम देखेंगे।
जी, महाराज !
रात में नीति सेन मंत्री के साथ महल से निकले। एक घोड़ा दौड़ता दिखाई दिया।
एक तरफ हट जाओ
महाराज, वह घोड़ा!
घोड़ा राजा के पास आकर रुक गया। नीति सेन घोड़े की पीठ पर बैठ गए। वह दौड़ने लगा।
महाराज, संभलिए
चिंता न करो। अभी लौटता हूं...


घोड़ा काफी देर बाद एक गुफा के बाहर जाकर रुका । वहां चट्टान पर कुछ लिखा था और. . .
अरे, इतने सारे हीरे! और यह लिखावट!
राजा उलझन में पड़ गए । तभी गुफा से आवाज आई ।
गड़बड़ है ! जाकर देखूं ।
बचाओ
बचाओ
नीति सेन तलवार निकालकर गुफा में घुस गए। देखा, एक आदमी जंजीरों से बंधा है ।
मत घबराओ, मैं आ गया हूं ।
बचाओ, बचाओ
तभी एक राक्षस प्रकट हुआ ।
इसने मेरा खजाना छुआ ! यह मेरा कैदी ...
ठहर तो दुष्ट !
बचाओ !



राजा वीर थे। राक्षस से भिड़ गए।
मुझसे आज तक कोई नहीं बचा..
अभी फैसला हो जाएगा
दोनों के बीच युद्ध होता रहा। आखिर नीतिसेन ने राक्षस को मार डाला।
मैं मरा. . . आ. . . आ. . .
हिम्मत है तो उठ. . .
राक्षस के मरते ही गुफा की दीवारें हिलने लगीं।
जल्दी बाहर निकलो।
नहीं तो, फंस जाएंगे।
गुफा से बाहर आए तो देखा, चट्टान से हीरे गायब थे। लिखावट भी मिट गई थी।
हीरे गायब!
राक्षस की माया उसके मरते ही खत्म।


राजा ने जानना चाहा, यह सब क्यों हुआ ?
तुम कौन! यहां कैसे ?
सैनिक हूं। नाम है जीवानंद।
जीवानंद ने बताया। वह कहीं जा रहा था, तो यहां हीरे देखकर लालच आ गया था।
अब तू मेरा कैदी है
इतने हीरे! उठा लूं...
अरे!
राजा नीति सेन सब समझ गए।
कभी लालच न करना।
कभी नहीं।
जीवानंद राजा के साथ राजधानी गया। उसे दरबार में नौकरी मिल गई। घोड़ा उसने राजा को भेंट कर दिया।
इस स्वामिभक्त घोड़े ने ही तुम तक पहुंचाया।
महाराज, आप न होते तो... राक्षस कभी न मरता।

एक अनोखी प्रतियोगिता

'नंदन' के पाठकों के लिए

दो सौ पुरस्कार

□ लिखो कुछ नया— बनाओ कुछ ऐसा, जिसमें हो कोई अनूठी बात... जो भी कुछ लिख सकते हो लिखो।
बना सकते हो बनाओ,
'नंदन' में नाम छपाओ,
भरपूर इनाम भी पाओ।

□ इस प्रतियोगिता का उद्देश्य ही है बाल लेखकों/कलाकारों में छिपी हुई प्रतिभा को जगाना। उन्हें प्रोत्साहन देकर आगे बढ़ाना। प्रतियोगिता में आठ से सतरह वर्ष के बच्चे भाग ले सकते हैं। अपना नाम, पता, आयु अवश्य लिखें।

□ आप कहानी, कविता, चुटकुले, मनोरंजक संस्मरण, जैसी रोचक सामग्री लिखकर भेज सकते हैं। कहीं यात्रा पर गए हों, तो उसका मजेदार वृत्तांत लिख डालिए या कोई आपबीती, आसपास की कोई घटना, किसी का शब्द-चित्र, पूरी स्वतंत्रता है आपको। लेकिन हां, रचना आपकी अपनी लिखी हुई, मौलिक होनी चाहिए— नकल की हुई नहीं। रचना ५०० शब्दों से बड़ी न हो।

□ चित्र बनाने में रुचि हो, तो अपना बनाया कोई रंगीन चित्र भेजिए, विषय भी आप खुद तय करें कि वह किसी झील का दृश्य हो या स्कूल का वार्षिक उत्सव, कोई मेला हो या फिर कहीं की यात्रा। कोई चुलबुला कार्टून भी भेज सकते हैं।

□ हर विषय की श्रेष्ठ प्रविष्टि पर पुरस्कार दिए जाएंगे। दो सौ पुरस्कार इस प्रकार होंगे—

५० प्रथम पुरस्कार — प्रत्येक १०० रु.
५० द्वितीय पुरस्कार — प्रत्येक ५० रु. (पुस्तकें)
१०० प्रशंसा पुरस्कार — प्रत्येक ३० रु.

रचना या चित्र को भेजते समय लिफाफे पर यहां प्रकाशित 'नंदन पाठक प्रतियोगिता' का पता काटकर चिपका दें।



'नंदन पाठक प्रतियोगिता'
सम्पादक : नंदन
हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस,
१८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली-११०००१

पुतली का विवाह

— डा. सुरेशचंद्र गुप्त

बात पुरानी है । मारवाड़ के किसी गांव में चार मित्र रहते थे— एक बढ़ई, दूसरा दर्जी, तीसरा सुनार और चौथा ब्राह्मण । चारों युवा थे । विवाह किसी का नहीं हुआ था । परिश्रमी थे, गुजारे की चिंता नहीं थी ।

एक दिन चारों ने सोचा, कहीं बाहर खूब धन कमाएं । बस, अगले ही दिन सुबह-सुबह घर से निकल पड़े । अपना कुछ सामान और रास्ते के लिए भोजन साथ ले लिया । चलते-चलते दोपहर हो गई । एक पेड़ के नीचे साफ जगह देख, वहां उन्होंने भोजन किया । कुछ देर विश्राम कर, वे फिर चल दिए ।

शाम घिरने लगी, तो चिंता हुई, रात कहां बिताई जाए ? तभी कुछ दूरी पर गांव के बाहर एक बाग दिखाई पड़ा । वहां कुआं भी था । ब्राह्मण ने कहा— "भाइयो, आज की रात यहीं रुकना ठीक होगा । कल सुबह गांव में चलेंगे । हो सकता है, धन कमाने का अवसर हमें यहीं मिल जाए ।"

सुनार बोला— "कहते तो तुम ठीक हो । पर रात को बारी-बारी से पहरा देना होगा । ऐसा न हो, हम सोते रहें और कोई हमारी चीजें उठा ले जाए ।"

इस बात को सबने ठीक माना । सबसे पहले पहरा दिया बढ़ई ने । दिन भर का थका तो था ही, आंखों में नींद भरने लगी । समय काटने को उसने अपनी बोरी में से आरी, बसूला और दूसरे औजार निकाले । वहीं पास में लकड़ी का एक बड़ा टुकड़ा पड़ा था । डेढ़-दो घंटे कड़ी मेहनत कर उसने एक पुतली बना डाली । पुतली बहुत सुंदर बनी थी ।

रात का पहला पहर बीतने को था । दर्जी को जगाकर बढ़ई सो गया । तभी दर्जी की नजर पुतली पर पड़ी । उसने सोचा— 'अहा ! कितनी सुंदर पुतली है । पर कपड़ों के बिना इसकी क्या शोभा !'

बस, उसने अपने झोले में से सूई-धागा और कपड़ा निकाला । पुतली का नाप लेकर उसके कपड़े सी दिए । पुतली को कपड़े पहना, उसने सुनार को



जगाया और सो गया ।

सुनार ने कपड़ों से सजी पुतली देखी, तो चकित हुआ । सोचने लगा— 'पहले तो यह यहां नहीं थी । अब कहां से आ गई ? खैर, बिना गहनों के इसकी सुंदरता अधूरी है ।' यह विचार मन में आते ही वह गहने बनाने में जुट गया । गले की हंसुली और हाथों के कड़े तो उसे अपने जेवरों के डिब्बे में मिल गए । कानों के झुमके, नाक की नथ और अंगूठी उसने बना डालीं । फिर सारे गहने पुतली को पहना दिए । पुतली को सजी-धजी देख, सुनार को बेहद खुशी हुई । ब्राह्मण को जगाकर वह सो गया ।

ब्राह्मण ने पुतली देखी, तो उसे वह सजीव लगी । सोचा, शायद कुछ कहना चाहती है । लेकिन वह कुछ न बोली । पास आकर देखा, तो रहस्य खुला कि यह तो बेजान पुतली है । मन में विचार आया— 'मैं चाहूं, तो इसमें प्राण डाल सकता हूं । आखिर गुरु जी की सिखाई विद्या कब काम आएगी ?'

सुबह होने वाली थी । उसने देर करना ठीक न समझा । सबसे पहले पुतली के चारों ओर एक घेरा

खींचा। फिर उस पर जल छिड़का और मंत्र बोलने शुरू किए। आधा घंटा बीता होगा कि पुतली में प्राण आ गए। पहले उसकी पलकें हिलीं, फिर होंठों पर मुसकान आई। अगले पल उसने हाथ जोड़कर नमस्कार किया।

ब्राह्मण ने कुछ पूछना चाहा। पर तभी बढ़ई की नींद खुल गई। पुतली का वह रूप देख, उसे बड़ा अचरज हुआ। ब्राह्मण ने उससे कहा— "मित्र, इससे मैं विवाह करूंगा। जानते हो, पहले यह बेजान पुतली थी। मैंने ही इसमें प्राण डाले हैं।"

बढ़ई को यह अच्छा नहीं लगा। बोला— "तुमने यह भी सोचा कि यह आई कहां से? अरे, इसे मैंने बनाया था। इस पर मेरा हक है।"

उसकी ऊंची आवाज से दर्जी जाग गया। उसकी बात सुन, उसने कहा— "सच तो यह है, इसका तन मैंने ढका था। इसलिए इससे विवाह भी मैं ही करूंगा।"

तभी सुनार की नींद टूट गई। पूरी बात समझकर वह बोला— "गहने मैंने पहनाए हैं। सबसे महंगे हैं। मेरे रहते तुम भला विवाह कैसे करोगे? यह मेरे साथ रहेगी।"

विवाद बढ़ता गया। पुतली एक, वर अनेक। मन तो पुतली का भी था कि कुछ कहे, पर चुप रही।

तभी गांव की ओर से एक बूढ़ा आता दिखाई दिया। उन्हें झगड़ते देख उनके पास रुक गया। पूछा— "बात क्या है? झगड़ क्यों रहे हो? इस गांव के तो तुम हो नहीं। मैं यहां का सरपंच हूं। अपनी समस्या मुझे बताओ।"

ब्राह्मण ने पूरी बात बताई। कुछ पल सोचकर बूढ़े ने कहा— "जिसने पुतली बनाई, वह तो उसका बाप हुआ। भला क्या बाप बेटी से ब्याह करेगा?"

बढ़ई को अपनी भूल ज्ञात हुई। हाथ जोड़कर बोला— "बाबा, आप ठीक कहते हैं। मैं कन्यादान करूंगा।"

अब सरपंच ने कहा— "जिसने पुतली में प्राण डाले, वह तो भगवान हुआ। भगवान होता है बाप-जैसा। बोलो, ठीक है या गलत?"

बात न्याय की थी। ब्राह्मण ने अपनी भूल स्वीकार की। बचे दो दावेदार। दर्जी ने बड़ी आशा से सरपंच की ओर देखा। लेकिन उसने कहा— "शादी में दुलहिन का जोड़ा मामा लेकर आता है। दर्जी ने कपड़े पहनाए, सो वह लड़की का मामा हुआ।"

बात ठीक थी। दर्जी ने सिर झुका लिया। सरपंच बोला— "मेरी बात तो तुम समझ ही गए। फैसला सुनार के पक्ष में है। लड़की के लिए गहने दूल्हा लाता है। उसी के साथ इसका विवाह होना चाहिए।"

बूढ़े की बात में दम था। सब खुशी-खुशी मान गए। सुनार और पुतली का ब्याह हो गया। मंत्र ब्राह्मण ने पढ़े। कन्यादान बढ़ई ने किया। आशीर्वाद सरपंच ने दिया। फिर चारों दुलहिन के साथ अपने गांव लौट गए।



वाह । कितना प्यारा है उपहार
सचमुच इसका नहीं जवाब
मन बार - बार खाने को मचले
ऐसा है मॉर्टन का स्वाद ।



मॉर्टन स्वीट्स व टॉफियाँ — वर्षों से पूरे परिवार की मनपसन्द । स्वादिष्ट व पौष्टिक - इतने सारे जायकों में । चीनी, ग्लूकोज व क्रीमयुक्त शुद्ध दूध, के गुणों से भरपूर । चॉकलेट व कोकोनट कूकीज, रोज एक्लेर्यस, सुप्रीम, चॉकलेट तथा कोकोनट टॉफियाँ, लेक्टोबोनबोन्स तथा अन्य अनेक मज़ेदार स्वादों में उपलब्ध ।

मुस्कुराहट भरा मॉर्टन का साथ ।

MORTON
SWEETS



मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री,
पो० आ० मढ़ौरा — ८४१४१८, जिला सारन, बिहार

CC/M-3/89 HIN

चेतावनी :
MORTON स्वीट्स का लोगो एवं रैपर अपर गैंगेज सूगर एंड इंडस्ट्रीज लि० का पंजीकृत व्यापार-चिन्ह है । किसी भी प्रकार से व्यापार- चिन्ह अधिकारों का उलंघन अभियोजनीय है ।

Scanned with CamScanner

मीठी रोटी

—डा. सत्येन्द्र वर्मा

कश्मीर के किसी गांव में कादिर नाम का एक हज्जाम रहता था। कादिर का कद छोटा और टांगे पतली थीं, किंतु सिर बड़ा था। उसका शरीर बेडौल था। गांव वाले उसका नाम बिगाड़कर उसे कद्दू बौना मियां कहते थे। कादिर को इस नाम से चिढ़ थी। इसीलिए लोग जान-बूझकर उसे चिढ़ाते थे।

कादिर अपने को होशियार और बहादुर समझता



था। वह मन ही मन सोचता—'काश ! कभी मुझे भी अपनी बहादुरी दिखाने का अवसर मिले, तो लोगों को दिखा दूं कि मैं क्या हूं।' मगर उसे बहादुरी दिखाने का अवसर हाथ ही नहीं आता था।

एक दिन वह अपने काम पर जाने से पहले अपने उस्तरे की धार तेज कर रहा था। इतने में उसके हाथ पर एक मक्खी आ बैठी। उसके हाथ में खुजली हुई। इसी बीच हाथ से उस्तरा छूटकर मक्खी पर जा गिरा और मक्खी मर गई। कादिर फूला नहीं समाया—'मैं तो बड़ा बहादुर हूं। मैंने आज एक मक्खी मार ली।' उसी दिन जाकर वह अपने पड़ोसी गुलफाम से बोला—"यार ! लोग मेरी होशियारी और बहादुरी को समझ ही नहीं सकते। लो, मेरा उस्तरा। अगर इससे एक भी मक्खी या मच्छर मारकर दिखा दो, तो समझूं। इसमें हिम्मत के साथ निशाने की भी जरूरत होती है। मुझे तो मेरी खाला रोककर रखती है, वर्ना मैं तो जंगल में जाकर शेर और चीते का भी शिकार करके लाऊं।"

इस तरह कादिर मन ही मन मिट्ठू बनता रहता। वह सोचता—'अब मैं अपना नाम किसी को बिगाड़ने नहीं दूंगा।' जो भी गांव वाला मिलता, उस पर वह अपनी बहादुरी का सिक्का जमाने की कोशिश करता। किंतु गांव वालों ने उसे फिर भी कादिर मियां न कहकर, कद्दू बौना नाम से ही पुकारा। वह क्रोध में जल-भुन गया, मगर करता क्या ? क्रोध में भरा घर लौटा। खाला अम्मा उसके मन का मर्म समझ गई। और बोली—"गांव वालों को अपनी मूर्खता क्यों बताता है ? मक्खी मारना भला कोई बहादुरी का काम है ? खामोश रहा कर, नहीं तो लोग तुझे और भी अधिक मूर्ख बनाएंगे।"

कादिर का मन और भी खराब हो गया। वह बोला—"अच्छा, तो तुम भी मुझे मूर्ख समझने लगी हो ! मैं अब शहर जाऊंगा। मेरे जाने की तैयारी कीजिए। मेरे यहां रहने से कोई फायदा नहीं है।"

कादिर की खाला अम्मा ने उसके लिए एक मोटी और एक पतली, दो रोटियां पकाई और उसे हिदायत दी कि पतली रोटी रास्ते में खाना और मोटी रोटी शहर जाकर खाना। उसने दोनों रोटियां एक पोटली में रख लीं। दो-एक कपड़े और उस्तरा लेकर शहर की ओर चल दिया। रास्ते में भूख लगी, तो पोटली खोली और पतली रोटी खा ली।

शहर पहुंचने पर कादिर को पता चला कि जंगल

में एक हाथी पागल हो गया है। वहां के नवाब ने अपने कई सिपाहियों को भेजा, किंतु हाथी किसी के काबू नहीं आया। कादिर मियां इस खबर से खुश हो गया। सोचा—'यदि मैं इस हाथी को मार दूं, तो लोगों पर मेरी बहादुरी का सिक्का जम जाएगा।'

वह सीधे नवाब के दरबार में पहुंचा। बोला—"हुजूर, मैं एक बहादुर इंसान हूं। मैं उस पागल हाथी को मार सकता हूं।" पहले तो नवाब को विश्वास नहीं हुआ, मगर कादिर के हठ करने पर वह मान गए। नवाब की आज्ञा पाकर कादिर उधर ही चल पड़ा, जिधर से वह हाथी आया करता था।

शहर वालों ने जब बौने कद वाले कादिर को देखा, तो मुसकराते हुए बोले—"अरे साहब! आपको तलवार या कोई और बड़ा हथियार लाना चाहिए था।"

कादिर अपने चेहरे पर झूठी मुसकराहट लाता हुआ बोला—"अरे,आप लोगों ने सच्चे बहादुर अभी तक देखे ही नहीं।"

शहर भर के लोग कादिर का कमाल देखने के लिए एकत्रित हो गए। पागल हाथी चिंघाड़ता हुआ आ रहा था। कादिर को अकेला देखकर उसकी ओर भागा। हाथी को देखकर कादिर के हाथ-पैर फूल गए। पूरा दम लगाकर वह भागा और हाथी उसके पीछे-पीछे। इस भागा-दौड़ी में कादिर के हाथ से उसकी मोटी रोटी गिर पड़ी। हाथी मोटी रोटी देखकर रुक गया। उसने सोचा— 'क्यों न पहले नाश्ता कर लूं? फिर इस आदमी को देखूंगा।' कादिर एक तरफ हांफता हुआ खड़ा हो गया।

यह मोटी रोटी आटे में घी और बूरा डालकर बनाई थी खाला अम्मा ने। मीठी होने के कारण उस पर चींटियां चढ़ गई थीं। पोटली में चींटियां ही चींटियां। कादिर यह देख नहीं पाया था। अब जैसे ही हाथी रोटी खाने लगा, चींटियां उसकी सूंड में घुस गईं। कुछ ही देर में वह परेशान हो उठा। फिर हाथी वहीं पर गिर गया। कादिर खड़ा हुआ यह अजूबा देख रहा था। जब उसे भरोसा हो गया कि अब हाथी उठने



वाला नहीं है, तो उसने हाथी की सूंड को हिलाया। जोर से बोला—"यह तो ढेर हो चुका है।"

कादिर का कमाल देखकर लोग तालियां बजाने लगे। उससे बहादुरी का राज पूछने लगे।

नवाब को सूचना मिली, तो उन्होंने कादिर को बुलाया। कहा—"खां साहब, आप मेरे राज्य में सेनापति का पद संभालिए।" बस, कादिर अब से सेनापति बन मौज-आराम के साथ रहने लगा।

कुछ दिन बीते। एक आदमखोर शेर लोगों को परेशान करने लगा। शेर आबादी में आकर किसी न किसी को अपना आहार बनाता। नवाब को सूचना मिली, तो उसने कादिर से शेर को मारने के लिए कहा। सेनापति कादिर खां ने जिरह-बख्तर पहन लिया। तीर-तलवार लेकर शेर को मारने के लिए

निकल पड़ा।

कादिर जंगल में शेर के रहने की जगह पहुंचा। उसे देखकर शेर गुर्राया। कादिर फिर कद्दू बौना बन गया। शेर को देखते ही उसके होश फाख्ता हो गए। वह झट से पास के घने छायादार पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ के पत्तों में छिपकर शेर से बचने का उपाय सोचने लगा। सेनापति कादिर खां के पेड़ पर छिप जाने की खबर नवाब तक पहुंच गई। नवाब को अपने निर्णय पर दुःख हुआ कि कैसे कायर को सेनापति बना दिया।

कादिर जिस पेड़ पर बैठा था, उसी पेड़ के नीचे शेर भी बैठा था। दो दिन गुजर गए। भूखा शेर और भी खूंख्वार बनता जा रहा था। उधर कादिर का भूख के मारे बुरा हाल था। एक बार उसने तीर-कमान को संभालने की कोशिश की। इससे पेड़ की पत्तियों में खड़खड़ाहट हो गई। शेर ने सोचा कि उसका शिकार उसके लिए पेड़ से नीचे गिरने वाला है। अतः शेर मुंह खोलकर पेड़ की ओर ताकते हुए उछलने लगा। शेर की इस हरकत से कादिर घबरा गया। इसी बीच उसकी म्यान से तलवार सरक गई। तलवार सीधे शेर के मुंह में जा गिरी। शेर कराहकर वहीं ढेर हो गया। कादिर बहुत खुश हुआ। वह पेड़ पर से उतर आया। उसने शेर की गरदन तलवार से अलग कर दी शेर के सिर को लेकर नवाब के पास पहुंचा।

शेर के सिर को नवाब के सामने रखते हुए बोला—"हुजूर, मैंने शेर मार दिया।" नवाब प्रसन्न हो गए। दरबारियों में भी कादिर खां की बहादुरी की चर्चा होने लगी। नवाब ने शेर को मारने के लिए पुरस्कार देने की घोषणा कर रखी थी। घोषणा थी कि आदमखोर शेर को मारने वाले के साथ शहजादी का विवाह कर दिया जाएगा। शीघ्र ही कादिर खां का शहजादी से विवाह हो गया।

कादिर खां कुछ ही दिन चैन की बंसी बजा सका। कुछ दिनों बाद पड़ोसी नवाब ने उनके राज्य पर चढ़ाई कर दी। सारा शहर शत्रुओं से घिर गया। नवाब ने सेनापति कादिर खां को बुलाया और कहा—"पड़ोसी नवाब ने आक्रमण कर दिया है। यदि आक्रमण को आप नाकाम कर दें, तो आधा राज्य आपको दे दिया जाएगा।"

कादिर खां अंदर ही अंदर घबरा गया। मन में सोचने लगा—'युद्ध तो मेरे बस का है नहीं।' उसने शहजादी से कहा—"पड़ोसी नवाब काफी ताकतवर है। उससे लड़ना आसान नहीं है। क्यों न हम लोग रात के अंधेरे में यहां से भाग चलें?"

शहजादी कादिर मियां की असलियत जान चुकी थी। अतः वह तैयार हो गई। दोनों ने कुछ गहने लेने के साथ सोने-चांदी के बर्तनों को भी इकट्ठा किया। रात के अंधेरे में भाग निकले। वे दोनों कुछ ही दूर निकले थे कि एक ततैया उड़ता आया। उसने कादिर के हाथ पर डंक मारा। रात के अंधेरे में कादिर को लगा, शत्रुओं की तलवार उससे छू गई है। अब वे पकड़े जाएंगे। कादिर बौना तो था ही, उसने एक लम्बी छलांग लगाई। बोला—"भागो, जल्दी भागो। शत्रुओं ने हमला कर दिया है। चलो, भागकर हम लोग महल में ही पनाह ले लें।"

कादिर खां आगे-आगे और उसके पीछे-पीछे शहजादी। भागते समय कादिर खां के हाथ से बर्तनों की गठरी खुलकर आवाज के साथ बिखर गई। सोने-चांदी के बर्तन झनझनाते हुए जमीन पर लुढ़क गए। शत्रु ने समझा, उन पर हमला हो गया है। वे सभी एक साथ अधूरी नींद में उठ खड़े हुए। अनजाने में एक दूसरे पर हमला करने लगे। सिपाहियों को कुछ सूझ नहीं रहा था। आपस में लड़कर ही शत्रु की आधी सेना मारी गई। बची हुई सेना भाग खड़ी हुई।

दूसरे दिन जब नवाब को पता चला कि शत्रु सेना का यह हाल हुआ, तो वह बहुत प्रसन्न हुए। नवाब ने कादिर को सम्मानित किया और पुरस्कार स्वरूप अपना आधा राज्य उसे सौंप दिया। कद्दू बौना अब हज्जाम से नवाब बन चुका था। ●

सोने की ईंटें

— अभिलाषा कुलश्रेष्ठ

एक जाट था, बहुत ही चतुर । एक दिन वह कहीं से आ रहा था । रास्ते में सांझ घिर आई । बरसात भी हो रही थी । पास ही में एक गांव था । जाट ने सोचा— 'ऐसे बरसात के मौसम में आगे जाना ठीक नहीं । क्या पता, कब मूसलधार बरसा होने लगे । क्यों न आज रात इसी गांव में बिताई जाए ?' ऐसा सोचकर वह आगे बढ़ा । सामने ही एक घर था । वह घर था— लाला रामजस का । लाला रामजस यूं तो बहुत खुश-मिजाज आदमी था, किंतु किसी पर उसे विश्वास नहीं था । उसकी पत्नी इस मामले में उससे भी दो कदम आगे थी । जाट पहुंचा लाला के घर के दरवाजे पर । कुंडी खटखटाई । लाला बाहर आया । जाट ने कहा— ''क्या आप मुझे रात भर अपने घर में ठहरने की जगह देंगे ?''

मौसम को देखकर लाला भी सोचने लगा— 'अब यह रात में जाएगा कहां ?' फिर लाला ने जाट को अपने घर में ठहरा लिया । बैठक में उसे बैठा दिया । अंदर जाकर पत्नी को सारी बात बताई । कहा— ''बेचारा राहगीर इस बरसात में कहां जाता, इसीलिए बुला लाया । रूखी-सूखी यह भी खा लेगा ।''

पत्नी बोली— ''यह तुमने अच्छा नहीं किया । किसी अतिथि को ठहराना कोई बुरी बात नहीं, किंतु क्या पता, यह कोई ठग ही हो । हमारे सो जाने पर माल लेकर चम्पत हो जाए ।''

लाला बोला— ''अब तो मैंने कह दिया । तुम आगे की सोचो । हमें क्या करना चाहिए ?''

पत्नी बोली— ''करना क्या चाहिए, उसे बैठक में ठहराओ । तुम उसी के पास खाट बिछाओ । मैं दूसरे कमरे से उसकी निगरानी करूंगी । हमें कोई ऐसी तरकीब सोचनी चाहिए, जिससे वह और हम रात भर जागते रहें, ताकि उसे चोरी करने का अवसर ही न मिल पाए ।''

इसके बाद खाना खाकर वे तीनों बैठक में आ गए । जब जाट सोने लगा, तो लाला की पत्नी ने उससे कहा— ''सुना है, गांव वाले बहुत कहानियां जानते हैं । क्या तुम हमें कोई कहानी नहीं सुना सकते हो ? कहानी सुनाओगे, तो यह रात जल्दी बीत जाएगी ।''

जाट था चतुर । लाला की पत्नी के हाव-भाव देखकर जाट उनके मन की शंका को समझ गया था । वह बोला— ''कहानी तो मुझे आती है, मगर थका हुआ होने के कारण नींद आ रही है । अच्छा हो, तुम लोग भी सो जाओ ।''

उसकी यह बात सुनकर लाला की पत्नी सोचने



लगी— 'जरूर इसके मन में कोई खोट है । इसलिए हमें जल्दी सोने के लिए कह रहा है ।' वह फिर बोली— ''मुझे कहानी-किस्से सुनने की आदत है । तुम कहानी जानते हो, तो मेहरबानी करके एक कहानी सुना ही दो ।''

जाट टालता हुआ बोला— ''कहानी तो मैं सुना दूंगा, मगर उसे सुनते ही तुम दोनों के बीच झगड़ा हो जाएगा ।''

लाला की पत्नी बोली— ''तुम इसकी चिंता मत करो । मैं इनसे झगड़े में कभी नहीं हारती । चलो, तुम अपनी कहानी शुरू करो ।''

जाट उसकी बात सुनकर सोचने लगा— 'यह

अपने को बहुत चालाक समझ रही है । अब इसे मजा चखाना ही चाहिए ।' वह कुछ देर तक सोचता रहा । लाला की पत्नी फिर बोली— "क्या सोच रहे हो ?"

जाट बोला— "इस समय मैं कोई जरूरी बात सोच रहा हूं । सूझ नहीं रहा है कि क्या करूं ?"

लाला की पत्नी ने कहा— "आखिर ऐसी क्या जरूरी बात है ?"

जाट कहने लगा— "अब तुम्हें क्या बताऊं ! मैं बहुत दिनों से राजा के दरबार में नौकरी करता था । जब मैंने वहां से नौकरी छोड़ी, तो राजा ने मुझे सोने की दो ईंटें दीं । उन्हीं ईंटों को लेकर मैं अपने घर जा रहा था । रास्ते में उस नदी के पास से गुजरा, जो तुम्हारे घर के कुछ दूर बह रही है । यही सोचकर कि आज रात यहां रुकना है, मैं अपनी सोने की ईंटों को नदी के तट के पास ही छिपा आया हूं । अब मैं सोच रहा हूं कि तुम जैसे ईमानदार के घर में ठहरा हूं । बेकार ही ईंटों को नदी किनारे छिपा आया । अगर कहीं ईंटें नदी में बह गईं, तो मुझे मल्लाहों की खोज करनी होगी। क्योंकि वे ही ईंटें नदी से निकाल सकते हैं । मैंने बड़ी गलती की । इससे तो ईंटों को यहीं ले आता । मगर अब क्या हो सकता है !"

लाला चुपचाप आंखें मींचे हुए उसकी बात सुन रहा था । उसके मन में लालच भर आया । वह सोचने लगा— 'क्यों न मैं अभी जाकर उन ईंटों को ले आऊं और घर में लाकर छिपा दूं । फिर तो वे मेरी ही हो जाएंगी । इसे क्या पता चलेगा ?' यह सोचकर उसने अपनी पत्नी से कहा— "अब अतिथि को परेशान मत करो । इन्हें सो जाने दो ।"

पत्नी भी अपने मन में कोई योजना बना रही थी । वह बोली— "ठीक है, अब मैं सोती हूं ।" इतना कह, पत्नी वहां से उठकर अपने कमरे में आ गई । लाला और जाट बैठक में ही सो गए । लाला की आंखों में नींद कहां । वह सोच रहा था— 'कब यह जाट सोए और मैं अपना काम करूं ।' उधर जाट की आंखों में भी नींद नहीं थी । वह भी अपनी आगे की योजना पर विचार कर रहा था । जाट ने गहरी नींद में सोने का नाटक रचा । वह खर्राटे भरने लगा । लाला ने समझा कि जाट गहरी नींद में है । वह चुपचाप उठा और नदी की ओर चल दिया । वहां वह देर तक ईंटों की खोज करता रहा । मगर ईंटें होतीं, तो मिलतीं । उसके सारे कपड़े भीग गए । जाड़े के मारे बुरी तरह कांप रहा था । जब ईंटें नहीं मिलीं, तो वह घर की ओर चल दिया ।

इसी बीच उसकी पत्नी की नींद भी खुल गई । उसने सोचा— 'हम दोनों चलकर उन ईंटों की खोज करेंगे ।' वह बैठक में आई, तो लाला अपने बिस्तर पर नहीं था । अब पत्नी का माथा ठनका । वह तुरंत उसकी खोज में घर से बाहर निकल पड़ी ।

इसी बीच लाला घर में आया । अपनी पत्नी को वहां न पाकर उसने जाट से पूछा— "मेरी पत्नी कहां है ?"

जाट ने अनजान बनते हुए कहा—"भैया, वह कहां गई, यह तो मैं नहीं जानता । अभी कुछ देर पहले वह उत्तर दिशा में किसी के साथ गई है । रात के अंधेरे में क्या पता चलता, कौन है ? ज्यादा देर नहीं हुई । तुम भागकर जाओ, तो मिल सकती है । मैंने तो उसे रोकना उचित नहीं समझा, क्योंकि मैं कौन होता हूं उसे रोकने वाला ।" यह सुनते ही लाला का पारा गरम हो गया । वह पत्नी को बुरा-भला कहता हुआ अंधेरे में ही उत्तर दिशा की ओर भागा । उधर उसकी पत्नी भी नदी किनारे पर पहुंचकर चारों ओर पति की खोज करने लगी ।

बस, जाट को मौका हाथ लग गया । वह उठा । उसने लाला के घर का सारा कीमती सामान पोटली में बांधा और नौ दो ग्यारह हो गया ।

काफी देर बाद जब लाला और उसकी पत्नी घर लौटे। जाट वहां नहीं था । उन्होंने देखा, घर का बहुत-सा कीमती सामान भी गायब था । पत्नी बोली— "आखिर हम ठगे ही गए ।" लाला चुप था । उसे अपनी मूर्खता पर पछतावा हो रहा था कि वह सोने की ईंटें खोजने न जाता, तो यह सब क्यों होता ।

लड़ियों में रुपए

— डा. ओम्प्रकाश सिंहल

पुरानी बात है। पंजाब के भदौड़ गांव में एक सिख परिवार के सभी लोग बहुत मिल-जुलकर रहते थे। उस परिवार में सात भाई थे। सब एक-दूसरे को जी-जान से चाहते थे। हरेक के पास एक-एक किला था। सत्संग करना, दीन-दुखियों की सहायता करना, सबसे मधुर व्यवहार करना उनकी आदत थी। दिन हंसी-खुशी से बीत रहे थे।

गांव में कभी-कभार एक पंडित जी आया करते थे। उनकी वाणी में गजब का जादू था। उनका प्रवचन सुनने के लिए सारा गांव इकट्ठा हो जाता। बैठने तक को जगह न मिलती। बहुतों को खड़ा रहना पड़ता। सातों भाई भी पंडित जी का प्रवचन सुनने जाते।

एक दिन की बात है। प्रवचन चल रहा था। सब लोग पंडित जी की बात ध्यान से सुन रहे थे। सातों भाई भी कथा सुनने में मगन थे। अचानक पंडित जी ने सातों भाइयों की ओर इशारा करते हुए कहा कि उनमें से एक भाई राजा बनेगा। सातों भाइयों के मन में जिज्ञासा हुई कि आखिर उनमें से कौन राजा बनेगा ? पर पूछने की हिम्मत किसी की न हुई। आखिर छोटा भाई खड़ा हुआ। पंडित जी को प्रणाम किया। फिर बोला— "मेरे मन में एक जिज्ञासा है। आप उसका समाधान करें। आप यह बताने की कृपा करें कि हममें से राजा कौन बनेगा ?"

पंडित जी बोले— "जो खड़ा हो जाएगा, वही राजा बनेगा।"

बड़ा ही रहस्यमय उत्तर था। आखिर खड़े तो सभी होते हैं। पर पंडित जी से कुछ पूछा नहीं जा सकता था। इसलिए किसी ने कुछ नहीं पूछा। प्रवचन समाप्त होने के बाद सब अपने-अपने घर चले गए।

दिन-पर-दिन गुजरने लगे। एक दिन छोटा भाई सपरिवार यात्रा पर निकल पड़ा। छोटा भाई अपने दयालु स्वभाव के लिए प्रसिद्ध था। उसे गुस्सा नहीं आता था। स्वयं कष्ट सह लेता, किंतु किसी से कुछ न कहता। शायद इसीलिए लोग उसे 'आला' कहकर पुकारते थे। आला यानी सबसे बढ़िया।

गांव छोड़ने के बाद आला ने बारह कोस की दूरी पर डेरा डाला। घोड़े खोल दिए गए। छप्पर छाया गया। चूल्हा जलाया गया। चूंकि उस जगह आला के चूल्हे में आग जली थी, इसलिए लोग उसे बरनाला कहने लगे। आला के मृदु व्यवहार तथा दानी स्वभाव की बात सुनकर लोगों ने उस स्थान पर बसना शुरू कर दिया। इस प्रकार बरनाला का नाम चारों ओर फैल गया।

एक दिन वही पंडित जी बरनाला आए। वह



आला के पास पहुंचे । आला ने उन्हें देखते ही पहचान लिया । उसने पंडित जी के पैर छुए । फिर पूछा कि वह किस काम से आए हैं ? क्या वह उनकी कोई मदद कर सकता है ?

पंडित जी के साथ एक औरत भी थी । उसकी ओर संकेत करके वह बोले— "यह एक गरीब ब्राह्मणी है । इसकी लड़की की शादी पक्की हो गई है । लेकिन इसके पास शादी करने के लिए पैसा नहीं है । यदि आप कुछ सहायता कर सकें, तो बड़ी कृपा होगी । एक गरीब ब्राह्मण-कन्या का उद्धार हो जाएगा ।"

पंडित जी की बात सुनकर आला अंदर गया । उसने अपनी पत्नी को सारी बात बताई । पत्नी ने अपनी कमर में बंधी बांसुली उतारकर पति के हाथ में रख दी । बांसुली की शक्ल करधनी के आकार की थी । उसमें तीन लड़ियां थीं । प्रत्येक लड़ी में छोटी-छोटी थैलियां लटकी थीं । इन थैलियों में रुपए भरे थे । आला ने बांसुली लाकर पंडित जी के पैरों में रख दी ।

पंडित जी ने पूछा— "इसमें कितने रुपए हैं ?" आला बोला-- "तीसरी लड़ में से ही कुछ रुपए खर्च हुए हैं । शेष सब आपकी सेवा में हाजिर हैं । किसी पुण्य के काम में इनके खर्च होने से मेरा जीवन धन्य हो जाएगा ।" पंडित जी ने पैसे रख लिए । अनगिनत गांवों के स्वामी होने का आशीर्वाद देकर वह चले गए ।

कुछ दिनों बाद, आला अपने घोड़े पर सवार होकर यात्रा के लिए निकल पड़ा । घूमते-घूमते वह शिमला पहुंचा । वहां से वह फिर वापस लौटा । लौटते समय उसने धनुष पर तीर चढ़ाकर फेंका । जिस जगह पर तीर गिरा था, उसी जगह पर डेरा डालने का निश्चय किया । उसे सब अपना राजा मानने लगे । आला के रहने की वजह से वह स्थान 'आला की पट्टी' कहलाया । बाद में उसे पटियाला कहा जाने लगा । पटियाला यानी आला की पट्टी । आला ने वहां पर एक किला बनवाया । वह 'मुबारक किला' के नाम से प्रसिद्ध हुआ । यह किला आज भी मौजूद है । ●

छोटी बहू

— उमा पंत

कुमाऊं की पहाड़ियों में एक शहर है बागेश्वर । कहानी उस समय की है, जब बागेश्वर गांव हुआ करता था । न बिजली, न बस, न तार-टेलीफोन। आज जैसे सुविधा-साधन तब न थे । सरयू नदी के किनारे बागेश्वर गांव की एक पाठशाला में पंडित देवदत्त शास्त्री बच्चों को पढ़ाया करते थे । शास्त्री जी नियम के पक्के थे । तड़के सुबह उठ जाते । सरयू तट पर जा पहुंचते । वहां स्वच्छ शीतल जल से स्नान कर, उगते सूर्य को प्रणाम करते । एक लोटा पानी सूर्य को चढ़ाकर, घर लौट आते । चाहे कोई मौसम हो, शास्त्री जी की दिनचर्या में अंतर न आता । उनके तीन बेटे थे । तीनों शास्त्री जी से पढ़ा करते थे । बड़े हुए, तो तीनों अपने-अपने रोजगार में लग गए । विवाह हुआ और सभी अपनी-अपनी गृहस्थी संभालने लगे ।

समय बीतता गया । शास्त्री जी बूढ़े हो चले । चलने-फिरने में दिक्कत होने लगी । आंखों से कम दिखाई देने लगा । छड़ी की सहायता से जैसे-तैसे चलते-फिरते, पंडित देवदत्त अपना नित्य का नियम निबाहते रहे । एक दिन पत्नी से बोले— "भाग्यवान, सुबह ठीक से चला नहीं जाता । मन करता है, घर पर ही सुबह-सुबह कोई एक कलसी सरयू का पानी लाकर दे जाए, तो यहीं नहा लेता । बचपन से सरयू में नहाया हूं । अब इस उम्र में नौले (बावड़ी) के पानी से नहाने की इच्छा नहीं होती ।"

पत्नी बोली— "तीन आज्ञाकारी पुत्र हैं आपके । तीन बहुएं हैं । पोते-पोतियां हैं । आपको किस बात की कमी है ? बहुओं से कहिए, बारी-बारी से तीनों एक कलसी जल आपके स्नान के लिए भर लाया करेंगी ।"

पत्नी की बात उन्हें जंच गई । बड़ी बहू के पास पहुंचे । बहू ने आदर से उनके पांव छुए । बैठने के लिए आसन दिया । एक लोटे में गाय का गरम दूध

और कटोरी में मिश्री लेकर आई। शास्त्री जी ने मिश्री की डली मुंह में डालकर दूध गटक लिया। बोले— "बहू, अब सुबह-सुबह नदी तक चलना मुझे मुश्किल लगने लगा है। सोचता हूं, कल से घर पर ही स्नान कर लिया करूं। क्या तुम मेरे लिए एक कलसी पानी सरयू नदी से भरकर ला दिया करोगी ?"

माथे का घूंघट जरा लम्बा खींच, बहू बोली— "मेरी तबीयत ठीक नहीं रहती पिता जी! फिर जैसे-तैसे आपके लिए पानी ले भी आती, लेकिन क्या करूं ? कलसी में छेद पड़ गया है। नदी से घर तक पहुंचते-पहुंचते पानी आधा रह जाएगा। देवर जी नई कलसी लाए हैं। देवरानी से कह देती हूं वह पानी ले आया करेगी।"

शास्त्री जी कुछ कहते, इससे पहले ही मंझली बहू बोल उठी— "कलसी तो नई है, पर मुझसे जल्दी उठा नहीं जाता। उस पर छोटे-छोटे बच्चे हैं। उन्हें संभालूं या ससुर जी की सेवा करूं ? छोटी बहू सुबह-सुबह उठ जाती है। फिर उसके कोई बाल न बच्चा, उसे बहुत फुर्सत रहती है। मैं उससे कह देती हूं, नित्य आपके लिए पानी ले आया करेगी।"

शास्त्री जी लाठी लेकर उठ खड़े हुए। "उसे यहां बुलाने की कोई जरूरत नहीं है। मैं अपने आप कह लूंगा, मुझे जो कुछ कहना होगा।"— इतना कहकर शास्त्री जी वापस चल पड़े।

अभी दो-चार कदम ही चले थे कि उन्हें दोनों बहुओं के कटु स्वर सुनाई पड़े। बड़ी कह रही थी— "अरी बहन, कलसी तो मेरी तांबे की है, एकदम टनाटन। छेद-वेद कुछ नहीं। पर इतनी दूर जाकर नहाने के लिए पानी क्यों लाऊं ? सभी लोग नौले के पानी से नहाते हैं। ससुर जी भी नौले के पानी से क्यों नहीं नहा लेते ?"

बड़ी की हां में हां मिलाती, मंझली बहू बोली— "हां, दीदी ! मन चंगा तो कठौती में गंगा। पानी तो पानी है, सरयू से लाओ या नौले से।"

दोनों की बात सुनकर शास्त्री जी का मन खट्टा हो चला था। तीसरी से कुछ पूछना-सुनना उनको बेकार



लगा। उदास मन घर लौट आए। उस रात वह ठीक से सो भी नहीं पाए। सोच रहे थे— 'उम्र भर का एक नियम बुढ़ापे में टूटा जा रहा है।' सुबह चिड़ियां चहकने लगीं, लेकिन शास्त्री जी को जैसे कुछ सुनाई नहीं दिया।

पत्नी ने उन्हें इतनी देर तक पड़े-पड़े अलसाते देखा, तो सब समझ गई। मुसकराते हुए बोली— "सभी अंगुलियां बराबर नहीं होतीं। आप छोटी बहू से कुछ कहे-सुने बिना यूं ही उदास लौट आए थे। देखिए तो, वह आपके लिए सरयू से पानी की कलसी भर लाई है।" शास्त्री जी का सारा क्रोध छू-मंतर हो गया। सरयू के निर्मल जल से स्नान कर, वह पूजा-पाठ में लग गए।

ससुर के नहाने के बाद छोटी बहू कलसी उठाने लगी, तो भारी लगी। देखा, उसमें मोती भरे थे। बहू ने मोती भरी कलसी शास्त्री जी के चरणों में रख दी। जाकर अपनी सास को सब-कुछ बताया। सास बोली— "सरयू ने तुझे आशीर्वाद दिया है बहू। तू बड़ी भाग्यवान है।"

पूजा पूरी कर शास्त्री जी ने कलसी देखी, तो बिना बताए ही सब-कुछ समझ गए। भाव-विभोर हो उठे। उनकी आंखों से आंसू बह चले। वह बहू के सिर पर हाथ रख, बोले— "तूने मेरा बुढ़ापा धन्य कर दिया बेटी। यह प्रसाद तेरे ही लिए है।"

शास्त्री जी का इशारा पाकर सास ने मोतियों भरी कलसी बहू के आंचल में उंड़ेल दी। बोलीं— "तेरा आंचल सदा मोतियों से भरा रहे।"

चांदकंवर

—कविता राकेश

राजस्थान का रेगिस्तानी इलाका है । सालों साल पानी नहीं बरसता वहां । सात साल तक के बच्चे नहीं जानते थे कि वर्षा कैसी होती है ? इसी बंजर रेगिस्तान में छोटी-सी एक बस्ती थी । बस्ती में एक परिवार रहता था । घर में बूढ़े मां-बाप और सात बेटे थे । बाबासा व दादीसा तो सबेरे-शाम झोंपड़ी के बाहर एक चारपाई पर गोदड़ी बिछाए बैठे रहते थे । सूरज सिर पर आता, तो झोंपड़ी के अंदर चले जाते । सातों बच्चे दिन भर गांव में या रेतीले मैदानों में घूमते रहते । बच्चे का पिता सेना में था । जब कभी छुट्टियों में आता, तो घर भर के अनाज-पानी का प्रबंध करके जाता । मां उस गांव से दूर सात कोस से सुबह-शाम पानी भरकर लाती ।

सात बेटों की इस मां का नाम धापूबाई था । धापूबाई को अपने मायके गए बहुत साल हो गए थे । दीवाली से राखी तक व राखी से भैयादूज तक धापूबाई अपने भाइयों को याद करती । आंख में आंसू भरकर चंदामामा से कहती—'तू ही मेरा भाई है । आज भैयादूज है । मैं तुम्हें टीका करती हूं ।"

बच्चे मां से पूछते—"मां, तुम यह टीका क्यों करती हो ?"

मां कहती—"मैं अपने भाइयों को याद दिलाती हूं कि तुम्हारी बहन काले कोसों दूर क्यों न हो, तुम्हारे मंगल की कामना करती है ।"

एक दिन सातों भाई आपस में बैठकर बात करने लगे—"हमारी तो बहन ही नहीं है । हमारे कौन टीका लगाएगा ? हमारी मंगल कामना कौन करेगा ?" बड़ा भाई उठकर मां के पास गया । बोला—"मां हमारे लिए एक बहन लाकर दो । वह भी तुम्हारी तरह चांद को टीका लगाकर, हमारी मंगल कामना करेगी ।"

खाट पर बैठे-बैठे बाबासा-दादीसा अपने पोतों की बात सुन रहे थे । भगवान ने बच्चों की इच्छा पूरी की । दीवाली के एक दिन पहले ही धापूबाई ने एक कन्या को जन्म दिया । सात भाइयों की बहन को खूब लाड़-प्यार मिला । सुंदर, बड़ी-बड़ी आंखों वाली बहन जब पैरों चलने लगी, तो सभी भाई उसे दिन भर लेकर घूमते । धीरे-धीरे बहन बड़ी होती गई । उसका रूप निखर आया । धापूबाई ने प्यार से उसका नाम चांदकंवर रख दिया ।

परिवार बढ़ने लगा । धापूबाई के पति भी सेवानिवृत्त होकर गांव में आ गए । पांच बच्चों की शादियां हो गईं । पांच बहुएं घर आ गईं । अब तो बेटे भी नौकरी-धंधे में लग गए थे । छोटा भाई सेना में नौकरी कर रहा था ।

चांदकंवर बड़ी हो गई । धापूबाई को अब चिंता से नींद नहीं आती थी । बाई के लिए वर ढूंढ़ो ।

दीवाली पर सभी भाई-मां, बाप व दादा-दादी इकट्ठे हुए । बाई के वर की तलाश किस-किसने, कैसे की—सब सुना रहे थे । इसी बीच सेना में काम करने वाले सबसे छोटे भाई ने कहा—"मां, हमारी बहन को ऐसी जगह ब्याह दो, जहां कोसों दूर से पानी लाना पड़े ।"

मां ने कहा—"बेटा, कोसों दूर से पानी लाने में मैंने सारी उमर लगा दी । इसका मुझे दुःख नहीं है । मगर बस इतना ही वादा कर लेना अपनी बहन से कि भैयादूज व राखी पर तुम अपनी बहन से मिलने जाया करोगे । भाई के प्यार की डोर से बंधी मेरी बेटी बिना पानी वाले गांव में भी सुख से रह लेगी ।"

मां की पीड़ा को बेटों ने समझा । हाथ में कुल्हाड़ी, फावड़ा, टोकरियों को लेकर सातों बेटे पिता के साथ निकल पड़े । गांव के पास नहर लाने के लिए । उनका साथ गांव वालों ने दिया और सरकार ने भी साथ दिया ।

चांदकंवर का ब्याह हो गया । कुछ ही वर्षों में मायके के गांव से लगी नहर चांदकंवर के गांव से भी निकली । राजस्थान के इस हिस्से में पानी लाने वालों के गांव का नाम सात भाइयों की बहना पड़ गया । गांव वाले धापूबाई व चांदकंवर को खूब आशीष देते रहे । भाइयों को भी खूब प्यार मिला । ●



दीवार चली

—डा. भगवतीशरण मिश्र

गोनू काका का नाम पूरे इलाके में प्रसिद्ध था। मिथिला का बच्चा-बच्चा उन्हें जानता था। उनकी चटपटी कहानियां और उन कहानियों के कहने का ढंग हवाओं के पंखों पर सवार होकर सबके कानों तक पहुंच चुका था।

एक शाम गोनू काका को घेरकर गांव भर के बच्चे बैठे थे। "सुना बच्चो तुमने ?"—गोनू काका ने कहा। सभी बच्चे अवाक् रह गए। अभी तो काका ने कुछ कहा ही नहीं, तो वे सुनते क्या ?

"अरे, मैं उस घटना का वर्णन करने जा रहा हूं, जिसमें मुझे दीवार को मोटर गाड़ी की तरह चलाना पड़ा था।"—काका ने कहा।

"आपने दीवार चलाई ? भला, दीवार भी कहीं चलती है ?"—बच्चों ने आश्चर्य से गोनू काका की ओर देखा।

"हां, दीवार चल पड़ी थी। भला, चलती क्यों नहीं ? अरे, मैंने कोई ऐसे-वैसे नहीं सालों-साल पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर मंत्र साधना की है। मेरा मुकाबला बड़े से बड़ा तांत्रिक भी नहीं कर सकता। और उस दिन वह बेचारा तांत्रिक मेरे आगे कुछ न कर सका। बड़ा आया था सिद्ध औघड़ बनकर गांव वालों पर रौब जमाने। उसे पता नहीं था कि गोनू काका, गांव के ही काका नहीं, तंत्र विद्या के भी काका हैं।"—गोनू ने पालथी बदलते हुए कहा।

"आखिर हुआ क्या ? कौन तांत्रिक रौब झाड़ने आया था ? आपने दीवार क्यों चलाई ?"—बच्चों ने पूछा।

"हां, हां, ध्यान देकर सुनो। एक दिन मैं अपनी दीवार के ऊपर बैठा दातौन कर रहा था। तभी गांव के कुछ लोग दौड़ते हुए मेरे पास आए। बोले—'काका, गांव की इज्जत का सवाल है। आप ही कुछ करें, वर्ना गड़बड़ हो जाएगा।"—कहकर काका चुप हो गए।

एक बच्चे ने पूछा—"आखिर हुआ क्या ! कैसे मिली जा रही थी गांव की इज्जत मिट्टी में ?"

अब कैसे नहीं मिलेगी ? वह बाघ पर सवारी कस कर गांव की ओर आ रहा था। लोग उसे देखकर डर गए, इसीलिए भागे हुए आए।

"कौन था वह ! सही-सही बताओ काका। पहेलियां क्यों बुझा रहे हो ?"—बच्चे जैसे खीज उठे।

"अरे वही, बाजीतपुर गांव का वह तांत्रिक युगेश्वर। बड़ा भारी औघड़ बना फिरता है। गांव वालों से उसकी कुछ चख-चख हो गई थी। बड़ी हेकड़ी मार रहा था।" गांव वालों ने कह दिया—'तुम हमारे गोनू काका के पासंग भी नहीं।' इसी बात पर तो वह बौखला गया। बोला—'ठीक है, दिखा दूंगा और देख लूंगा तुम्हारे गोनू काका को भी।' बस अपनी तंत्र विद्या से उसने शेर बनाया और उस पर सवार हो कर चल पड़ा सबको डराने, यह दिखाने कि मैं कितना बड़ा औघड़ हूं।"—काका ने बात पूरी की। "फिर क्या हुआ काका ?"—बच्चों ने उत्सुकता से पूछा।

"होना क्या था ? मैंने गांव वालों से पूछा—"तुम

लोगों ने अपनी आंखों से बाघ पर आते देखा है ?"

गांव वाले बोले—'काका, वह बहुत बड़े बाघ पर चढ़ा चला आ रहा है। बाग के उस पार ही उसे देख लिया है हमने। अब तो वह गांव की सीमा तक पहुंच गया होगा।' उनकी बात सुनकर मुझे हंसी आ गई।"

"बाघ की बात सुनकर भी आप हंस पड़े काका ?"—बच्चों ने पूछा।

"अरे, हंसता नहीं तो क्या करता ? गांव वाले व्यर्थ ही इसे अपनी इज्जत का प्रश्न बना रहे थे। जब तक गोनू काका हैं। बोलो, क्या गांव के नाम पर बट्टा लग सकता था।"—काका मुसकराए।

"फिर क्या हुआ काका ?"—बच्चों के दिल धड़कने लगे थे।

—"होना क्या था ? मैंने गांव वालों का पहले तो हौसला बढ़ाया। फिर पूछा, बाघ तो एक सजीव प्राणी है न ? वह चलेगा ही, इसमें उस तांत्रिक का क्या कमाल ? कमाल तो तुम मेरा देखना।"

'अब आप क्या करेंगे काका'—गांव वालों ने पूछा।

मैंने कहा—"करूंगा क्या ! मैं अपने मंत्र-बल से बाघ को तो बना दूंगा बकरी। फिर वह कुछ भी नहीं बिगाड़ पाएगा। ऊपर से मैं एक काम और करूंगा।"

'वह क्या ?'—गांव के लोग भौंचक्के थे।

—"वह शेर पर बैठकर आ रहा है। मैं अपनी दीवार पर बैठकर उसका रास्ता रोकने जाऊंगा।"

'मगर दीवार कैसे चलेगी काका ?'—गांव वालों ने पूछा।

"चलेगी क्यों नहीं ? आखिर गांव की इज्जत का सवाल है। फिर तुम्हारे गोनू काका अभी जिंदा हैं। अब देखिए निर्जीव वस्तु कैसे चलती है और कैसे अपना-सा मुंह लिए लौट जाता है वह तांत्रिक ! आप सब मेरे पीछे आएं। नहीं चल सकें तो, दौड़ें। मैं उसे गांव की सीमा पर ही रोक लूंगा।"

"अच्छा ! तब क्या हुआ गोनू काका ?" बच्चों की उत्सुकता बहुत बढ़ गई थी।

"तब मैंने चला दिया उस दीवार को, जिस पर बैठा मैं दातौन कर रहा था। चला क्या दिया, दौड़ा दिया। मोटर गाड़ियों की तरह दौड़ चली वह निर्जीव दीवार। गांव के लोग गिरते-पड़ते उसके पीछे भागे। बाघ, बाग पार कर, गांव की सीमा में प्रवेश करने ही वाला था कि मेरी दीवार जा खड़ी हुई उसके आगे। उस पर बैठे तांत्रिक के मुख की मुसकान बरसात की धूप की तरह गायब हो गई। बाघ सचमुच बन आया बकरी। वह चार-पांच फीट ऊंची दीवार भी नहीं पार कर सका। गांव के लोग इस पार खड़े मेरा यह चमत्कार देखते रहे। तांत्रिक ने सिर झुकाकर मुझे प्रणाम किया और मुंह लटका वापस हो गया।"

"मगर बाग के पास तो कोई ऐसी दीवार अब नहीं है। क्या दीवार लौट आई थी ?"—बच्चों ने पूछा।

"तुम बहुत भोले हो ! दीवार चली ही नहीं, तो लौटकर आने का सवाल ही पैदा कहां होता है ?"—गोनू मुसकराया।

—"मगर अभी तो आपने..... ।"

—"हां, अभी मैंने कहा था, मगर वह तो सब कहानी थी। कहो, कैसी रही कहानी ?" अब सारे बच्चे खिलखिलाकर हंसने लगे।●





सौगात

किसी गांव में दो नवयुवक अपनी-अपनी बहनों के साथ रहते थे। वे बड़े गरीब थे। किसी तरह से बस गुजर-बसर हो रही थी।

एक दिन दोनों ने सोचा—'ऐसे कब तक काम चलेगा! इसलिए शहर चलना चाहिए और खूब कमाई करके लौटना चाहिए।'

जाने से पहले उन्होंने अपनी-अपनी बहन से पूछा कि शहर से क्या लाएं?

एक नवयुवक की बहन गहनों की बड़ी शौकीन थी। झट से बोली—''भइया, मेरे लिए खूब सारे गहने लाना।''

दूसरे की बहन पहले तो चुप रही। फिर सोचकर बोली—''भइया, मेरे लिए बक्स भर कर जली रोटी के छिलके लाना।''

दोनों मित्र पहुंचे परदेश। वहां कड़ी मेहनत कर, रुपया कमाने लगे। दोनों को अपनी-अपनी बहन के लिए सौगात ले जाने की चिंता थी। इसलिए पहला मित्र जल्दी से कच्चा-पक्का बनाकर खाता और काम पर भाग जाता। शाम को थका-हारा लौटता और उल्टा-सीधा बनाकर खा लेता।

दूसरा रोज बैठकर रोटी जलाता। उनके छिलके उतार कर रखता। फिर बची रोटियों को खाकर काम पर जाता।

इसी तरह काफी दिन बीत गए। रक्षाबंधन के कुछ दिन पहले दोनों गांव लौटे। राखी के दिन शौकीन लड़की ने अपने सभी गहने पहने। गांव भर को दिखाने के लिए निकली। दूसरा नवयुवक बहन से राखी बंधवाकर गांव वालों से मिलने-जुलने गया। सभी ने उसे देखकर कहा—''वाह! तुम्हारी देह तो तपे सोने जैसी दमक रही है। परदेश से खूब तगड़े होकर लौटे हो।''

शौकीन लड़की को देख, लोगों ने कहा—''चलो, इसके भाई से मिल आएं। वह तो आया नहीं हमसे मिलने।''

सब उसके घर गए। वहां देखा कि वह चारपाई पर पड़ा था। जोर-जोर से हांफ रहा था। उसकी देह बीमारी और कमजोरी से पीली पड़ गई थी। बहुत दुबला हो गया था। लोगों ने कहा—''बेचारा कैसा सूख गया है!''

एक बहन गांव भर में अपने गहने दिखाती फिरती थी। दूसरी अपने भाई को देख-देख खुश होती रही।

नाले की शादी

एक नाला था। नाम था बैरगिया नाला।

बरसात में वह पानी से लबालब भर गया। उसने इधर, उधर देखा—चारों ओर पानी ही पानी। वह गर्व से भर उठा। सोचा—'मैं कितना धनी हूं!'

यह सोच, वह जा पहुंचा गंगा के तीर। गंगा माता ने पूछा—''कहो बैरगिया, कैसे आए?''

धृष्ट नाले ने अकड़कर कहा—''मेरा रूप देखा? मेरी सम्पत्ति देखी?''

गंगा ने नजर उठा देखा उसके फैलाव को। बोलीं—''हां, देखा।''

बैरगिया बोला—''मुझसे शादी करोगी?''

गंगा माता ठहरीं धीर-गम्भीर। बोलीं—''शादी ब्याह तो गर्मियों में होते हैं। तब आना मेरे पास।''

खुश होकर बैरगिया चारों ओर नाचता फिरा।

गर्मी आते-आते नाले का सारा पानी सूख गया। कैसे जाता वह गंगा जी के पास! गंगा उस धृष्ट की मूर्खता पर हंसती रहीं।

— प्रभाकर द्विवेदी

पंखों पर निशान

—प्रकाश मनु

हजारों साल पहले पहाड़ों पर हिमलोक बसा था। मनुष्यों की आबादी तो बहुत कम थी, पशु-पक्षी ही वहां ज्यादा थे। हिमलोक में सर्दी बहुत पड़ती थी।

एक बार जाड़ा कुछ अधिक ही पड़ा। बर्फ के सिवा दूर-दूर तक कुछ नजर नहीं आता था। बस, तेज बर्फीली हवा की सनसनाहट और पत्तों की खड़खड़ कभी-कभी सुनाई दे जाती। खरगोश और मुर्गियां जो पहले इधर-उधर घूमते नजर आ जाते थे, अब सर्दी से बचाव के लिए गुफाओं में छिप गए थे।

रात को खरगोश जमीन के अंदर बनी, बर्फ से ढंकी गुफाओं में छिपे सो रहे थे। तभी बाहर खट-खट की आवाज हुई। एक खरगोश ने मुंह बाहर निकालकर देखा, तो उसे चील नजर आई। उसने झट अपने साथियों को खबर की—"सावधान! एक चील झपट्टा मारने के लिए आई है।"

डर के मारे खरगोश और भीतर छिप गए।

कुछ देर में फिर खट-खट की आवाज हुई। साथ ही सुनाई दिया—"गुफा का द्वार खोलो। हमें अंदर आने दो।"

"लेकिन क्यों? तुम क्या चाहती हो?"—उसी खरगोश ने पूछा।

"बाहर बहुत सर्दी है। मुझे भीतर आने दो. . ."—चील ने सर्दी से कांपते हुए कहा।

—"लेकिन भीतर तो पहले ही जगह कम है। वैसे भी तुम्हारा क्या भरोसा?"

"नहीं-नहीं, मेरा विश्वास करो। मैं वचन देती हूं।"—चील ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

खरगोशों ने कुछ देर आपस में विचार किया। फिर गुफा के द्वार के आगे रखा छोटा पत्थर सरका दिया। चील अंदर आ गई। वहां गरमी थी। उसे काफी चैन मिला। बोली—"तुमने बड़ी कृपा की। मेरे प्राण बचा लिए।"

चील ने भी अपना वचन निभाया। जब तक वहां रही, किसी खरगोश को छुआ तक नहीं। इसी तरह दिन बीतने लगे।

इसी बीच एक दूसरी चील ने मुर्गियों के घर दस्तक दी। मुर्गियां भी खरगोशों के बिल के पास ही दूसरी गुफा में रहती थीं। उन दिनों मनुष्य उन्हें पालते नहीं थे।

खट-खट-खट की आवाज सुनकर एक मुर्गी ने पूछा—"तुम कौन हो? क्या चाहिए?"

"मैं चील हूं। भीतर आना चाहती हूं, बाहर बहुत ठंड है।"—चील ने कहा।

—"लेकिन तुम्हारा क्या भरोसा? तुम हमें ही खा जाओ तो. . .?"

—"मैं वचन देती हूं, किसी मुर्गी को छुऊंगी नहीं। मुझ पर दया करो।"

कुछ देर सोच-विचार के बाद मुर्गियों ने चील के भीतर आने के लिए रास्ता बना दिया। चील की हालत बहुत खराब थी। पंखों पर बर्फ जमी हुई थी। भीतर की गरमी से उसे राहत मिली। बोली—"सचमुच, आप लोगों ने मुझे बचा लिया, नहीं तो . . .!"

दूसरी चील ने भी अपना वचन निभाया। मुर्गियों को नहीं मारा। मुर्गियों के साथ हिल-मिलकर रहने लगी।

कुछ समय बाद जाड़ा कम हुआ। धूप



निकली। मौसम खुल गया। जानवर एक-एक कर बाहर निकले। सभी सूरज का दर्शन कर, खुली धूप का आनंद ले रहे थे। फिर से हर ओर चहल-पहल नजर आने लगी।

मुर्गियां और खरगोश भी बाहर निकल आए। मेहमान चीलें अब वापस जाना चाहती थीं। पहली चील ने खरगोशों से कहा—''आप लोगों ने मुझे इतने प्रेम से रखा है। मैं यह बात भूलूंगी नहीं। मैं वचन देती हूं, आगे भी यह दोस्ती बनी रहेगी। मैं खरगोशों को कभी नहीं खाऊंगी। आपको मुझसे डरने की जरूरत नहीं है।''

''लेकिन हमें मालूम कैसे पड़ेगा कि तुम वही हमारी दोस्त चील हो? कैसे पहचानेंगे?''—खरगोश ने पूछा।

चील ने एक क्षण सोचा। फिर कहा—''अपने पंजों से मेरे पंखों पर खरगोश का निशान बना दो। जैसे ही मैं आऊंगी, दूर से वह निशान देखकर समझ जाना, मैं तुम्हारी दोस्त चील हूं। फिर बैठकर कुछ देर गपशप करेंगे। अच्छा लगेगा।''

खरगोशों को यह बात पसंद आई। झट से एक खरगोश ने अपने पंजे से चील के पंखों पर खरगोश जैसी आकृति बना दी। देखकर बाकी खरगोश मुसकराने लगे। चील भी मुसकराती हुई, फिर आने का वादा करके चली गई।

उधर दूसरी चील भी जाने लगी, तो उसने मुर्गियों से कहा—''मैं आपका अहसान कभी भूलूंगी नहीं। वचन देती हूं, आपको कभी नुकसान नहीं पहुंचाऊंगी।''

''लेकिन हम पहचानेंगी कैसे कि तुम वही दोस्त चील हो?''—मुर्गियों ने पूछा।

''ऐसा है, तुम अपनी चोंच से मेरे पंखों पर मुर्गी जैसी आकृति बना दो। बस, फिर तुम दूर से मुझको देखकर पहचान लोगी। मुझे देखकर तुम्हें भागकर छिपना नहीं पड़ेगा।''—चील ने कुछ सोचकर कहा।

''हां, यह ठीक है।''—मुर्गियों ने कहा। एक मुर्गी ने अपनी चोंच से चील के पंखों पर मुर्गी का चित्र बना दिया। दूसरी मुर्गी ने अपनी चोंच से उसे कुछ और गहरा कर दिया। चील 'अलविदा' कह, उड़ती हुई चली गई।

दोनों चीलें उड़ते-उड़ते पहाड़ की एक ही चोटी पर पहुंचीं। दोनों ने एक-दूसरे को देखा। पहली चील ने दूसरी से पूछा—''क्या तुमने मुर्गियों के घर शरण ली थी?''

''हां, लेकिन तुम्हें कैसे पता?''—दूसरी चील ने पूछा।

पहली चील ने पंखों पर बनी मुर्गी की आकृति की ओर इशारा कर दिया।

दूसरी चील बोली—''फिर तो तय है, तुमने खरगोशों के घर शरण ली होगी?''

दोनों ने अपने-अपने अनुभव बताए। पहली चील सोच रही थी—'अगर हम खरगोश और मुर्गियों को नहीं खाएंगी, तो काम कैसे चलेगा?' उसने दूसरी चील से मन की बात बताई।

दूसरी चील ने कुछ सोचकर कहा—''लेकिन इसका रास्ता तो बहुत आसान है। तुमने खरगोशों को दोस्ती का वचन दिया है और मैंने मुर्गियों को। इसलिए तुम मुर्गियों का शिकार करना और मैं खरगोशों का करूंगी।'' पहली चील को यह बात जंच गई।

कुछ दिन बाद दोनों चीलें उड़ती हुई नीचे आईं। मुर्गियों और खरगोशों ने उनके पंखों पर बने निशान देख लिए थे। वे उत्साहित होकर चीलों का स्वागत करने बाहर निकले। लेकिन पहली चील ने देखते ही देखते मुर्गियों पर झपट्टा मार दिया और दूसरी ने खरगोशों पर। तीन-चार मुर्गियां लहूलुहान हो गईं। कुछ खरगोश भी बेदम होकर लुढ़क गए। खरगोशों और मुर्गियों ने चिल्लाकर कहा——''तुमने तो दोस्ती का वचन दिया था। इतनी जल्दी भूल गईं?''

इस पर पहली चील ने कहा—''मैंने अपना वचन कहां तोड़ा? दोस्त खरगोशों को तो कुछ नहीं कहा, सिर्फ मुर्गियों को मारा है।''

दूसरी चील ने कहा—''मैंने दोस्त मुर्गियों को तो

छुआ तक नहीं। हां, खरगोशों को मारा है।''

मुर्गियां और खरगोश उनकी चालाकी समझ गए। दौड़कर अपनी-अपनी छिपने की जगहों पर चले गए।

कुछ देर बाद मुर्गियां बाहर निकलीं। उन्होंने खरगोशों को भी आवाज दी। सब मिलकर सोचने लगे—'चीलों ने तो अपना वचन नहीं निभाया। अब हम क्या करें?' काफी देर तक सोच-विचार होता रहा। आखिर में सबने मिलकर तय किया—'अब चीलें आएंगी, तो हम बाहर नहीं निकलेंगे।'

उधर चीलों ने सोचा—'आज तो काफी फजीहत हुई। मुर्गियों और खरगोशों ने चिल्ला-चिल्लाकर ताने दिए। क्यों न पंखों पर बने निशान ही मिटा दिए जाएं? फिर मुर्गियों और खरगोशों को कुछ पता ही नहीं चलेगा। न वे हमें पहचान पाएंगे, न शिकायत ही करेंगे।'

फौरन चीलों ने अपने पंजों से एक-दूसरे के पंखों पर बने निशान मिटा दिए।

इसके बाद भी चीलें बहुत बार आईं। मुर्गियां और खरगोश उन्हें देखते ही छिप जाते थे। फिर भी चीलों को कोई न कोई शिकार तो मिल ही जाता था। यह देख, मुर्गियां और खरगोश दुखी होते।

एक-एक कर दिन बीतते गए। आखिर गरमियां खत्म हुईं। फिर जाड़ा आया। बर्फीली हवाएं चलने लगीं। इस बार भी कंपकंपा देने वाली कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। पहाड़ की चोटी पर इतनी सर्दी थी कि पंखों में उड़ने की ताकत ही न रही। फिर भी दोनों चीलें किसी तरह हिम्मत करके उड़ती हुईं, निचली घाटियों में आईं।

मुर्गियां और खरगोश इस बार भी पहले की तरह गुफाओं में रह रहे थे। पहली चील खरगोशों की गुफा के आगे आ खड़ी हुई, दूसरी मुर्गियों की गुफा के आगे। एक साथ दोनों जगह खट-खट हुई और फिर आवाज सुनाई पड़ी—''खोलो, द्वार खोलो।''

खरगोशों ने पहले वाली चील को बाहर खड़ा देखा, तो कहा—''तुमने अपना वचन नहीं निभाया। हम द्वार नहीं खोलेंगे।''

''पर मैंने तुम्हें तो नहीं खाया, मुर्गियों को खाया था।''—चील ने चतुराई से कहा।

''अच्छा!... लेकिन तुम्हारे पंखों पर वह निशान कहां हैं, जो हमने पंजों से बनाया था। इसका क्या सबूत कि तुम वही चील हो?''—खरगोशों ने पूछा।

सुनकर चील शर्मिंदा हो गई। वह उसी तरह बाहर खड़ी, अंदर आने के लिए गिड़गिड़ाती रही। दूसरी चील का भी यही हाल था। मुर्गियों ने उसे अंदर नहीं आने दिया था। उसके पंखों पर भी भला अब निशान कहां बाकी रह गए थे?

उस रात पहले से भी ज्यादा ठंड पड़ी। चीलों ने पेड़ों के पत्तों में छिपकर बचाव करना चाहा, लेकिन सर्दी से अपनी रक्षा नहीं कर पाईं। सुबह तक वे बिलकुल बेदम होकर गिर पड़ीं। पंखों पर बरफ की मोटी तहें जमा थीं।

आखिर खरगोशों को दया आ गई। उन्होंने मुर्गियों से भी कहा। खरगोश पहली चील को अंदर ले गए, दूसरी को मुर्गियों ने शरण दी। भीतर ठंड का नामोनिशान न था। कुछ ही देर में दोनों चीलें स्वस्थ हो गईं। उन्होंने कहा—''हमारे पंखों पर फिर से निशान बना दो। अब हम तुम्हारी दोस्त बनकर रहेंगी।''

इस बार खरगोश और मुर्गियों ने निशान तो बना दिए, लेकिन चीलों से कह दिया—''हम तुम्हारे दोस्त कभी नहीं बन सकते। ये निशान तुम्हारी पहचान के लिए हैं, ताकि तुमसे हम सावधान रहें।''

चीलों ने कहा—''हम दोस्त क्यों नहीं बन सकते?''

एक बुद्धिमान खरगोश बोला—''हम तुम्हारा आहार हैं। यह दोस्ती केवल एक छलावा है। अब तुम जाओ।''

चीलें क्या कहतीं? वे जब तक कुछ सोचतीं, मुर्गियां और खरगोश अंदर जा छिपे थे। चीलें अपना-सा मुंह लेकर उड़ गईं। तब से अब तक उनमें कभी दोस्ती नहीं हुई। ●

Scanned with CamScanner

चटपट

● मरीज—डाक्टर साहब, मैं सोते-सोते पलंग से गिर जाता हूं ।
डाक्टर—तो उस बढ़ई के पास जाइए, जिसने पलंग बनाया है ।

● पिता—मुन्नू, गांधी जी ने आज के दिन नमक कानून तोड़ा था ।
मुन्नू—और आज के दिन अपने छुटकू ने नमकदानी तोड़ दी ।

● अध्यापक—आज पेट में दर्द है, सबकी छुट्टी ।
अमित—आखिर भगवान ने हमारी सुन ली ।

● सरकस वाला—यह बौना कल छह फीट का था और आज छह इंच का हो गया है ।
दर्शक—चुप रहो । कहीं यह बिल्कुल ही गायब न हो जाए ।

● यात्री—ड्राइवर, बस रोको । मेरा स्टैंड तो पीछे रह गया ।
ड्राइवर—आज किसी का स्टैंड नहीं आएगा । बस के ब्रेक खराब हो गए हैं ।

● भिखारी—सुबह से पुकार रहा हूं, पर कोई सुनता ही नहीं ।
अमित—कहीं और जाओ बाबा, यहां सब कम सुनते हैं ।

● मदारी—आज मेरा बंदर नाराज है । खेल नहीं दिखाएगा ।
दर्शक—ठीक है, तुम रफूचक्कर हो जाओ । नहीं तो हम भी नाराज हो जाएंगे ।

● रमन—उधर बादल घिरे हैं, इधर धूप निकल रही है ।
चमन—इसे कहते हैं, सूरज और बारिश की जुगलबंदी ।

● एक पड़ोसी—मैं फिर कहता हूं, रेडियो धीमा बजाया करो । नहीं तो. . .
दूसरा पड़ोसी—मैं फिर कहता हूं, रेडियो के सुर में सुर न मिलाया करो, नहीं तो. . .

● रजत—बाप रे गरमी, कैसे भी चैन नहीं ।
अजय—मेरी मानो, कुछ देर के लिए मुंह बंद करके देख लो । शायद चैन मिल जाए ।

● अम्मा—राम-राम करके दिन तो बीत गया ।
मुन्नी—अम्मा, रात कैसे बिताओगी ? नींद में क्या कहोगी ?

● श्यामल—तूने मेरी पेंसिल फिर क्यों छिपा दी ?
विमल— तुम उसे ब्रश समझकर दीवार पर चित्रकारी जो कर रहे थे ।



तेनालीराम २७१

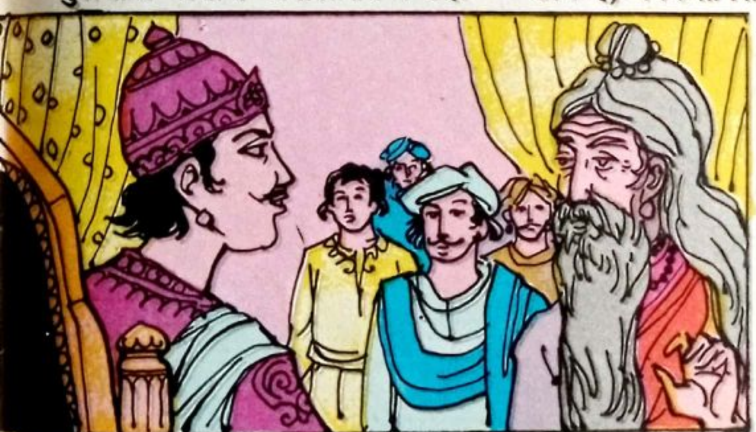
राजा की बीमारी



एक बार राजा कृष्णदेव राय को अनिद्रा रोग हो गया। उन्हें नींद ही नहीं आती थी। रात को बिस्तर पर करवटें बदलते रहते। रानी पास बैठकर पंखा झलतीं। सेवक तलुओं में चमेली के तेल से मालिश करते, मगर ठीक से नींद न आती।

दिन में वैद्य-हकीम राजा को देखने आते। तांत्रिक तंत्र-विद्या से राजा को सुलाना चाहते, मगर सब बेकार। राजा के मन की शांति के लिए जाप कराए गए। यज्ञ हुए, लेकिन वे भी बेकार गए।

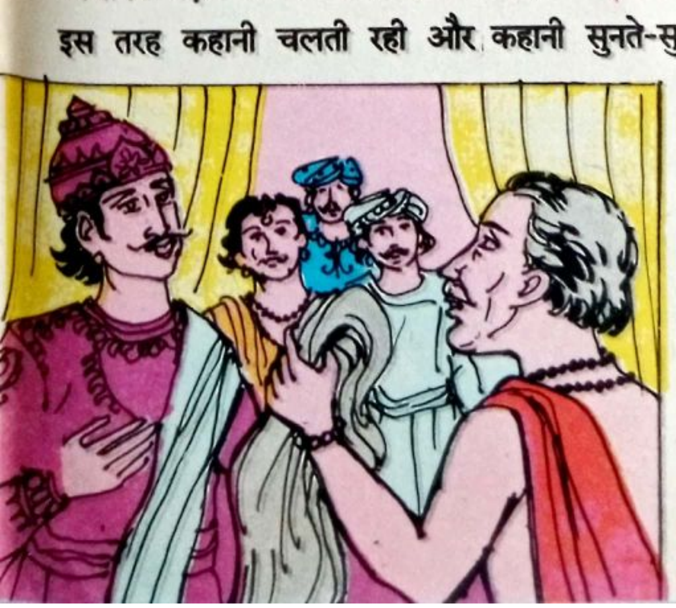
मंत्री, पुरोहित, सेनापति सलाह करने लगे। उन्होंने आपस में कहा—"तेनालीराम को बुलवाओ। वही कोई उपाय ढूंढ़ेगा।" उसे बुलवाया गया। तेनालीराम ने कहा—"ठीक है, मैं किसी सिद्ध-महात्मा से इसका इलाज पूछकर आता हूं।" कहकर वह चला गया।



दूसरे दिन दरबार में लम्बी दाढ़ी, कमर तक लटकती जटाएं, भस्म रमाए एक महात्मा आए। बोले—"राजन, आपकी बीमारी का इलाज मेरे पास है, मगर मुंह मांगी चीज लूंगा बदले में।" राजा मान गए। महात्मा के कहने के अनुसार उस रात राजा का पलंग ऐसी जगह बिछाया गया, जहां से चांदनी बिखराता चंद्रमा साफ नजर आ रहा था। राजा पलंग पर लेट गए। साधु राजा के सिरहाने बैठ गए। और कोई पास में नहीं था।



महात्मा बोले—"राजन, बहुत दिन पहले एक राजा को ऐसा ही रोग हुआ था। एक रात वह उठकर चल दिए। चलते गए-चलते गए।" राजा ने पूछा—"कहां गए ?" महात्मा बोले— "चलते-चलते पहुंचे पर्वत की कंदरा में। फिर अचानक उड़ने लगे।" राजा चौंका। बोला—"फिर क्या हुआ ?" इस तरह कहानी चलती रही और कहानी सुनते-सुनते राजा को नींद आ गई।



दूसरे दिन दरबार में राजा ने महात्मा को बुलाया। कहा—"आपकी कहानी ने चमत्कार कर दिया।" महात्मा बोले—"महाराज, युगों से कहानियां यही चमत्कार करती आ रही हैं। अब आप रात को कहानियां सुना करें। बस, नींद आ जाएगी।" राजा ने पूछा—"आपको क्या पुरस्कार दूं ?" महात्मा बोले—"पुरस्कार तो मैं आपसे लेता ही रहता हूं महाराज। आज आप पुरोहित जी को पुरस्कार दे दें, इन्हें बहुत दिन से पुरस्कार नहीं मिला।" यह कहकर महात्मा ने अपनी नकली दाढ़ी और जटाएं हटा दीं। तेनालीराम को इस वेश में देखकर सभी मुसकराने लगे।

कॉलेज में बायोलॉजी लें या जियोलॉजी दोस्तों में टॉपर बनने के लिए क्लिअरेसिल है कम्पल्सरी.



क्योंकि क्लिअरेसिल त्वचा यानी ज़्यादा साफ़ त्वचा.

विषय जब दोस्त बनाने का हो, क्लिअरेसिल ऐसा फॉर्मूला है जो कभी फेल नहीं जाता.

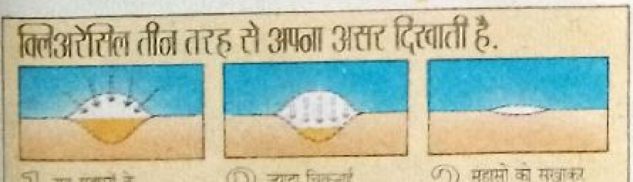
जब त्वचा ज़्यादा साफ हो तब अपने आप सबकी नजरें आपकी तरफ खिंची चली आती हैं.

क्लिअरेसिल तीन तरह से मुंहासों पर अपना असर दिखाती है.

एक-यह मुंहासों के अन्दर तक जाती है. दो-ज़्यादा चिकनाई हटाती है. और तीन-मुंहासों को सुखाकर मिटा देती है.

क्लि अ रे सि ल त्व चा, ज़्या दा सा फ़ त्व चा. क्लि अ रे सि ल त्व चा, ज़्या दा सा फ़ त्व चा.





बात साफ़ है, मुंहासों के लिए क्लिअरेसिल से बेहतर कोई और इलाज नहीं.

मुंहासों को अपने रास्ते की रुकावट मत बनने दीजिए.

क्लिअरेसिल लगाइए, और मित्र बनाने के साइन्स में फर्स्ट-क्लास नम्बर पाइए.



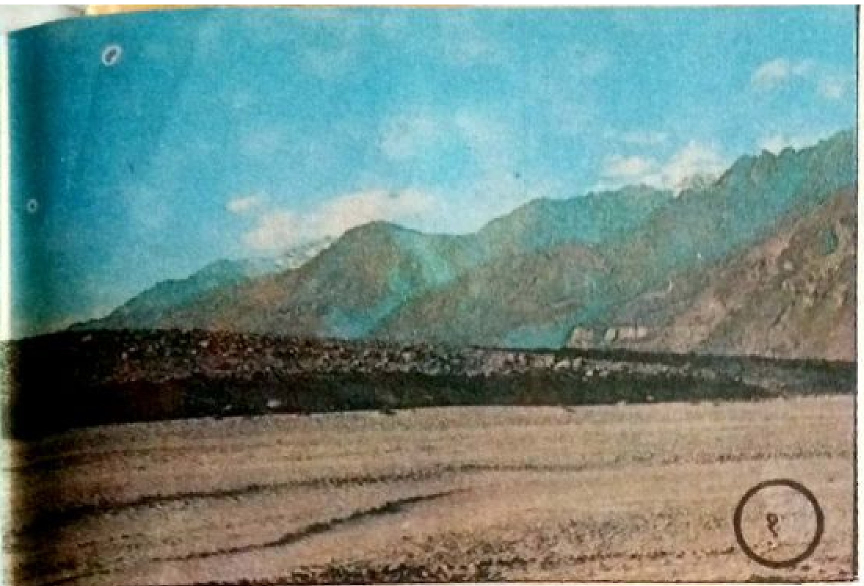
मुंहासों के लिए इससे बेहतर कोई और इलाज नहीं.

Enterprise/PG/CC/P/1/Hn d



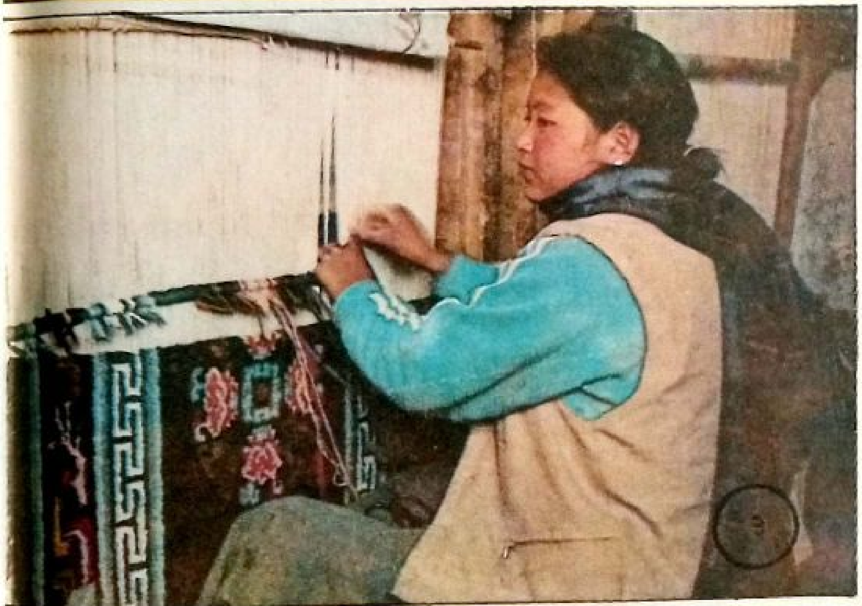
हंसिए हंसाइए

मलट पेपर पर चिपकाकर सुखाइए। बिंदुओं पर से काटकर दोनों ओर धागा बांधिए। चेहरे पर लगाइए।

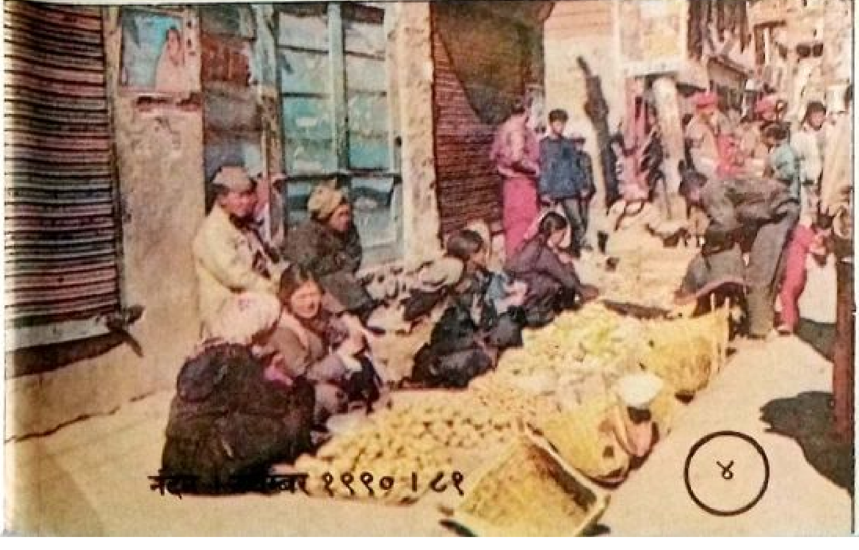


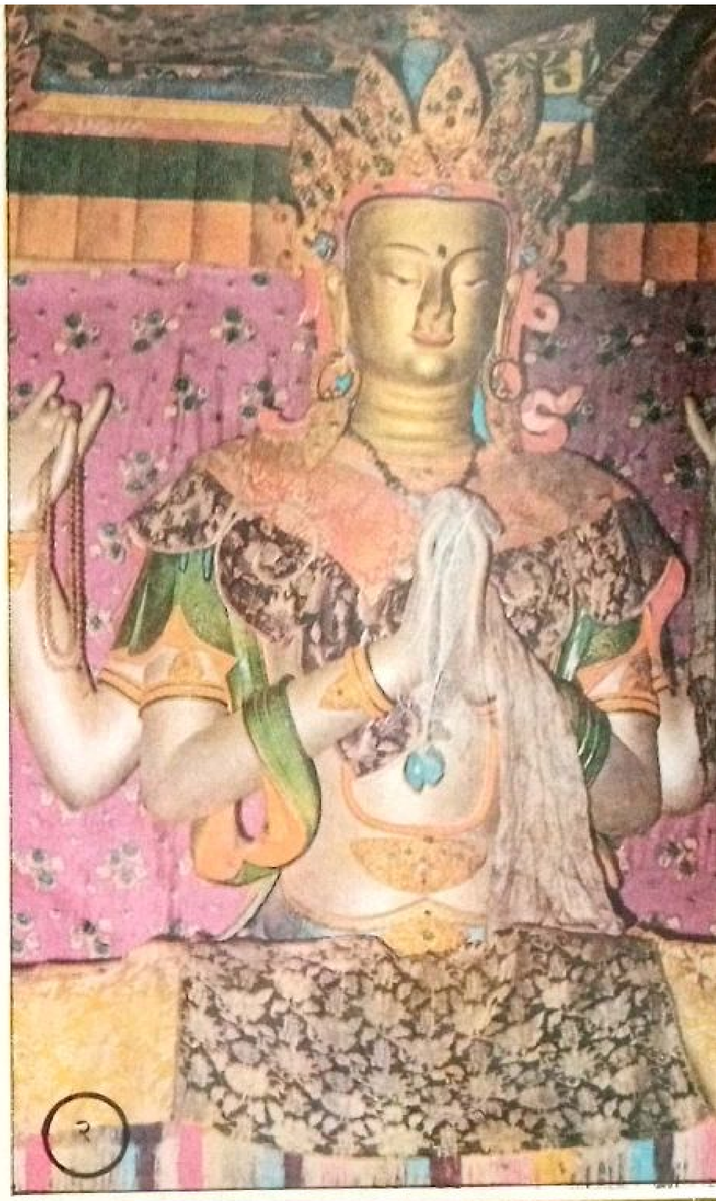
लेह

देश का सबसे ऊंचा नगर



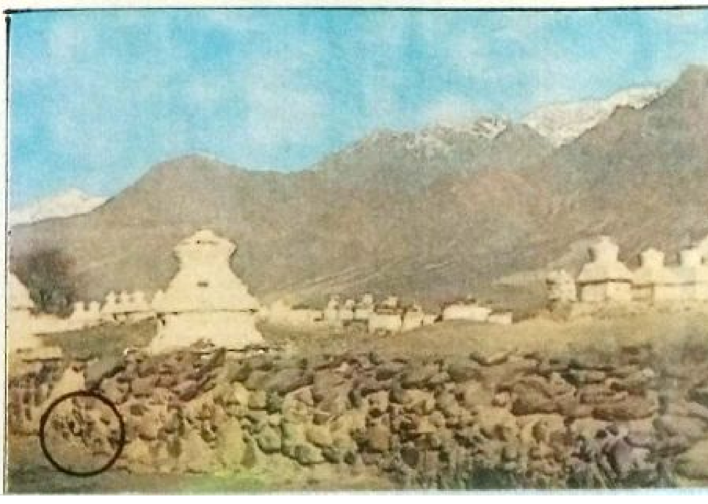
१-छटा नूब्रा घाटी की; २-गोम्पा में बुद्ध प्रतिमा; ३-कालीन बुनना घरेलू काम; ४-लेह में सब्जी बाजार; ५-कोरटेन्स ।





दूर-दूर तक बर्फ ही बर्फ । सर्दी इतनी कि नदी-नाले जमे हुए । मटियाले पर्वतों का लम्बा सिलसिला । यह स्थान है लद्दाख । इसका प्रमुख नगर है लेह । समुद्र तल से ११,५०० फुट ऊंचा । यह प्रदेश बौद्ध धर्म का अनुयायी है । प्राचीन बौद्ध गोम्पा यहां हैं । सोने से बनी सबसे ऊंची बुद्ध प्रतिमा लेह का आकर्षण है ।

चित्र : अनिल महरोत्रा



रंग चाल

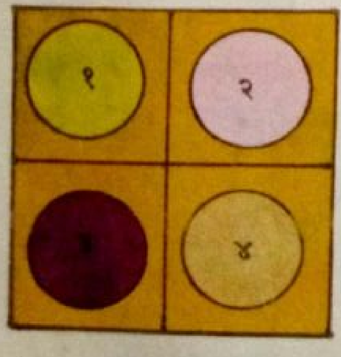
चार खिलाड़ी, चार गोटियां। पहली गोटी एक नम्बर वाली, दूसरी दो नम्बर वाली, तीसरी तीन नम्बर वाली और चौथी चार नम्बर वाली।

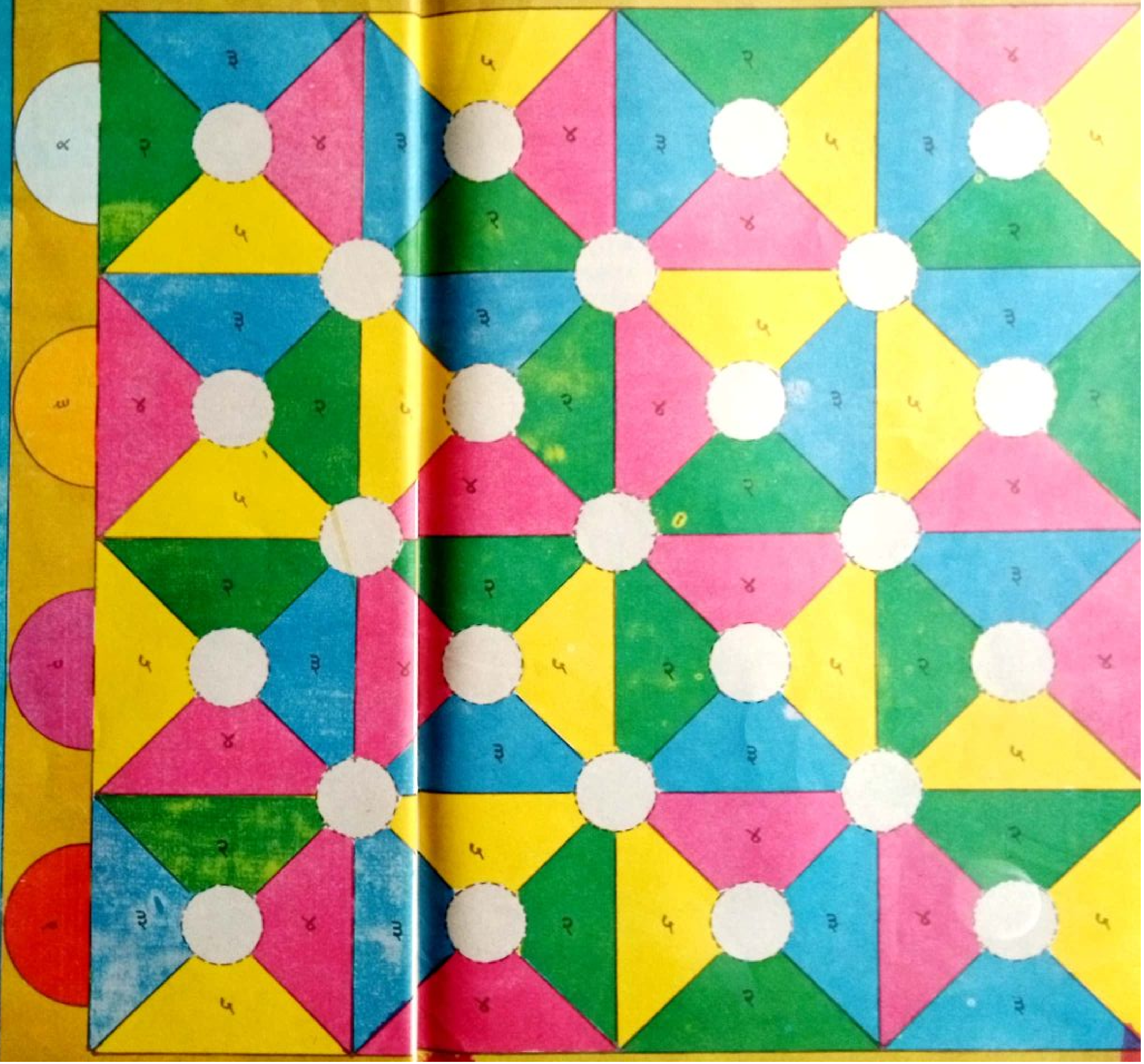
हर खिलाड़ी की एक-एक गोटी। हर गोटी के दो घर। एक इस पार, दूसरा उस पार। बीच में रंग-रंग के तिकोनों से बना मैदान। हर गोटी उन तिकोने से होती, अपने दूसरे घर जाएगी।

एक तिकोने से दूसरे तिकोने में जाने के लिए गोल चौराहे से रास्ते बने हैं।

हर तिकोने पर नम्बर पड़े हैं। पासा फेंकने पर जिस तिकोने का नम्बर आएगा, गोटी उसी तिकोने से होकर आगे बढ़ सकेगी। अब यह आपकी सूझ-बूझ पर निर्भर है कि अपनी गोटी को शीघ्र से शीघ्र दूसरे घर पहुंचाने के लिए कौन-से तिकोने का उपयोग करते हैं।

जिसकी गोटी सबसे पहले अपने दूसरे घर पहुंचेगी, वही विजयी माना जाएगा।



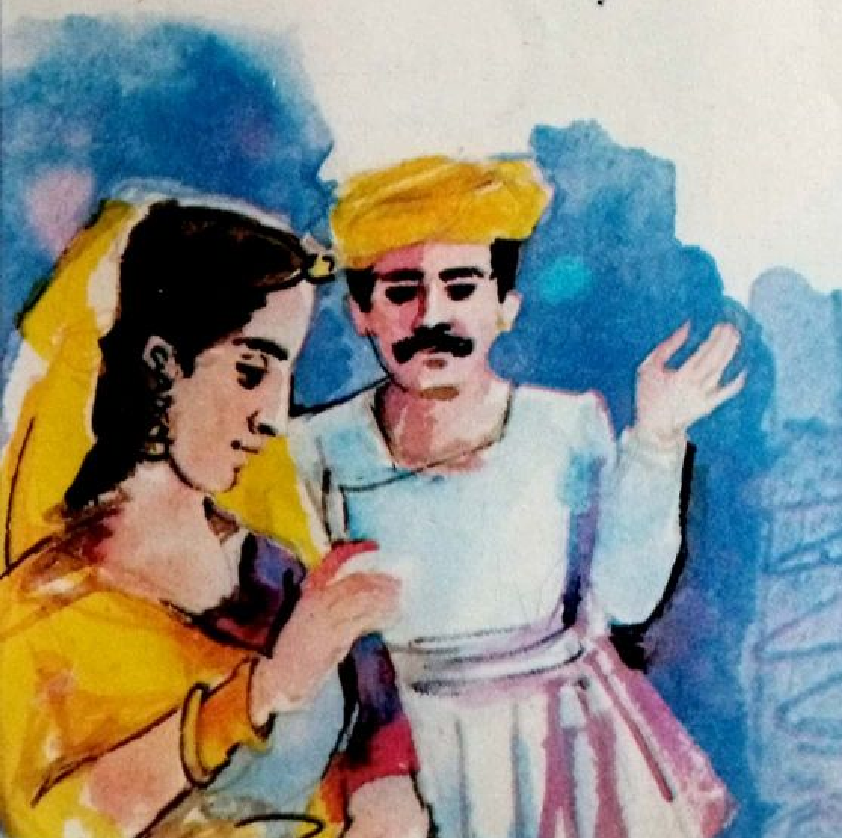


रुको मेहमान

—मनुहरि पाठक

बहुत पहले की बात है। उन दिनों एक गांव से दूसरे गांव जाने के लिए बैलगाड़ियों से सफर करना पड़ता था। गुजरात के व्यापारी माल खरीदने के लिए बड़े शहरों तक पैदल या बैलगाड़ियों से ही जाते थे। सोमनाथ के पास एक गांव था। वहां पर डाह्याभाई पटेल की एक दुकान थी। दुकान में दालें, अनाज, मसालों के साथ घर-गृहस्थी की जरूरत का सामान भी मिलता था। गांव में जो दो-चार दुकानें थीं, उनमें डाह्याभाई की दुकान जरा बड़ी थी। इस गांव से होकर आने वाले यात्री बड़ी दुकान व मकान देखकर वहां रुक जाते थे। डाह्याभाई को भी स्वागत-सत्कार करने की आदत थी। उनकी पत्नी इस बात से खुश थी कि आसपास के गांव से आने वाले उसके यहां आकर विश्राम करते हैं। प्रेम से दाल-रोटी खाकर या जलपान कर ही जाते हैं।

एक दिन डाह्याभाई ने अपनी पत्नी से कहा—"भाग्यलक्ष्मी, मैं सोमनाथ व द्वारकाजी के दर्शन करने जाऊंगा। यात्रा में परेशानी न हो, सो खाने-पीने का प्रबंध कर दे।"



भाग्यलक्ष्मी ने कहा—"मैंने तुम्हारे खाने-पीने का सामान यात्रा के हरेक पड़ाव पर पहुंचवा दिया है। तुम चिंता मत करो।" डाह्याभाई असमंजस में पड़ गए। सोचने लगे—'मुझे पता नहीं चला। और इसने सामान भेज दिया। यह कैसे हो सकता है?'

डाह्याभाई घर से चल पड़े। दस कोस चलकर वह एक गांव में रुके। उनको देखकर वहां का पटेल बड़ा खुश हुआ। चारपाई पर बैठकर दोनों ने जलपान किया। विश्राम करने के बाद डाह्याभाई उठकर जाने लगे, तो पटेल ने कहा—"आज रात यहीं आराम करो। भोजन पानी के बाद गांव वालों से भी मिलो। सवेरे उठकर जल्दी से यात्रा पर निकल पड़ना।"

रात को डाह्याभाई ने भोजन किया। बहुत खुश थे वह। चलते समय सोच रहे थे—'भाग्यलक्ष्मी ने यहां पर मेरे खाने-पीने का अच्छा इंतजाम किया।' इसी तरह वह पंद्रह दिन का लम्बा सफर करके सोमनाथ और द्वारकाजी पहुंचे। फिर दर्शन करके घर की ओर चल पड़े। इस बार भी रास्ते भर खाने-पीने की व्यवस्था बहुत अच्छी रही। सभी जगह उनका आदर-सत्कार हुआ। घर जैसा व्यवहार मिला। लेकिन एक बात उनकी समझ में नहीं आ रही थी—सब जगह भाग्यलक्ष्मी ने खाने-पीने की व्यवस्था कैसे कर दी? इस प्रश्न की उलझन को लिए वह घर पहुंचे, तो पत्नी ने हंसकर पूछा—"कहो, रास्ते में कोई तकलीफ तो नहीं हुई?"

डाह्याभाई ने कहा—"बिलकुल नहीं। तुम्हारी व्यवस्था बहुत अच्छी रही। मगर यह राज क्या है? तुमने दो दिन में इतनी दूर तक मेरे खाने-पीने का सारा सामान कैसे पहुंचवा दिया?"

भाग्यलक्ष्मी हंस दी। बोली—"सामान पहुंचाना थोड़े ही पड़ता है। भले कामों की खबर दूर-दूर तक पहुंच जाती है। मैं जानती हूं कि हमारा अतिथि सत्कार पाकर लोग भूलेंगे नहीं। यही हुआ भी।" सुनकर डाह्याभाई ने भाग्यलक्ष्मी की चतुराई की खूब प्रशंसा की। ●

करामाती अंगूठी

—अविनाशचन्द्र सेठी

राजा सुकीर्ति सिंह प्रतापी राजा थे । जैसा नाम, वैसी कीर्ति पाई थी उन्होंने । उनके एक ही पुत्र था रणवीर सिंह । राजकुमार बलवान और सुंदर था, मगर था मनमौजी ।

एक दिन रणवीर जरूरी सामान लेकर घोड़े पर बैठा । खर्च के लिए दो थैली स्वर्ण मुद्राएं लीं और चल पड़ा यात्रा पर । चलता गया, चलता गया । शाम होने पर समुद्र तट पर पहुंचा ; समुद्र की लहरों में से दो लड़के एक बक्सा निकालकर ला रहे थे ।

रणवीर ने सोचा—'जरूर इसमें कोई खजाना होगा ।' उसने लड़कों को पास बुलाया । सोने की कुछ मुद्राएं दे-कर बक्सा खरीद लिया ।

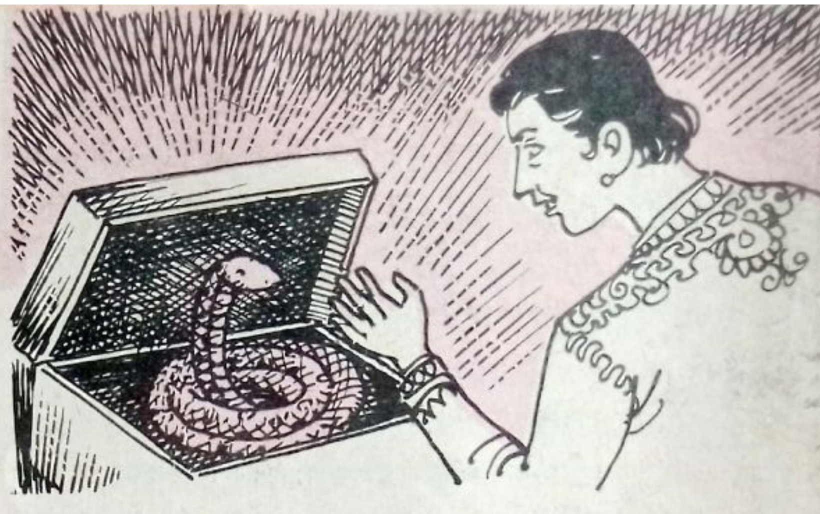
कुछ दूर जाने पर उसके मन में उत्सुकता जगी । उसने बक्से को खोलकर देखा । बक्से में एक सांप कुंडली मारे बैठा था ।

सांप मनुष्य की वाणी में बोला—''डरने की कोई बात नहीं युवक ! मैं दक्षिण देश का राजकुमार हूं । एक जादूगर ने मेरे बहुमूल्य हार के लालच में मुझे सांप बनाकर इस बक्से में बंद कर दिया । फिर उसने बक्से को समुद्र में फेंक दिया । मेरा हार लेकर जादूगर भाग गया ।''

सांप बने राजकुमार ने उसे एक मंत्र बताया । कहा—''पूनम की रात में यह मंत्र पढ़कर, यदि तुम मेरे ऊपर फूलों का पराग डाल दो, तो मैं फिर मनुष्य रूप में आ जाऊंगा ।''

रणवीर सिंह उस बक्से को लेकर चल दिया । आगे किसी सराय में जाकर ठहर गया । दो दिन बाद ही पूर्णमासी थी । वह बाग में जाकर फूलों का पराग ले आया । रात हुई । चारों ओर चांदनी छिटक गई । रणवीर ने बक्सा खोला । मंत्र पढ़कर फूलों का पराग सांप पर छिड़क दिया । वह तुरंत एक सुंदर राजकुमार के रूप में बदल गया । उसका नाम था वीरप्पा ।

वीरप्पा ने रणवीर से कहा—''मित्र, तुम मेरे साथ



चलो । कुछ दिन राज्य की सैर करना ।''

रणवीर ने वीरप्पा की बात मान ली । वह उसके साथ चला गया । सचमुच वीरप्पा का राज्य बहुत सुंदर था । रणवीर का मन वहां लग गया । वीरप्पा ने भी अपने मित्र की खूब खातिरदारी की, मगर कब तक ! एक दिन रणवीर ने कहा—''मित्र, बहुत दिन हो गए । अब मैं अपने घर जाना चाहता हूं ।''

वीरप्पा के पिता ने सुना, तो बेटे से कहा—''तुम अपने मित्र को मेरे पास लाओ । मैं उसे मुंह मांगा उपहार दूंगा ।''

वीरप्पा ने रणवीर से यह जाकर कहा । उसे सुझाव दिया—''उपहार में तुम मेरे पिता से हरे नग वाली अंगूठी ही मांगना ।''

रणवीर ने वीरप्पा के कथनानुसार हरे नग वाली अंगूठी ही मांगी । राजा उसे देना तो नहीं चाहते थे, मगर अपने वचन से पीछे कैसे हटते ? उन्होंने अंगूठी रणवीर को दे दी । फिर कहा—''इसे संभालकर रखना । यह करामाती अंगूठी है । तुम्हारी हर इच्छा पूरी कर सकती है ।''

अंगूठी पाकर रणवीर बहुत प्रसन्न हुआ । वह जाते समय वीरप्पा से गले मिला । उसे अपने राज्य में आने का निमंत्रण दे, चल पड़ा अपने नगर की ओर ।

कई दिन का रास्ता था । एक दिन थकान मिटाने के लिए एक पेड़ के नीचे बैठा । उस पेड़ पर तोता-तोती बैठे, आपस में कुछ बातें कर रहे थे । उसने अंगूठी से कहा—''बताओ, ये क्या बात कर रहे हैं ?''

तभी उसके कानों में धीरे से आवाज आई—'राजकुमार, ये दोनों बंगाल देश की राजकुमारी

अनुपमा के सौंदर्य की चर्चा कर रहे हैं। वैसी सुंदर राजकुमारी दुनिया में दूसरी नहीं।'

यह सुनना था कि रणवीर के मन में चाह पैदा हुई—'मुझे उस राजकुमारी से शादी करनी चाहिए। मगर उसे ढूंढूंगा कैसे ? कौन बताएगा उसका पता। कैसे मिलूंगा उससे ?' वह मन ही मन तर्क-वितर्क करने लगा। तभी उसे ध्यान आया, करामाती अंगूठी की शक्ति का। उसने अंगूठी से कहा—"मुझे बंगाल देश की राजकुमारी के महल के पास पहुंचा दो।"

अंगूठी ने करामात दिखाई। अगले ही पल वह एक आलीशान महल के पास खड़ा था। महल की दीवारें ऊंची-ऊंची थीं। बाहर चारों ओर गहरी खाई थी। पानी में मगरमच्छ तैर रहे थे। मुख्य द्वार पर नंगी तलवार लिए पहरेदार खड़े थे। उसने अंगूठी से कहा—"मुझे राजकुमारी के महल में पहुंचा दो।"

कुछ क्षण बाद वह राजकुमारी के महल में था। राजकुमारी ने एक अनजान युवक को देखा, तो उसे अपने पास बुलाया। पूछा—"कौन हो तुम ? यहां कैसे आए हो ?"

रणवीर ने अपना पूरा परिचय देकर कहा—"मैं राजकुमारी अनुपमा से मिलने आया हूं। उनकी सुंदरता का वर्णन सुन, मैंने निश्चय किया है कि राजकुमारी से शादी करूंगा।"

अनुपमा यह सुनकर आश्चर्य में थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि पहरेदारों की नजर बचाकर यह महल में कैसे आ पहुंचा ? उसने समझा—'यह बहुत साहसी है।' राजकुमारी बोली—"मैं ही अनुपमा हूं। मैं भी तुम जैसे साहसी राजकुमार की खोज में थी। शादी करने से पहले तुम्हें मेरी परीक्षा में उत्तीर्ण होना पड़ेगा।"

राजकुमार ने बात मान ली। राजकुमारी बोली—"इस नगर के बाहर जो समुद्र है, उसके बीच एक बड़ा टापू है। क्या तुम हफ्ते भर में वहां आलीशान महल बनवा सकते हो ?"

रणवीर बोला—"हफ्ते भर में नहीं, सिर्फ एक रात में। तुम मुझे वहां भिजवाओ।"

अब राजकुमारी चकराई, भयभीत भी हुई। उसे लगा, यह अवश्य कोई जादूगर है। वेश बदलकर मुझे ठगने आया है। फिर भी वह चुप रही।

रात होने पर रणवीर ने अंगूठी की सहायता से वहां एक आलीशान महल खड़ा कर दिया। सुबह राजकुमारी ने देखा, तो उसे यह सब एक सपना-सा ही लगा। राजकुमारी खोज में लग गई। वह इस चमत्कार का रहस्य जानना चाहती थी। उसने राजकुमार से मीठी-मीठी बातें कीं, तो उसे अंगूठी की करामात का पता चल गया। बस, रात को राजकुमार गहरी नींद में सो गया, तो अनुपमा ने अंगुली से अंगूठी निकालकर छिपा दी।

दूसरे दिन अनुपमा ने कहा—"एक शर्त और है। एक आदमखोर शेर ने बड़ा उत्पात मचा रखा है। तुम्हें उसे मारना होगा। इसके बाद शादी पक्की।"

रणवीर को तो अंगूठी पर भरोसा था। वह तलवार लेकर चल दिया। जंगल में पहुंचकर उसने अंगुली की ओर देखा। अंगूठी तो गायब थी। उसके होश फाख्ता हो गए। अब क्या हो, मगर यूं भागना भी ठीक नहीं था। वह किसी भी कीमत पर राजकुमारी को पाना चाहता था।

शेर से उसकी लड़ाई हुई। बुरी तरह घायल हो गया रणवीर, मगर शेर को उसने मार गिराया। फिर उसके कान और पूंछ काटकर ले आया राजकुमारी के पास।

राजकुमारी रणवीर को देखकर प्रसन्न थी। उसके घावों पर राजकुमारी ने स्वयं दवा लगाकर पट्टी बांधी। उसे अंगूठी वापस करते हुए कहा—"मैंने इसे जान-बूझकर छिपाया था। मैं देखना चाहती थी कि तुम जादू के बिना कुछ और भी करके दिखा सकते हो या नहीं ? अब मैंने देख लिया—तुम साहसी ही नहीं, अपनी बात के पक्के भी हो।"

राजा-रानी अपनी बेटी की पसंद को मान गए। उन दोनों का विवाह हो गया।

●

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

ऊपर से नीचे

१. पहले उन्होंने फूल—, फिर अंदर आईं। (गिने/चुने)

७. भगवान विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक।

११. हां,— में ही देर हो गई हमें। (लाने/जाने)

बाएं से दाएं

२. वह— गया, तभी छोड़ा मैंने। (फूट/टूट)

३. रोग— में है, तो इसी का इलाज करो। (तन/मन)

४. सैनिक— लेकर वहां आ खड़ा हुआ। (घोड़ा/कोड़ा)

५. वहां जाकर एक— ले आ। (ज़ाल/थाल)

६. इतनी देर तक— का कारण क्या है? (रोने/सोने)

८. कहो तो, इन कबूतरों को— दें। (उड़ा/लड़ा)

९. इसे— कर ही जाना चाहिए। (सीख/देख)

१०. सुबह-सुबह गधा मालिक के साथ— जा पहुंचा। (हाट/घाट)

१२. एक प्राचीन हथियार।

---------------------------- काटिए

'नंदन' ज्ञान-पहेली : २६३

नाम ____________________

आयु ______ पता ____________________

____



नं.ज्ञा.प.२६३


अब
सुपर तेज़ बच्चों
के लिये
सुपर शक्ति
इन्डाना सुपर बच्चे
RUBIK'S CLOCK
अमित पॉल (१५ वर्ष)
रूबिक क्लॉक पज़ल का जादूगर
सुहेल मल्होत्रा (१२ वर्ष)
जूनियर राष्ट्रीय टेनिस खिलाड़ी
दीया वोहरा (८ वर्ष)
जूनियर तैराकी चैम्पियन
दिल्ली प्रदेश
INDANA
SUPER GLUCOSE
BISCUITS
100g
INDANA
सुपर बच्चों के लिये एक सुपर बिस्कुट । सुपर ग्लूकोज़ । ग्लूकोज़ के प्राकृतिक गुण... व शक्ति-स्फूर्ति से भरपूर। बच्चे इनको खाते जाते, और हमेशा आगे बढ़ते जाते।
स्वाद भरे और कुरकुरे बिस्कुट
इण्डाना सुपर ग्लूकोज़। आपके चैम्पियन के लिये ।
MEGACORP 262/90 HIN

वरदान

—ब्रह्म प्रकाश गुप्त

एक थी देवी। नाम था तृष्टा। एक था देवता। नाम था रंगीत। दोनों हिमालय के आंगन में साथ-साथ बड़े हुए। बचपन में कभी इस चोटी से उस चोटी पर छलांगें लगाते, कभी घंटों घाटी में बैठे बातें करते। ऐसे ही हंसते-खेलते बड़े होने लगे।

जवान हुए, तो तृष्टा और रंगीत के मन में एक उमंग उठी, बाहर की दुनिया देखने की। हिमालय घाटी का भरपूर आनंद मन में पूरी तरह रम चुका था। अब चोटियों से नीचे उतरकर धरती के जीवन का रस लेने का मन बना।

नीचे आने का रास्ता न तृष्टा को पता था, न ही रंगीत को। अब रास्ता समझाने या दिखाने वाले की खोज शुरू हुई। तृष्टा ने नागराज की सहायता ली। रंगीत ने गरुड़राज को साथी बनाया।

"नागराज रेंगते-रेंगते कब ऊंचे शिखरों से धरती तक पहुंचेंगे! तुम थक नहीं जाओगी चलते-चलते?"—रंगीत ने तृष्टा को चिढ़ाते हुए पूछा।

तृष्टा रंगीत के मन का भाव समझ गई। मुंह बिचकाकर बोली—"हां, क्यों नहीं! तुम तो गरुड़राज के साथ उड़कर पलक झपकते ही वहां जा पहुंचोगे? लेकिन उनका साथ निभा सकोगे? जरा-सी चूक हुई नहीं कि पता नहीं, कहां भटक जाओगे!"

इसी नोक-झोंक में दोनों अपने-अपने साथियों के साथ धरती पर जाने के लिए निकल पड़े। चलते हुए रंगीत ने फिर एक चुटकी ली—"देखो, बहुत देर न लगाना। कहीं तुम्हारी राह देखते मेरी आंखें ही न पथरा जाएं।"

तृष्टा भी कहां चूकने वाली थी। बात रंगीत पर ही डाल दी—"उड़कर पहुंच तो जाओगे, लेकिन धरती पर मेरी राह जरूर देखना। कहीं हवा में ही उड़ते रह जाओ!"

दोनों की यात्रा शुरू हुई। दिशाएं बदल गईं। रंगीत गरुड़राज के पीछे उड़ चला। तृष्टा नागराज के पीछे-पीछे पैदल चली। पैदल चलने के लिए छोटा रास्ता चुनना जरूरी था। वैसे भी, नागराज को पाताल पहुंचना था। वहां उनका परिवार उनकी बाट जोह रहा था। उन्हें भी जल्दी थी।

चुमा खांग से सीधे थंगु, थंगु से लोचन और लोचन से चुंगथांग। चुंगथांग से थोड़ा मुड़कर सिंहिक, सिंहिक से मंगन की ओर मुड़ने से पहले थोड़ा सुस्ताने को रुके नागराज। तृष्टा भी रुक गई। सुस्ताने बैठी, तो रंगीत की याद आने लगी। वह तो उड़कर कभी का पहुंच गया होगा। लेकिन फिर यहां मिला क्यों नहीं? नागराज ने भी इस स्थान से विदा ली। तृष्टा को समझाते गए— "यहां से तुम्हारा गंतव्य ज्यादा दूर नहीं।"

तृष्टा की आंखें इधर-उधर रंगीत को खोजने लगीं। मन में कुछ शंका भी हुई। कहीं आगे न निकल गया हो। फिर सोचा कि गरुड़राज ने उसे भी यहां से अकेले यात्रा की सलाह दी होगी। कुछ चिंता भी होने लगी।

रंगीत भटक तो रहा था, लेकिन तृष्टा की खोज में नहीं। वह तो गरुड़राज की मनमानी से भटक रहा था। उन्होंने पहले एक चोटी से दूसरी चोटी पर छलांग लगाई। फिर कभी इधर, कभी उधर उड़ान भरी। कहीं कोई जीव-जंतु दिखाई दिया, उस पर लपके। कभी किसी पर झपटे, कभी कहीं झपट्टा मारा।

रंगीत बेचारा क्या करता? उसे तो उनके साथ-साथ उड़ना था। अकेले में राह भटकने का डर था। बस, बार-बार गरुड़राज की मनुहार करता—"गरुड़राज, कुछ मेरा भी ध्यान करो। मेरी और तृष्टा की होड़ लगी है धरती पर पहले पहुंचने की। ऐसे तो मैं पिछड़ जाऊंगा।"

"हां, हां, मुझे भी पता है तुम्हारी धरती की होड़ का। लेकिन तुम चिंता क्यों करते हो? हम तो उड़कर चल रहे हैं। पहले पहुंचेंगे ही।"—गरुड़राज ने समझाते हुए कहा।

आखिर गरुड़ ने रंगीत को सिंहिक पहुंचाया। वे जिस टेढ़े-मेढ़े रास्ते से आए थे, उसे रंगीत समझ नहीं पाया था। यहां तृष्टा भी मिल गई। तृष्टा को सामने पाकर सब दुःख भूल गया। वह सोचने लगा—'अब तृष्टा मिल गई, तो आगे का रास्ता भी मिल जाएगा। लेकिन तृष्टा को क्या मुंह दिखाए रंगीत। मन की पीड़ा फूट पड़ी—"अब क्या मुंह लेकर चलूं धरती पर तुम्हारे साथ ? पहले ही तुम्हें कितनी यातना दे चुका हूं।"

रंगीत का अहंकार टूट चुका था। उसकी वेदना को तृष्टा भी समझ रही थी। उसने रंगीत का क्रोध शांत करने का भरसक प्रयत्न किया, लेकिन उसके अंदर तो जैसे ज्वालामुखी धधक रहा था। तृष्टा ने बड़ी मुश्किल से उसे समझाया—"भला, देरी तो हुई गरुड़राज की मनमानी के कारण। इसमें तुम्हारा क्या दोष है ? और फिर इस कारण हम अपना धरती का आनंद भी क्यों खोएं!"

बात रंगीत की समझ में आ गई। इस प्रकार रंगीत और तृष्टा ने धरती का भरपूर आनंद लिया। मानव जीवन को घुल-मिलकर देखा। भूलोक के रीति-रिवाजों को समझा। उनमें ज्ञान और विज्ञान के साथ चलने की झलक देखी। इस प्रकार भूलोक के सुखद अनुभव लेकर खुशी-खुशी हिमालय की सुरम्य चोटियों से होते हुए वे सुरलोक पहुंच गए।

उन दोनों की यात्रा धरती पर नदियों के रूप में अंकित हो गई थी। तृष्टा ने ३०९ किलोमीटर लम्बी यात्रा की थी। रंगीत की यात्रा कुछ कम थी। वापस जाते हुए दोनों अपने यात्रा प्रतीकों को मानव कल्याण का कारण बनने का वरदान देते गए। वही वरदान आज तृष्टा और रंगीत नदियों पर जलविद्युत बांधों के रूप में हमारे सामने है।

तृष्टा और रंगीत नदियों को बांधकर उन पर बिजलीघर बनाए जा रहे हैं। उनसे उत्पन्न बिजली सिक्किम राज्य में तो विकास को नई दिशा, नई गति देगी ही, सारे उत्तर पूर्वी भारत में जनजीवन को तृष्टा और रंगीत की धरती की होड़ का आनंद मिलेगा।●

अधूरी पढ़ाई

—सीताराम खोड़ावाल

बहुत पुराने समय की बात है। तब गांव में कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति चिराग लेकर ढूंढ़ने पर ही मिलता था। बड़े-बड़े पंडित भी तोता रटंत तो होते थे, पर काला अक्षर उनके लिए भी भैंस बराबर हुआ करता था। हस्तिनापुर के पास गंगा के किनारे एक गांव था। वहां के एक पंडित जी की कीर्ति दूर-दूर तक फैली थी। उनका एक बेटा था—बहुत सुंदर, सजीला और होनहार। पंडित जी ने फैसला किया—'मैं अपने बेटे को ऊंची शिक्षा दिलाऊंगा।' उस समय काशी ही शिक्षा का सबसे बड़ा केंद्र थी। पंडित जी ने पांच साल की अवस्था में ही अपने पुत्र को काशी शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा। बीस वर्ष तक उसने रात-दिन एक करके विद्वान पंडितों से शिक्षा प्राप्त की।

ज्ञान-विज्ञान और वेद-वेदांग की शिक्षा पूरी करने के बाद, उस युवक ने पच्चीस साल की आयु में अपने घर की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में जहां-जहां से वह गुजरा, उसका खूब सम्मान किया गया। हस्तिनापुर पहुंचते-पहुंचते उसे महीनों लग गए। हस्तिनापुर पहुंचने से पहले ही उसने एक घुड़सवार के हाथ अपने आने का संदेशा घर पहुंचवा दिया।

पंडित जी ने जब पुत्र के आगमन का समाचार सुना, तो बहुत प्रसन्न हुए। पंडित जी ने पुत्र के स्वागत की भव्य तैयारियां कीं। घर को लीप-पोतकर सजाया गया। सगे-सम्बंधियों को बुलवा भेजा। आसपास के गांवों में जंगल की आग की तरह यह खबर फैल गई। पंडित जी ने इस अवसर पर एक विशाल भोज का भी आयोजन किया था।

आखिर वह दिन भी आ पहुंचा। पंडित जी का पुत्र गांव की सीमा में पहुंच गया। उसका मन खुशी से बल्लियों उछल रहा था। गांव के हरियाले बाग, उनमें कूकती कोयल, लहलहाते खेत देखकर उसकी पुरानी यादें ताजा हो आईं। पेड़ों के झुरमुटों में से गांव के घर

ऐसे ही झांक रहे थे, जैसे बादलों के झुंड में रात को चांद-तारे चमकते हैं।

दोपहर होने वाली थी। सूरज की किरणों में तीखापन आने लगा था। पंडित-पुत्र थोड़ा सुस्ताने के लिए एक घने वृक्ष के नीचे रुक गया। तभी उसे फटी मिरजई और घुटनों से ऊंची धोती पहने, अधेड़ उम्र का एक व्यक्ति आता दिखाई दिया। युवक की वेशभूषा देखकर वह व्यक्ति रुक गया। ध्यान से उसकी ओर देखने लगा। उसने अनुमान लगाया कि पंडित वेश में यह हो न हो, गांव के पंडित जी का पुत्र है। उस व्यक्ति ने विनम्रता से कहा—"पंडित जी, पालागन!" युवक ने मुसकाते हुए अभिवादन का यथोचित उत्तर दिया। इसके बाद वह अधेड़ उम्र का व्यक्ति बोला—"महाराज, कहीं आप पंडित जी के पुत्र तो नहीं?"

युवक ने गर्दन हिलाते हुए कहा—"तुमने ठीक ही पहचाना। हमारे परिवार की कुशल-क्षेम बताओ।"

उस व्यक्ति ने जमीन पर बैठते हुए कहा—"महाराज, भगवान की मौज है। आपके आने की तो आसपास के गांवों में भी खुशियां मनाई जा रही हैं। एक बड़े भोज की तैयारी हो रही है। लेकिन सबसे भाग्यवान तो मैं हूं, जिसे आपके सबसे पहले दर्शन हुए।"

युवक बोला—"भला, तुम्हारा नाम क्या है?"

उस व्यक्ति ने अपना नाम बताया और कहा—"गांव के बाहर मेरी झोंपड़ी है। मैं चमड़े का काम करता है। गुजर-बसर भगवान की दया से अच्छी हो रही है। मैं आपके साथ गांव तक जाता, पर एक दुविधा में फंसा हुआ हूं।"

युवक को जिज्ञासा हुई। उसने पूछा—"तुम्हें क्या दुविधा है?" वह पहले तो कुछ झिझका, किंतु फिर उसने अपने मन का भार उतारने के लिए कहा—"पंडित जी, मैं किसी आदमी के इंतजार में हूं। मैं अपने घर एक संदेशा भेजना चाहता हूं।"

युवक मुसकराकर बोला—"यह कौन-सी बड़ी बात है! मैं जा ही रहा हूं। तुम्हारा घर तो रास्ते में पड़ेगा। मैं संदेशा दे दूंगा। तुम मुझे ही बता दो।"

अधेड़ व्यक्ति का चेहरा खिल उठा। उसने कहा—"धनभाग महाराज! पर आपसे काम कराते मुझे संकोच होता है। कुछ सेवा करने के बजाए, उल्टे आपसे बेगार कैसे करा लूं?"

उसने कहा—"भई, संदेशा देने में क्या जोर पड़ता है? तुम बेहिचक बता दो।" साहस बटोरकर अधेड़ व्यक्ति बोला—"मेरे बेटे से कह देना—रैंकणी ने ढैंकणा जना है। चांदणी छिटकणी, खड़े बुलाया है।"

युवक असमंजस में पड़ गया। संदेशा तो उसने रट लिया। पर उसे इस बात पर संदेह हुआ कि कहीं यह बूढ़ा सठिया तो नहीं गया है। उसने पूछा—"संदेशा तो मैं दे दूंगा, परंतु क्या इस अटपटे संदेश को तुम्हारा पुत्र समझ लेगा? मुझे तो इसका कोई अर्थ समझ में नहीं आया।"

अधेड़ व्यक्ति उत्साह से बोला—"बिल्कुल समझ लेगा पंडित जी! आप बस कह भर देना।"

रास्ते भर युवक उधेड़-बुन में लगा रहा। पता नहीं, इसका बेटा कुछ समझेगा भी या नहीं। गांव के पास पहुंचते ही उस अधेड़ व्यक्ति की झोंपड़ी आ गई। उसे हल्का-हल्का याद भी था कि यही उसका घर है। उसने उसके बेटे का नाम लेकर पुकारा, जो लगभग



उसी की आयु का था।

घुटनों तक धोती लपेटे, नंगे बदन, ताम्बई रंग भरे शरीर का एक युवक सामने आया। उसने झुककर, पालागन किया। उसे भी थोड़ा-सा आभास हो गया था कि यह युवक पंडित जी का विद्वान पुत्र है, जो काशी से लौट रहा है। लेकिन उसे आश्चर्य था कि उसने उसे नाम लेकर आवाज कैसे लगाई। फिर भी उसने आगंतुक का मनोरथ पूछा।

युवक ने कहा—"भई, तुम्हारे पिता ने तुम्हारे लिए एक संदेशा भेजा है। तुम उसे ध्यान से सुन लो।"

उसने जिज्ञासा से कहा—"क्या संदेशा है महाराज जी ?"

पंडित पुत्र ने संदेशा ज्यों का त्यों दोहरा दिया। फिर उसकी प्रतिक्रिया देखने लगा। वह लड़का तुरंत झोंपड़ी की तरफ लपका और पल भर में एक बाल्टी हाथ में लेकर लौट आया। अब तो पंडित पुत्र और भी आश्चर्य में डूब गया। जब वह लड़का जंगल की तरफ जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाते हुए चल पड़ा, पंडित पुत्र ने पूछा—"अरे, भले आदमी, तुझे कुछ समझ में भी आया या यूं ही बाल्टी लेकर चल पड़ा ?"

लड़का चलते-चलते ही बोला—"समझ गया महाराज, अच्छा समाचार है।"

इतना सुनना था कि पंडित पुत्र को मानो काठ मार गया। उसे काटो तो खून नहीं। 'जिस गोरखधंधे का सिरा तक मेरे हाथ नहीं लगा, यह अनपढ़ उसे समझ गया। वह भी पल भर में। धिक्कार है, मेरे विद्वान होने पर ! क्या सिखाया मेरे गुरुओं ने मुझे बीस साल में !'



जब वह अनमना-सा घर पहुंचा, तो सारी खुशियां हवा हो गईं। बेटा उदासी और चिंता में डूबा हुआ लग रहा था। उसको कोई रोग तो नहीं हो गया है ? उसके माता-पिता का कलेजा धक-धक करने लगा। वह तीर की तरह छूटा, अपने कमरे में गया और मामूली कुशल समाचार सुनने-सुनाने के बाद मुंह ढककर लेट गया।

तुरंत वैद्य जी को बुलाया गया। उन्होंने आराम करने को कहा। सारे समारोह रोक दिए गए। मेहमान लौट गए। पंडित जी ने खोद-खोदकर पूछा, तो उसने बताया कि शिक्षा अधूरी रह गई है। वह एक बार फिर काशी जाना चाहता है।

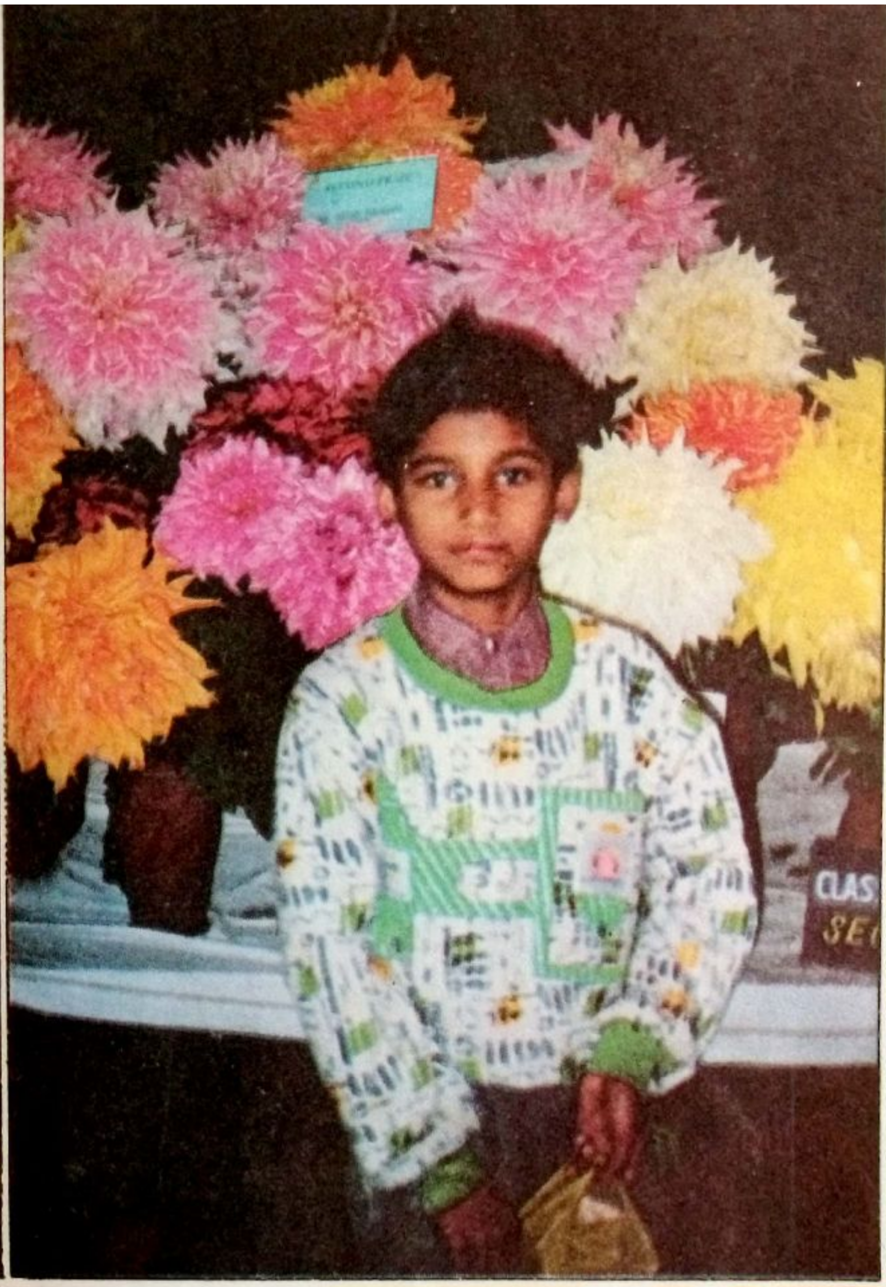
आखिर वह काशी पहुंचा और अपने गुरु जी को अपनी व्यथा बताई। गुरु जी ने ढाढस बंधाते हुए कहा—"पुत्र, हमारी ओर से तो शिक्षा-दीक्षा में कोई कसर नहीं थी। किंतु तुमने केवल पोथी ज्ञान प्राप्त किया, व्यावहारिक ज्ञान में तुम कोरे रह गए।"

गुरु जी फिर बोले—"उस ग्रामीण व्यक्ति के संदेश का अर्थ यह है। ध्यान से सुनो। तुम्हारे क्षेत्र में भैंस को रैंकणी कहते हैं। रैंकणी अर्थात रैंकने वाली। उसका ढैंकणा अर्थात उसका बच्चा या कटड़ा पैदा हुआ है। चांदणी छिटकणी का अर्थ है, चांदनी छिटक रही है। अर्थात हमारे भाग्य अच्छे हैं। बाप ने बेटे से कहा था कि वह तुरंत वहां आए। बेटा समझ गया। भैंस ने कटड़ा जनमा है, तो दूध निकालने के लिए बाल्टी चाहिए। फिर उस दूध की खीस भी बनानी थी, इसलिए वह तुरंत बाल्टी लेकर चला गया।"

युवक के ज्ञान चक्षु खुल गए। उसने मस्तिष्क पर जोर दिया होता, तो पल भर में समझ जाता। किंतु पोथी ज्ञान ने उसके सांसारिक ज्ञान को कुंद कर दिया था। ●

चीटू-नीटू


इस लोक कथा में सुनार का तोता बोलता है, चलो हम भी अपने तोते को बोलना सिखाएँ
लोक कथाएँ
कमबख्त ने टें...टें की और मेरी अंगुली काट ली
इस लोक कथा में बांसुरी बजा कर हिरण बुलाने का जिक्र है... मैं भी...
लोक कथाएँ
कल्लू धोबी के गधे...
ढेंचू...
ढेंचू...
अभी तक तो कामयाबी मिली नहीं... चलो, राजकुमार की तरह एक छलांग में नदी पार करके देखता हूँ
लोक कथा
बस करो... अपनी इन मूर्खताओं की चर्चा किसी से न करना... वरना तुम्हारी कहानी लिखकर कोई छपवा देगा



शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए । अनेक शीर्षक हो सकते हैं इस चित्र के । आप भी सोचिए कोई अच्छा, छोटा-सा शीर्षक । उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १० नवम्बर, १९९० तक **शीर्षक बताइए, 'नंदन' मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए । चुने हुए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे ।

परिणाम :- जनवरी '९१ अंक

चित्र : देवेन्द्र अग्रवाल

पुरस्कृत चित्र

रेनू शाह, सी. के. २७/१ कचौड़ी गली, वाराणसी

इनके चित्र भी पसंद किए गए—
कु. अनुपमा श्रीवास्तव, छाता, मथुरा; मोनिका गोयल, फरीदाबाद; नंदीश मिश्र, लाल कुआं, लखनऊ; महेश सोनी, उदयपुर; ऋतु सेठी, खेतरी नगर; विकास चौधरी, नई दिल्ली ।





गुग्लू पुन्नू नेहा राजेश शिवकांत

पुरस्कृत कथा :

तीन पुतले

एक राजा था—बहुत ही बुद्धिमान, न्यायप्रिय व प्रजा के दुःख-सुख का ध्यान रखने वाला । हर कोई राजा का गुणगान बढ़ा-चढ़ाकर करने लगा । इससे राजा को आत्मप्रशंसा सुनने की आदत हो गई ।

सभी मंत्रीगण व रानी भी चिंतित व परेशान हो, ऐसा उपाय सोचने लगे, जिससे राजा को अपनी गलती का एहसास हो । उधर राजा की आदतें और बिगड़ती गईं । उसने प्रजा पर अत्याचार करने शुरू कर दिए । एक दिन रानी ने अपने मंत्री को बुलवाया । सारी बात उसे समझाकर तीन पुतले बनवाए । अपने व अपने पुत्र-पुत्री के पुतलों को कमरे में बिस्तर पर लिटाकर, चादर ओढ़ा दी । वह अपने बच्चों के साथ छिपकर बैठ गई । मंत्री योजनानुसार राजा के पास रानी का लिखा एक पत्र लेकर गया । पत्र राजा की बुराइयों से भरा था । पड़ोसी राज्यों से इस राज्य पर हमला करके, राजा को गद्दी से उतारने की प्रार्थना की गई थी । राजा, रानी का पत्र पढ़कर आग-बबूला हो उठा । कमरे में जाकर सोते हुए रानी व बच्चों को मार डाला । जब वह बाहर आया, तो मंत्री बोला—"गजब हो गया महाराज ! वह पत्र रानी जी ने नहीं, एक दासी ने लिखा था ।" यह सुन, राजा फूट-फूटकर रोने लगा और पछताने लगा । क्यों उसने बिना जांच-पड़ताल किए क्रोध में आकर, अपने प्रियजनों की हत्या कर दी । वह दुखी मन से अपनी रक्तरंजित तलवार लेकर जा रहा था, तो उसने अपने उपवन के एक पेड़ पर बैठी चिड़ियों की बातचीत सुनी । चिड़ा, चिड़िया को रानी की चतुराई व राजा द्वारा पुतलों को मारे जाने की बात बता रहा था । राजा को सहसा विश्वास ही नहीं हुआ । जब वह मुड़कर राजमहल में जाने लगा, उसने मंत्री को रानी व बच्चों के साथ आते देखा । उसकी खुशी का ठिकाना न रहा । उसने सभी से अपनी गलती की क्षमा मांगी । 'भविष्य में सोच समझकर सभी फैसले करूंगा ।' यह वायदा भी किया । —**पुरस्कार थडानी, नई दिल्ली**

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : दिलीप पांडेय, डालटनगंज; अरुणकुमार राय, हावड़ा।

आगामी अंक

दिसम्बर'९०

- राजकुमार हुन संकट में था, तभी एक बौना आया, फिर तो सब कुछ बदल गया— विश्व की महान कृतियों में पढ़िए-तेरहवीं सदी की रचना 'हुन द बोर्दे' की रोचक कथा ।
- देश-देश से आई पुतलियां रंग-रंगीली **इठलातीं : अद्‌भुत झांकी** ।
- रोचक कहानियां, मधुर कविताएं और खेलों के बारे में अनसुनी बातें ।
- **दो चित्र कथाएं—बेहद दिलचस्प**
- 'चीटू-नीटू', 'तेनालीराम', समाचार, ढेरों प्रतियोगिताएं, पुरस्कार ।
- **'नंदन' के पाठकों के लिए अनोखी प्रतियोगिता—** दो सौ पुरस्कार ।

आप कितने बुद्धिमान हैं (उत्तर)

१. दरवाजे के पास खड़े व्यक्ति की आंख पर लगी काली पट्टी बड़ी हो गई है।
२. उसका दायां कंधा पहले झुका हुआ था।
३. उसकी बगल में दबी दूरबीन का पिछला भाग बदल गया है।
४. मूर्ति वाली अल्मारी के एक पल्ले की घुंडी गायब है।
' दाएं कोने वाली मेज पर रखे रजिस्टर का आकार बदल गया है।
६. मूर्ति के पास रखे लैम्प का डंडा सफेद है।
७. नर्स की पोशाक का कालर संकरा हो गया है।
८. उसके बाएं हाथ के कार्ड पर अधिक पंक्तियां हैं।
९. खिड़की में से गिरजाघर की मीनार दिखाई दे रही है।
१०. बीच में खड़े व्यक्ति के कोट पर काला कपड़ा नजर आ रहा है।

शीर्षक बताइए : परिणाम



जैसा चित्र, वैसे ही बढ़िया शीर्षक भेजे पाठकों ने। सितम्बर '९० में छपे चित्र पर पुरस्कार के लिए इन शीर्षकों को चुना गया—

जाली के अंदर सब आए, खेल देखने सब ललचाए
—महेशचंद गर्ग, पो. महू इब्राहिमपुर, जि. सवाई माधोपुर (राज.)।

बंधन का यह जाल हटाओ, बाल दिवस को सफल बनाओ।
—मंजुश्री कुमारी गुप्ता, द्वारा बेचूप्रसाद गुप्त, अम्बालाल पटेल बालिका उच्च विद्यालय, पो. नगर डंटारी, पलामू (बि.)।

बांधो न इस तरह हमें, हम भी आजादी चाहें।
एच. बृंदा, म.नं.—४-१-७५, हनुमान टेकड़ी, हैदराबाद।

जाली के उस पार, बच्चों की भरमार।
—दीपशिखा, पुष्प पुंज घोंसला, रानीताल, नाहन (हि.प्र.)।

इनके शीर्षक भी पसंद आए : मोकुल साबू, क्योंझर (उड़ीसा); नागेंद्रनाथ पांडेय, बर्दवान (प. बं.); कु. हेमलता शर्मा, शिवपुरी (म.प्र.); पंकज अरोड़ा, पानीपत (हरि.)।

बातें रंग-बिरंगी

टेस्ट क्रिकेट में भाई-भाई : टैस्ट क्रिकेट में एक ही कोख से पैदा हुए दो भाइयों के करतब दिखाने की कहानी बड़ी पुरानी है। भारत के कृपालसिंह और ए.जी. मिल्खासिंह सगे भाई, एक ही टैस्ट में साथ-साथ खेले। सुरेंद्र अमरनाथ और मोहिंदर अमरनाथ ८ टैस्टों में साथ-साथ खेले। भारत की ओर से वजीर अली और एस. नजीर अली २ टैस्टों में, सी.के. नायडू और सी.एस. नायडू ४ टैस्टो में खेले। लेकिन चार भाइयों का टैस्ट क्रिकेट खेलना अपने आप में अनोखी दास्तान है। पाकिस्तान क्रिकेट टीम के मोहम्मद भाई चार भाई हैं। उनके नाम हैं—वजीर, हनीफ, मुश्ताक और सादिक। यह मोहम्मद परिवार क्रिकेट का ऐसा अनूठा उदाहरण है, जो शायद ही दोहराया जा सके।

सबसे धनी खिलाड़ी : कुछ साल पहले मुक्केबाजी की दुनिया में जो स्थान मोहम्मद अली का था, आज वही माइक टायसन का है। पैसा कमाने में टायसन आज सबसे आगे निकल गए हैं। बहुतों को तो इस बात पर विश्वास ही नहीं होता कि किसी एक खिलाड़ी की एक साल की आमदनी ४९० लाख रुपए भी हो सकती है।

१२वें एशियाई खेल 'हिरोशिमा' में : 'सदा आगे बढ़ते रहो'- एशियाई खेलों का नारा है। इनका आयोजन चार साल बाद होता है। १९९४ में १२वें खेलों का आयोजन हिरोशिमा (जापान) में होगा। जिस देश में भी ये खेल होते हैं, वहां का लोकप्रिय पशु या पक्षी ही इनका शुभंकर (मस्काट) होता है।

खेलों में हम कैसे आगे बढ़े : पिछले दिनों सोवियत संघ के एक प्रशिक्षक डा. एलेग्जेंडर के. क्रासिलचिकोव भारत आए। उन्होंने कहा कि सोवियत संघ में १० वर्ष की उम्र से ही विभिन्न खेलों का प्रशिक्षण शुरू हो जाता है। पहले दो साल तक शारीरिक शिक्षा दी जाती है। इसके बाद दो वर्ष तक एक खेल विशेष के मंत्र और गुरुमंत्र सिखाए जाते हैं। इस प्रकार १४ वर्ष की उम्र का किशोर चोटी का खिलाड़ी बन जाता है, जबकि भारत में खिलाड़ी १७ या १८ वर्ष की उम्र होने के बाद खेल के मैदान में जाता है।

द्रोणाचार्य पुरस्कार : देश के चोटी के खिलाड़ियों को अर्जुन पुरस्कार दिया जाता है। चोटी के प्रशिक्षकों (कोच) को द्रोणाचार्य पुरस्कार दिया जाता है। यह पुरस्कार १९८५ में शुरू हुआ था। अब तक ७ प्रशिक्षकों को यह सम्मान प्राप्त हो चुका है। उनके नाम हैं: ओ.एम. नाम्बियार (एथलेटिक्स); २. ओमप्रकाश भारद्वाज (मुक्केबाजी); ३. बालचंद्र भास्कर भगवंत (कुश्ती); ४. प्रेम आजाद (क्रिकेट); ५. रघुनंदन बसंत गोखले (शतरंज); ६. गुरु हनुमान (कुश्ती) और गुरुचरण सिंह (क्रिकेट)।

झुकना और उठना : पटियाला घराने का खेलों से पुराना सम्बंध रहा है। अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के सदस्य राजा भालिंदरसिंह का बचपन पटियाला के मोती महल में बीता। उनका कहना है—"बात उन दिनों की है, जब हम मोती महल में रहते थे। यह वही मोती महल है, जहां इन दिनों नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेलकूद संस्थान है। जब हम बहुत छोटे थे, तो बड़े बुजुर्ग एक कतार में खड़े होते और हम लोग बारी-बारी से उनके दोनों पांव छूते। वह दिन मुझे आज भी याद है, जब मैं बारी-बारी से सबके पांव छू रहा था। कुछ समय बाद मैंने थोड़ी जल्दबाजी शुरू कर दी। कभी किसी का एक पांव छूता, तो कभी किसी के घुटने छूकर ही आगे बढ़ जाता।

तभी अचानक मेरे पिता ने मुझे देख लिया और डांटकर बोले—'क्या झुकने में कष्ट होता है? नए सिरे से सबके पांव छुओ।' मैं पिता के फरमान को नहीं टाल सका। दोबारा सबके पांव छुए। इस पर पिता जी ने पीठ थपथपाते हुए कहा — 'जितना झुकोगे, उतना ऊपर उठोगे।'

—योगराज थानी

अनोखा आंवला

—सुंकरा

बात पुरानी है। उन दिनों तमिलनाडु के एक छोटे-से राज्य पर राजा अधिकमान का शासन था। तगदूर



जीतकर, उनके शासकों को अधिकमान ने अपना सामंत बना लिया था। कहा जाता है कि अधिकमान के पूर्वजों ने यज्ञों द्वारा देवताओं को प्रसन्न करके, गन्ने को स्वर्ग लोक से मृत्यु लोक में लाने का अद्‌भुत कार्य किया था। अधिकमान के दरबार में एक से एक बड़े पंडित, कवि और ज्योतिषी थे। राजा उनका बहुत सम्मान करता था। उन्हीं दिनों एक मशहूर कवयित्री भी राजा को अपनी कविताएं सुनाकर मुग्ध कर देती थी। उसका नाम था—अवैय्यार।

एक बार राजा अधिकमान शिकार पर निकला। शिकार की तलाश में वह बहुत दूर निकल गया। चलते-चलते वह ऐसे स्थान पर पहुंचा, जहां बेहद शांति थी। चारों ओर रंग-बिरंगे खुशबूदार फूल खिले थे। वृक्षों पर चिड़ियों की मीठी चहचहाहट सुनाई दे रही थी। राजा ने ऐसी अपूर्व शांति का अनुभव कभी नहीं किया था। कुछ और आगे जाने पर उसने एक आश्रम देखा।

राजा आश्रम के अंदर गया, तो उसने आंवले के

टोटा और नफा

—पुष्पा शर्मा

पीपल का एक पेड़ था। उसकी दो बहुत बड़ी शाखाएं थीं, जिनके नीचे दो घर बने हुए थे। पीपल की बाईं शाखा पर टोटा और दाहिनी शाखा पर नफा रहता था। यही कारण था, जिस ओर की शाखा पर टोटा वास करता था, उसके नीचे बसे घर में हर काम में टोटा ही होता था। उस घर में खाटें टूटी हुई थीं, बर्तन फूटे हुए थे, लोगों के कपड़े फटे हुए थे और धन की हमेशा कमी रहती थी। काम-धंधों में भी नुकसान ही उठाना पड़ता था। इसके विपरीत जिस शाखा पर नफा वास करता था, उसके नीचे बसे घर में हर तरह की मौज थी। परिवार वाले हंसी-खुशी से रहते थे। घर का मालिक अपने बेटों को एक काम कहता, तो वे दो करके दिखाते। जहां पर एक रुपया लगाया जाता, वहां सौ का नफा होता।

रोजाना सवेरे जब टोटे के नीचे बसे घर का मालिक काम पर जाता, तो टोटा उसके साथ हो लेता। यही बात नफे की थी। शाम को दोनों घरों के मालिक लौटकर आते। उनके साथ टोटा और नफा भी लौटते। फिर अपनी-अपनी शाखा पर बैठकर बातें करते।

"क्यों भई, टोटे! क्या-क्या हुआ आज तेरे मालिक के साथ?"—नफा पूछता।

"यार, होना क्या था। मालिक ने अपने लड़कों से कहा— 'जाओ, दस बोरी गेहूं अभी मंडी में पहुंचा दो। भाव अच्छा है, फायदा होगा।' पर लड़के उसकी बात टाल गए। तब फायदा कैसे होता? अब तू स्वयं सुन ले—मालिक और मालकिन में इसी बात को लेकर झगड़ा हो रहा है।"—टोटे ने अपनी दुःख भरी बात बताई।

नफे को उस घर के ऊपर रहने वाले टोटे पर बड़ी

पेड़ के नीचे एक मुनि को ध्यानमग्न देखा। राजा वहीं पृथ्वी पर बैठ गया। मुनि की समाधि टूटी, तो राजा ने उन्हें प्रणाम किया। अपना परिचय दिया। फिर कहा—"मुनिवर, आपके इस आश्रम के आसपास कोई किसी से लड़ता-झगड़ता नहीं। यहां तो शेर और बकरी एक घाट पानी पीते दिखाई देते हैं। जरूर यह आपके पवित्र उपदेशों का प्रभाव है।"

मुनि बोले—"राजन, तुम अपनी प्रजा को बेहद चाहते हो। तुम एक न्यायप्रिय राजा हो। जिस आंवले के पेड़ के नीचे मैं बैठा हूं, यह विशेष किस्म का है। इस पर सौ वर्ष में सिर्फ एक ही आंवला लगता है। जो उस आंवले को खाता है, सौ वर्ष तक जीता है। मैं चाहता हूं, उस आंवले को तुम जैसे सुयोग्य राजा को भेंट कर दूं।"

"लेकिन मुनिवर, उस आंवले को आप क्यों नहीं ग्रहण करते?"—राजा ने पूछा।

"राजन, मैं लम्बी उम्र पाकर क्या करूंगा? यदि कोई अच्छा राजा लम्बी उम्र पाए, तो वह लोगों की अधिक भलाई कर सकता है।"—कहकर मुनि ने आंवला तुड़वाया और राजा को भेंट कर दिया। राजा ने मुनि को धन्यवाद दिया और राजधानी लौट गया।

अगली सुबह उसने कवयित्री अवैय्यार को बुलवाया। उसे आंवला देते हुए बोला—"यह उम्र लम्बी करने वाला आंवला है। इसे तुरंत खा लो।"

"लेकिन महाराज! लम्बी उम्र तो आप जैसे प्रजापालक राजा की होनी चाहिए।"—अवैय्यार बोली।

"नहीं अवैय्यार, मैं नहीं रहूंगा, तो मुझ जैसा दूसरा राजा आ जाएगा। इस दुनिया में राजाओं की कमी नहीं होती। मगर तुम्हारी जैसी कवयित्री एक बार ही जन्म लेती है। तुम जितनी लम्बी उम्र पाओगी, उतनी अधिक अच्छी कविताएं लिखोगी। समाज को नई दिशा और प्रकाश दोगी।"

राजा की बात सुनकर अवैय्यार की आंखें छलछला आईं। ●

दया आई। पर वह कर ही क्या सकता था। आखिर उसकी समझ में एक बात आई। वह बोला—"भइया टोटा, तू देख रहा है, मेरी शाखा के नीचे बसे घर में न तो कोई झगड़ा है और न ही कोई कमी। सब मौज में हैं। तू ऐसा कर, मेरे वाली शाखा पर बैठने लग। इससे तुझे थोड़ी शांति भी मिलेगी और गरीबी वाले घर की सुख-शांति भी लौट आएगी।"

उस रात उन्होंने अपनी शाखा बदल ली। अगले दिन जब सुबह घरों के लोग उठे, तो चमत्कार नजर आया। पहले जिस घर में टोटा था और हर सदस्य एक-दूसरे से झगड़ता था, अचानक वे आपस में प्रेम का व्यवहार करने लगे। उन्हें हर काम में फायदा होने लगा। पर जिस शाखा पर अब नफे की जगह टोटा बैठ गया था, उसके नीचे के घर में अचानक सभी आपस में झगड़ा करने लगे। कोई किसी की बात की ओर ध्यान ही न देता था। दिन-रात झगड़ा होता रहता। उस शाम जब टोटा अपनी नई जगह पर और नफा अपनी नई शाखा पर बैठा, तो दोनों घरों का हाल देखकर उन दोनों की समझ में एक बात आ गई—जिस घर में लोग प्यार से नहीं रहते या एक-दूसरे की बात नहीं मानते, उस घर में टोटा राज्य करता है।



Scanned with CamScanner

पत्र मिला

□ सितम्बर अंक बहुत आकर्षक लगा । 'चांद का बेटा' कहानी विशेष पसंद आई । एलबम में जनरल सुनीत रोड्रिग्स की तसवीर देने के लिए बधाई ।

—गीता राजपाल, नई दिल्ली

□ यदि मेरे आराध्य देव खुश होकर मुझे वरदान देना चाहें, तो मैं कहूंगा—जीवन भर 'नंदन' मेरा साथी बना रहे ।

—नीटू, राकी, बाबू, झुमरी तलैया

□ कहानियां 'धनुष बाण', 'सिंदबाद', 'दंड मिलेगा', 'मछली को बांधा' खूब अच्छी लगीं ।

—अर्चना सोनी, हैदराबाद

□ 'बातें रंग-बिरंगी' तथा 'मुसकाते हैं फूल जहां : रंगों का संसार वहां', कहानियां, चित्र-कथाएं सभी कुछ रोचक था। हमारे देश के विभिन्न स्थलों की सैर कराने के लिए भी हमें ले चलें । **—अशोककुमार खेतान, गुवाहाटी**

□ 'आओ बात करें' में सम्पादक जी हमें उत्साहित करते हैं । 'नंदन' पठनीय पारिवारिक पत्रिका है । रोचक जानकारी और विविधता से भरी होती है यह । पाठकों को शिक्षित भी करती है । कहानियां, कविताएं और ढेर सारा मनोरंजन—यही इसकी विशेषता है । **—विजयकुमार जोशी, हनुमानगढ़**

□ 'बुढ़िया-गुड़िया', 'पैरों के निशान' तथा 'एक दिन का राजा' कहानियां अपनी छाप छोड़ गईं । नए थल सेनाध्यक्ष से मुलाकात नवीनता लिए थी ।

—अर्पिता घोषाल, नौएडा (उ.प्र.)

□ जब मैंने पाया यह 'नंदन'
तब हो गया प्रसन्न मेरा मन ।
इस 'नंदन' का था आकर्षण
बुढ़िया-गुड़िया 'नंदन एलबम'।

—कृष्णकुमार स्वतंत्र, बस्ती

□ बेचारे 'चीटू-नीटू' हमेशा दूसरों को हंसाते हैं, पर हर बार उन्हें रोना क्यों पड़ता है ? 'बातें रंग-बिरंगी' में पी. टी. उषा का पूरा नाम जानकर अच्छा लगा । **—अनिलकुमार, आगरा**

□ आपका स्तम्भ 'आप कितने बुद्धिमान हैं' मुझे सबसे अधिक आकर्षित करता है । पत्रिका में सबसे पहले मैं इसे ही हल करता हूं । **—अरुण पांडेय, नई दिल्ली**

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : नवनीत कुमार सोनी, मनोहर थाना; कमर अली गुड्डू, मुजफ्फरपुर; कांति प्रसाद अग्रवाल, शाहजहांपुर ।

पत्र-मित्र

पुस्तक पढ़ने तथा लेखन में रुचि :

निशांत, ११ वर्ष, प्रेम विहार, इंद्रपुरी, पटना; २. हरदीप सिंह, १२, सदरगंज, मडियाहूं, जौनपुर; ३. राजेश शर्मा, १६, राजा टैक्स टाइल मार्केट, मानगो बाजार, जमशेदपुर; ४. शुभंकर मजुमदार, १५, इस्लामपुर रोड, मुजफ्फरपुर ((बि.); ५. अमित बंसल, १२, ५८, ओम भवन, बड़ी होली, खुर्जा (उ.प्र.); ६. संतोषकुमार राय, १६, पी.डब्लूयू. डी. कालोनी, पो. महेश खूंट, खगड़िया (बि.); अभिषेक त्रिपाठी, १२, १८, हनुमान बाग, इलाहाबाद; ८. मो. वसीम अकरम, ११, अरवल शाही मौहल्ला, पो. अरवल, जि. जहानाबाद (बि.); ९. जगतसिंह, १६, देवी मंदिर, स्टेशन रोड, हलद्वानी; १०. नवीनकुमार सिंह, १४, रेलवे क्वार्टर, म.नं. टी/२४वी-सी, ट्रेफिक कालोनी, नार्थ सैटलमेंट, पुरुलिया (प. बं.); ११. सोहनलाल शुक्ल, १२, ग्रा. लखनीपुर फेरेंदा, बलरामपुर, गोंडा (उ.प्र.); १२. सौरभ सिन्हा, ८, द्वारा वसंतकुमार सिन्हा, खंड विकास अधिकारी, ब्लाक नवहट्टा, रोहतास (बि.); १३. मनीष जैन, ११, गोयल भवन, बाबा हरिश्चंद्र मार्ग, जयपुर; १४. ओम राजपूत, १३, द्वारा नवलकिशोर सिंह, माल गोदाम रोड, दलसिंह सराय, समस्तीपुर; १५. मेहरप्रकाश उपाध्याय, १६, ७१, फूटाबाल जबलपुर (म.प्र.); १६. विनयकुमार मिश्र, १४, पो. ठेपहां बाजार, सीवान (बि.); १७. सुरेशकुमार चौधरी, १६, म.नं. बी १६/१६ पांडेय हवेली, वाराणसी; १८. आदित्यकुमार पांडेय, १३, सासामुसा, गोपालगंज (बि.); १९. शिवभूषण ढाकरिया, १६, रेलवे कालोनी, क्वा. नं. एम/ए/६९/बी, सतना (म.प्र.); २०. अरविंदकुमार, १६, द्वारा रामनरेश प्रसाद, किराना मर्चेंट, रातु रोड, रांची; २१. राजेश बब्बर, १५, कूपली वाया रामसिंहपुर, जि. श्रीगंगानगर (राज.); २२. ललितकुमार गुप्ता, १३, रामअवतार गुप्ता, सिटी मजिस्ट्रेट, नरेंद्रनगर (उ.प्र.); २३. राकेशकुमार प्रियदर्शी, १२, ग्रा. मांधोपुर, पो. मधुरापुर, वाया सिकंदरा, मुंगेर।

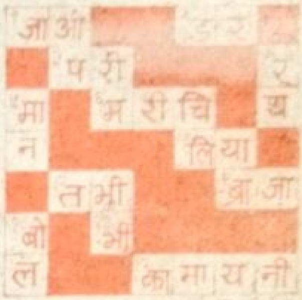
संगीत, चित्रकला एवं खेल में रुचि :

१. कुमारी चानी सिंह, ८ वर्ष, क्वार्टर नं. ५९४/२/४, बी.एच.ई.एल. रानीपुर, हरिद्वार; २. राजीव रंजन सिंह, ११, मलहीपुर, बरौनी थर्मल, बेगूसराय (बि.); ३. प्रशांत जैन, १६, ७ के.ए-९, जवाहरनगर, जयपुर; ४. प्रभाकरकुमार शर्मा, १४, पप्पू सीड मर्चेंट, निकट स्टेट बैंक, बजीरगंज (गया); ५. मयंक बंसल बौबी, १६, आर-९०३, न्यू राजेंद्रनगर, नई दिल्ली।

डाक टिकट संग्रह में रुचि :

१. प्रदीपकुमार, १६ वर्ष, आर.एन. दत्ता रोड, फारबिसगंज, पूर्णिया; २. नंदकुमार जैन, १६, आजाद वार्ड, निकट बस स्टैंड, पिपरिया; ३. तेजविंदर सिंह, १०, द्वारा आई.पी.एस. आनंद, मूनीडीह कोल वाशरी, पो. मूनीडीह, धनबाद; ४. अनिल जैन, १६, असम टिम्बर प्रोडक्ट लिमिटेड, माकुम रोड, तिनसुकिया; ५. उदयवीर सिंह चौहान, १६, म.न. ३५, भारत सेवकनगर, जगाधरी (हरि.); ६. राकेशकुमार, १६, कस्तूरीलाल महीश पाल, सिरकी बाजार, भटिंडा, (पं.); ७. अतुल अग्निहोत्री, १६, १/४८ तलैया लेन, फतेहगढ़; ८. अनुप्रिया, १०, आर.के. २४५, रोहरा बांध, सिंद्री, जि. धनबाद; ९. रत्नेशकुमार पांडेय, १४, आमगोला पेट्रोल पम्प, मुजफ्फरपुर; १०. संजयकुमार सर्राफ, १६, ग्लास हाउस, पो. बरपेटा रोड, जि. बरपटा (असम); ११. शैलेश कावरा, १४, बड़ी दुकान, करेली, नरसिंहपुर (म.प्र.)।

नंदन ज्ञान-पहेली:२६१ परिणाम



इस बार ज्ञान-पहेली हल करने में पाठकों ने खूब दिमाग लगाया। बीस सर्वशुद्ध हल आए। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

सर्वशुद्ध हल : बीस : प्रत्येक को पचास रुपए

१. अमित श्रीवास्तव, इलाहाबाद; २. राजेशकुमार, श्रीकृष्णनगर (बेगूसराय); ३. विकास, नई दिल्ली; ४. कुमार सौरभ 'सुशील', खगड़िया; ५. अनुराग जैन, ललितपुर; ६. सुषमा नेवार, तिनसुकिया; ७. नूतनकुमारी, वासुदेवपुर (बि.); ८. जयेश लोढ़ा, जोधपुर; ९. जसवंत वर्मा, रोहतक; १० कुमारी नीलम, बिहिया (भोजपुर); ११. अतुल बाजोरिया, कलकत्ता; १२. भुवनेश गौतम, कनीना (हरि.); १३. ऋचा बंसल, शामली (मुजफ्फरनगर); १४. प्रतिभा सिंह, देवघर; १५. विनीता त्रिपाठी, पंतनगर (नैनीताल); १६. सुशीलकुमार गुप्ता, लश्कर, ग्वालियर; १७. कपिलकुमार सिंह, राउरकेला; १८. अलकेश जैन, जमशेदपुर; १९. जैमिनी, नारायणगढ़; २०. मनीषकुमार गोयल, समस्तीपुर।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन



Amul
MILK CHOCOLATE
बदमाश मोटू के लिए
Amul
CRISP
MILK CHOCOLATE
रोती पिंकी के लिए
Amul
FRUIT & NUT
MILK CHOCOLATE
शैतान छोटू के लिए
Amul
MILK CHOCOLATE
ORANGE
FLAVOURED
प्यारी प्रीति के लिए
Amul
Badambar
चमचे चिंटू के लिए
Amul
CRUNCH
MILK CHOCOLATE
मेरी टीचर के लिए
Amul
MILK CHOCOLATE
ORANGE
Amul
CRISP
Amul
MILK
CHOCOLATE
यह सारे मेरे लिए
वितरक—
गुजरात को-ऑपरेटिव
मिल्क मार्केटिंग
फेडरेशन लिमिटेड,
आणंद ३८८ ००१
अमूल चॉकलेट–प्यार की मीठी भेंट
RADEUS/AMC/036/90-HIN

नंदन रजि. नं. डी.-(सी)-१७१ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४

